आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

एसो पंच णमोक्कारो,

सव्व-पावप्पणासणो,

मंगलाणं च सव्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष 60 अंक : 07

जुलाई, 2003 आषाढ़, 2060

अहिंसा

परमो धर्म...

अहिंसा धर्म को मुल्य देती है।
धर्म जीवन को मौल्यवान
आभूषण चढाता है।

आर. सी. आभूषण – शुध्द – शुभ – सुंदर

टीप : निवास व्यवस्था पूर्व
सूचना मिलने पर की जाएगी।

पारस महल
चांदी
बरतन शोरूम

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स
सुभाष चौक, जलगांव, दूरभाष्य : २२२३९०३, २२२५९०३, २२२२६२९,३०
हमारी कहीं भी शाखा / एजंट नहीं.

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरूम
डायमंड शोरूम

हाजिर स्टॉक • भरपूर डिझाईन्स • अनुपम कलाकारी • गहनों पर शुद्धता अंकित • पारदर्शक व्यवहार

malhar 11.5x19/1474

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● प्रकाशक
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बांपू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● सम्पादक
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● सम्पादक मण्डल
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

ण मे निवारणं अत्थि,
छवित्ताणं न विज्जइ।
अहं तु अग्गि सेवामि,
इइ भिक्खू न चिंतए।।
-उत्तराध्ययन सूत्र २.७

शीतनिवारक भवन नहीं,
छवि रक्षक पट भी प्राप्त नहीं।
पावक से सर्दी दूर करूँ,
ऐसा मुनि चिन्तन करे नहीं।।७।।

जुलाई 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
आषाढ, 2060

वर्ष : 60 **अंक** : 07

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

समत्व की साधना : सामायिक (2)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
सेवा करना सीख लें	: तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	11
लोभ पर विजय संतोष से	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	19
धर्मक्रियाएँ हों निर्दोष	: श्री सज्जनसिंह मेहता 'साथी'	23
स्थानकवासी होने का अर्थ	: परामर्शदाता श्री ज्ञानमुनि जी म.सा.	28
धोवन का विवेक	: श्री ऋषभ जैन	40

विचार/तत्त्वचर्चा/आगम-परिचय

दशवैकालिक सूत्र : नवम अध्ययन(2)	: डॉ. अमृतलाल गांधी	34
आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (3)	: श्री धर्मचन्द जैन	36
सामायिक से लाभ	: श्री चेतनप्रकाश डूंगरवाल	42

कथा/कविता/प्रेरक-प्रसंग

तूफानों को ललकारें	: श्री नितेश नागोता 'जैन'	18
एक पैगाम बहिनों के नाम	: श्री प्रसन्नचन्द चोरड़िया	35
महावीराष्टक स्तोत्र	: श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'	38
जीवन का निर्माण करो	: श्री मोहन कोठारी 'विनर'	39
णमोकार का प्रभाव	: सुश्री मधुरिका जैन	43
प्रेम	: श्री दिलीप धींग	45

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य-समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	46
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	47
समाचार-संकलन	: संकलित	48
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	64
बधाई	: संकलित	66
श्रद्धांजलि	: संकलित	66
स्वाध्यायी आमंत्रित कीजिए	: संकलित	70
साभार-प्राप्ति-स्वीकार	: संकलित	71

पत्र-पत्रिकाओं का दायित्व

डॉ. धर्मचन्द जैन

व्यक्ति तथा समाज के मार्गदर्शन में पत्र-पत्रिकाओं का महनीय दायित्व एवं योगदान होता है। लोकतन्त्र में पत्रकारिता को कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं व्यवस्थापिका के साथ चतुर्थ स्तम्भ माना गया है। पत्र-पत्रिकाएँ जनता को न केवल विभिन्न घटनाओं, सूचनाओं एवं समाचारों से अवगत कराती हैं, अपितु लोगों की मनोवृत्ति एवं व्यवहार को भी उत्तेजित या नियन्त्रित करती हैं। कई बार सच्चाई सामने रखते समय पत्रकार सामाजिक विद्वेष एवं कलह को भड़काने में सहायक बन जाते हैं, जिसका कभी भी समाज के लिए सुपरिणाम नहीं आता है। समाज में विषाक्त वातावरण पैदा न हो, किन्तु समाज का सम्यक् मार्गदर्शन हो, इसका जागरूक पत्रकार ध्यान रखते हैं। कई छोटी-मोटी पत्रिकाएँ अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए चटपटे समाचारों को प्रमुख स्थान देते समय इस बात को भूल जाती हैं कि ये समाचार समाज को किस ओर ले जायेंगे। अखबारों में जब बलात्कार आदि के उत्तेजक समाचार छपते हैं, तो इससे लोगों के विकृत होने की ही संभावना अधिक रहती है। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ पीत-पत्रकारिता के अन्तर्गत आती हैं जो अश्लीलता, हिंसा, भय, आतंक, विघटन आदि दोषों को बढ़ाने का कार्य करती हैं। उनमें कामोत्तेजक एवं वृत्तिदूषक विज्ञापन भी प्रकाशित होते हैं, जिससे समाज में स्वेच्छाचारिता एवं मलिनता की ही संभावना अधिक होती है। जबकि समाज में समन्वय, संतुलन मार्गदर्शन देने का कार्य पत्र-पत्रिकाओं का होता है। लोकतन्त्र में विचाराभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता है, तथापि समाज के लिए अहितकारी समाचारों को तूल देना, गलत दिशा की ओर ले जाना अच्छी पत्रकारिता का कार्य नहीं हो सकता।

देश की अन्य पत्र-पत्रिकाओं की भांति धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं में भी इस ओर ध्यानाकर्षण की आवश्यकता है कि ये पत्र-पत्रिकाएँ समाज में भड़काऊ एवं विघटनकारी सामग्री देने से बचें। शुद्ध सात्त्विक एवं जीवन निर्माणकारी सामग्री प्रस्तुत करें। यदि समाज में कोई दोष नजर आवे तो मात्र उसको उजागर करने में रस लेने की बजाय उनके निराकरण का उपाय सुझावें तो उनकी उपयोगिता में वृद्धि होगी। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ ऐसी घटनाओं को उछालने में रस लेती हैं, जिनसे समाज का सौहार्द बिगड़ता है। समाज में शिक्षा,

ज्ञान एवं समझ बढ़नी चाहिए, इसका प्रशिक्षण धार्मिक पत्रिकाओं के माध्यम से शक्य है, व्यक्तिगत आलोचना की बजाय रचनात्मक एवं जीवन-निर्माणकारी सामग्री पाठक का अधिक हित कर सकती है।

पाठक का यह दोष है कि उसको निन्दा-विकथा, आलोचना-समालाचेंना में अधिक रस आता है, इसलिए वे ऐसी पत्र-पत्रिकाओं को पसन्द करते हैं, जिनमें ऐसी चटपटी सामग्री निहित रहती है। प्रायः मनुष्य का ऐसा स्वभाव है कि वह टी.वी. हो या अखबार, सभा हो या सोसायटी, तड़क-भड़क एवं मन को उत्तेजित करने वाली बातों से अधिक प्रभावित होता है। किन्तु ऐसा वह अज्ञान के कारण करता है। पत्र-पत्रिकाएँ अपनी सदस्यता बढ़ाने के लिए लोकमानस को निन्दा-विकथा, राग-द्वेष के रस से जोड़ती हैं, किन्तु इसे धार्मिक हित की दृष्टि से उत्तम नहीं कहा जा सकता।

धार्मिक क्षेत्र में कई तरह की पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। कुछ केवल समाचार पत्र-पत्रिकाएँ हैं, जिनमें संघ एवं समाज के विविध समाचार रहते हैं। इनमें कुछ पत्रिकाएँ निजी होने से सभी सम्प्रदायों के समाचारों को स्थान देती हैं। कुछ शोध पत्रिकाएँ है, जिनमें शोधात्मक आलेख रहते हैं। इन्हें पढ़ने वाले पाठकों की जैन समाज में कमी है। वे उन्हें समझने की रुचि एवं योग्यता का स्वयं में अभाव अनुभव करते हैं। उन्हें श्रद्धा डिगने का भी खतरा रहता है। कभी-कभी शोधालेख ऐसे होते भी हैं, जो कोमल श्रद्धा वालों के लिए सन्देह उत्पन्न कर देते हैं, तथापि ज्ञान के क्षेत्र में जिज्ञासा एवं चिन्तन-मनन का महत्त्व होना ही चाहिए। कुछ पत्रिकाएँ नाम्ना समाचार पत्र हैं, किन्तु उनके भीतर ज्ञानवर्धन के आलेख भी रहते हैं। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ ऐसी भी हैं जिनमें विविध आलेखों, रचनाओं, विचारों के साथ समाचार भी होते हैं। कुछ समाचार रहित पत्रिकाएँ भी हैं। जैन समाज की यह दुःखद स्थिति है कि इसमें पत्र-पत्रिकाएँ किसी एक संघ या सम्प्रदाय से संबद्ध होने के कारण अन्यों के साथ सहिष्णुता का भाव नहीं रख पातीं, वे जैनधर्म एवं दर्शन को गौण तथा संघ एवं सम्प्रदाय को प्रमुख समझती हैं। व्यवस्था एवं पृष्ठों की सीमा के कारण ऐसा करना भी पड़ता है, तथापि सहिष्णुता का भाव दृष्टिगोचर होना ही चाहिए। आगम एवं जैन धर्म दर्शन पहले है तथा सम्प्रदाय एवं संघ बाद में।

पत्र-पत्रिकाएँ यदि सौहार्द एवं समन्वय का भाव लेकर चलें तो व्यक्ति एवं समाज में कायापलट हो सकता है, दोष-प्रोत्साहन के स्थान पर गुण-ग्रहण के भाव को बल मिल सकता है। पत्र-पत्रिकाओं की सामग्री में सम्पादक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वह ही लेखों को आमन्त्रित करता है, चयन करता

है एवं फिर परिमार्जन करता है। वह ही पत्र-पत्रिकाओं को दिशा प्रदान करता है। जैन समाज में आज अच्छे लेखकों की भी कमी है, जिससे लेखों का स्तर ऊँचा नहीं उठ पा रहा है। इस ओर प्रयत्न की अपेक्षा है। बालकों, युवकों, महिलाओं में धर्म के प्रति रुचि जागृत करने का कार्य सन्त-महापुरुष तो करते ही हैं, किन्तु पत्र-पत्रिकाएँ भी इसमें अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं। धर्म से अपरिचित एवं सुपरिचित जनों को भी पत्र-पत्रिका में ज्ञानवर्धन हेतु आगम-सम्मत पाठ्यसामग्री मिलनी चाहिए। यह बड़ा कठिन कार्य है कि एक पत्रिका में सबके पढ़ने योग्य सामग्री मिल सके, इसलिए कुछ पत्रिकाएँ अपना एक क्षेत्र चुनकर भी रचनाएँ प्रकाशित करें, तो उत्तम कार्य हो सकता है।

धार्मिक पत्र-पत्रिकाएँ वह कार्य कर सकती हैं, जो एक सन्त-सती अपनी मर्यादा के कारण नहीं कर सकते। दूरस्थ स्थानों पर बैठे पाठकों को पत्र-पत्रिकाएँ नियमित स्वाध्याय की सामग्री प्रस्तुत करने के साथ विभिन्न समाचारों की जानकारी करा कर उन्हें सक्रिय एवं सजग बना सकती हैं। उनमें धर्म के प्रति रुचि को अभिवृद्ध कर उनके जीवन-निर्माण में सहायक बन सकती हैं तथा उन्हें एक सूत्र में पिरोने का कार्य भी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संभव है।

देश की स्वतन्त्रता के पूर्व कुछ अखबारों ने लोगों में चेतना फूंकने का कार्य किया और वे स्वतन्त्रता की लड़ाई में सक्रिय हुए। इसी प्रकार धार्मिक पत्र-पत्रिकाएँ व्यक्ति की आत्म-चेतना को जागृत कर धर्म की सही समझ प्रदान कर उनके आचार-विचार को समृद्ध बना सकती हैं। दया, अहिंसा, करुणा, खाद्य-अखाद्य के संबंध में समुचित जानकारी देकर भी पाठकों के आचरण को धर्मनिष्ठ बनाने में पत्र-पत्रिकाओं से मदद मिल सकती है। यह शुभ संकेत है कि जैन समाज में धार्मिक पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने के प्रति निरन्तर रूचि बढ़ रही है। जो पाठक पत्रिकाएँ मंगाकर उनका स्वाध्याय नहीं करते, उन्हें भी उनका सदुपयोग करने का चिन्तन करना चाहिए।

धार्मिक पत्र-पत्रिकाएँ यदि अन्धविश्वास, अज्ञान एवं समस्याओं में उलझे पाठकों के लिए दीपक बनकर प्रकाश करती हैं एवं समस्याओं के समाधान में निमित्त बनती हैं तो पाठकों का आकर्षण पत्रिकाओं के प्रति स्वतः होगा तथा ऐसी पत्रिकाएँ व्यक्ति एवं समाज में सौहार्द, सुधार एवं उन्नयन में सहायक बन कर महान् कार्य कर सकती हैं। ■

(क्रमशः 2)

समत्व की साधना : सामायिक

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

शुद्धि चतुष्टय की आवश्यकता

सामायिक की साधना के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव इन चारों की शुद्धता आवश्यक है। जो हमारी सिद्धि के भावों का, वास्तविक गुणों का कारण होता है वह द्रव्य है। जिस तन से हम सामायिक करने जा रहे हैं वह उद्वेलित तो नहीं है, उत्तेजित तो नहीं है, राग-द्वेष से ग्रस्त तो नहीं है और जिन उपकरणों की सहायता से (यथा-आसन, मुंहपत्ती, पूंजणी, स्वाध्याय योग्य ग्रन्थ, माला आदि) सामायिक की जा रही है वे साफ, स्वच्छ और शुद्ध होने चाहिए। भावों को बढ़ाने में वे उपकरण भी सहायक होते हैं। ये उपकरण शुद्ध, सरल और सादे हों। ऐसा न हो कि माला चांदी की हो, पूंजणी में घूघरे लगे हों और मुंहपत्ती रत्न जड़ित हो।

द्रव्य की तरह क्षेत्र शुद्धि भी आवश्यक है। यदि आप चाहते हैं समता, और बैठते हैं विषमता में तो समता कैसे आयेगी? जहाँ बारूद के ढेर हों, वहाँ कोई रसोई करने की जगह मांगे तो क्या होगा? वहाँ तो बीड़ी तक पीने की मनाही होती है। यदि उस निषिद्ध क्षेत्र में कोई बीड़ी पीता पकड़ा जाता है तो वह दंड का भागी होता है। जैसे कमाई के लिये दुकान है, पढ़ने के लिये स्कूल है, न्याय के लिए कोर्ट है,उसी प्रकार सामायिक के लिये भी नियत स्थान होना आवश्यक है। कई बार सर्दी के कारण लोग स्थानक में आकर सामायिक नहीं करते। वे पलंग के पास या रसोई घर में बैठकर सामायिक करते हैं तो समता कैसे आयेगी?

सामायिक-साधक के लिए काल का भी अपना विशेष महत्त्व है। जिस प्रकार भोजन करने का, दवा लेने का, शरीर की आवश्यक क्रियाओं से निवृत्त होने का निश्चित समय निर्धारित होने का लाभ है, उसी प्रकार नियमित रूप से की जाने वाली सामायिक का अपना विशेष लाभ है।

सामायिक समभाव की साधना है। सामायिक साधक को प्रतिदिन यह सोचते रहना चाहिये कि उसके विषम भाव कितने कम हुए हैं और समता कितनी आयी है? जिस प्रकार बुखार आने पर यदि दो-तीन दिनों तक दवाई लेते रहने पर वह नहीं उतरता हैं तो दवा बदल दी जाती है। इसी प्रकार आपको सामायिक करते-करते वर्षों बीत गये और मन की वृत्तियों में कोई

बदलाव नहीं आया तो इस संबंध में सोचना चाहिए और प्रयत्न करना चाहिये कि क्रोध कैसे कम हो, झूठ कैसे न बोला जाय, घृणा कैसे दूर हो? जिस प्रकार दवा रोग मिटाने के लिए ली जाती है उसी प्रकार सामायिक समता लाने के लिये की जानी चाहिये। ऐसा न हो कि दवा तो रोग मिटाने के लिये खाओ और सामायिक केवल रूढ़ि पालन के लिये करो।

सामायिक के पाँच अतिचार

जिस व्यापार से समभाव का विघात हो, वह सब व्यापार अप्रशस्त कहलाता है। साथ ही उस समय "मैं सामायिक व्रत की आराधना कर रहा हूँ" यह बात भूलना नहीं चाहिये। यह सामायिक का भूषण है, क्योंकि जिसे निरन्तर यह ध्यान रहेगा कि मैं इस समय सामायिक में हूँ, वह इस व्रत के विपरीत कोई प्रवृत्ति नहीं करेगा। इसके विपरीत सामायिक का भान न रहना दूषण है। ये दूषण (अतिचार) पाँच हैं:-

1. मणदुप्पणिहाणे– सामायिक का पहला अतिचार मनःदुष्प्रणिधान है, जिसका तात्पर्य है मन का अशुभ व्यापार। सामायिक के समय में साधक को ऐसे विचार नहीं होने चाहिये जो सदोष या पापयुक्त हों। सामायिक में मन आत्माभिमुख होकर एकाग्र बन जाना चाहिये। एकाग्रता को खण्डित करने वाले विचारों का मन में प्रवेश होना साधक की दुर्बलता है।

मन में बड़ी शक्ति है। उसके प्रशस्त व्यापार से स्वर्ग, मोक्ष और अप्रशस्त व्यापार से नरक तैयार समझिये। कहा है-

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

किसी जलाशय का पानी व्यर्थ बहाया जाय तो कीड़े उत्पन्न करता है तथा संहारक बन जाता है और यदि उसी जल का उचित उपयोग किया जाय तो अनेक खेत लहलहाने लगते हैं। मानसिक शक्ति का भी यही हाल है। मानसिक शक्ति के सदुपयोग से अलौकिक शान्ति प्राप्त की जा सकती है। अतएव मन को काबू में करना साधना का प्रधान अंग है। मन में गर्व, क्रोध, कामना, भय आदि को स्थान देकर यदि कोई सामायिक करता है तो ये सब मानसिक दोष इसे मलिन बना देते हैं। पति और पत्नी में या पिता और पुत्र में आपसी रंजिश पैदा हो जाय तब रुष्ट होकर काम न करके सामायिक में बैठ जाना भी दूषण है। अभिमान के वशीभूत होकर या पुत्र, धन, विद्या आदि के लाभ की कामना से प्रेरित होकर सामायिक की जाती है तो वह भी मानसिक दोष है। अप्रशस्त मानसिक विचारों के कारण सामायिक से आनन्द-लाभ के

बदले कर्म-बन्ध होता है। अतएव साधक को इस ओर सावधान रहना चाहिए और प्रसन्न एवं शान्त चित्त से समभाव को जागृत करने के उद्देश्य से, वीतराग भाव की वृद्धि के लिए तथा कर्म-निर्जरा के हेतु ही सामायिक की आराधना करनी चाहिए।

2. वयदुप्पणिहाणे– सामायिक का दूसरा दोष है वचन का दुष्प्रणिधान अर्थात् वचन का अप्रशस्त व्यापार। सामायिक के समय आत्म-चिन्तन, भगवत् स्मरण या स्वात्मरमण की ही प्रधानता होती है। अतएव सर्वोत्तम यही होगा कि मौन भाव से सामायिक का आराधन किया जाय। यदि आवश्यकता हो और बोलने का अवसर आए तो भी संसार-व्यवहार संबंधी बातें नहीं करना चाहिये। हाट, हवेली या बाजार संबंधी बातें न करें, काम-कथा और युद्ध-कथा से सर्वथा बचते रहें। कुटुम्ब-परिवार के हानि-लाभ की बातें करना भी सामायिक को दूषित करना है।

3. कायदुप्पणिहाणे– सामायिक का तीसरा दूषण शरीर का दुष्प्रणिधान है। शरीर के अंग-प्रत्यंग की चेष्टा सामायिक में बाधक न हो, इसके लिये यह आवश्यक है कि इन्द्रियों एवं शरीर द्वारा अयतना का व्यवहार न हो। सामायिक की निर्दोष साधना के लिए यह अपेक्षित है। इधर-उधर घूमना, बिना देखे चलना, पैरों को धमधमाते हुए चलना, रात्रि में बिना पूंजे चलना, बिना देखे हाथ पैर फैलाना आदि काय दुष्प्रणिधान के अन्तर्गत आते हैं। मन, वचन और काय का दुष्प्रणिधान होने पर सामायिक का वास्तविक आनन्द प्राप्त नहीं होता।

4. सामाइअस्स सइअकरणया– सामायिक काल में सामायिक की स्मृति न रहना भी सामायिक का दोष है।

5. सामाइअस्स अणवट्ठियस्स करणया– व्यवस्थित रूप से अर्थात् आगमोक्त पद्धति से सामायिक व्रत का अनुष्ठान न करने से इस दोष का भागी होना पड़ता है। सामायिक अंगीकार कर प्रमाद में समय व्यतीत कर देना, नियम के निर्वाह के लिए जल्दी-जल्दी सामायिक करके समाप्त कर देना, चित्त में विषम भाव को स्थान देना आदि अनौचित्य का त्याग इस व्रत के अन्तर्गत है।

सामायिक में परम्परा भेद और सहिष्णुता

श्वेताम्बर परम्परा में सामायिक के पूर्व वेश परिवर्तन आदि की बहुत सी बाह्य क्रियाएँ अपेक्षित मानी जाती हैं। दिगम्बर परम्परा में बाह्य क्रियाएँ अति न्यून हैं। श्वेताम्बर परम्परा का मन्तव्य है कि भरत, चिलाती पुत्र आदि

को सामायिक बिना पाठ और बाह्य क्रिया के हुई। वे अपवाद रूप हैं। अन्तर की विशेष योग्यता वाले बिना बाह्य विधि के भी सामायिक कर सकते हैं, किन्तु साधारण साधक के लिए बाह्य विधि भी आवश्यक है। आज विविध परम्पराओं के लोग जब एक जगह धर्मक्रिया करने बैठते हैं, तब भिन्न-भिन्न प्रकार की नीति रीति को देखकर टकरा जाते हैं, वाद-विवाद में पड़ जाते हैं, जबकि धार्मिक-मंच सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने का अग्रिम स्थान है। लोक सभा में विभिन्न प्रकार की वेशभूषा, साज-सज्जा, बोलचाल और नीतिरीति के व्यक्ति एक साथ बैठ सकते हैं, शाकाहारी- मांसाहारी एक साथ खा सकते हैं, पी सकते हैं तो फिर क्या लम्बी मुँहपत्ती और चौड़ी मुंहपत्ती वाले प्रेमपूर्वक एक साथ नहीं बैठ सकते?

वीतराग के शासन काल में किसी भी सत्यप्रेमी को जो खुले मुँह बोलने में दोष मानता हो, भले वह मुँह के हाथ लगाकर, कपड़ा लगाकर या मुँहपत्ती बांधकर यतना से बोलता हो तो एक साथ बैठ सकता है। जैसे-मुंहपत्ती बांधने वाले असावधानी से बचना चाहते हैं वैसे ही उसे हाथ में रखने वाले भी खुले मुंह नहीं बोलने का ध्यान रखें तो विरोध ही क्या है? विरोध असहिष्णुता से, एक दूसरे के दोष बताने में है। मुंहपत्ती बांधने वाले को थूंक में जीवोत्पत्ति बताकर छुड़ाना और नहीं बांधने वाले को उसकी परम्परा के विरुद्ध बलात् बंधाना विरोध का कारण है। पसीने से गीले वस्त्र की तरह गीली मुंहपत्ती जब तक मुँह के आगे रहती है, भाप की गर्मी के कारण तब तक जीवोत्पत्ति की संभावना नहीं रहती। इस प्रकार दोनों के मन में जीव रक्षा का भाव है। हिंसा, असत्य, अदत्त, कुशील, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य आदि पाप कर्म का परित्याग भी दोनों का एक ही है। फिर काउसग्ग में इच्छाकारेणं पढ़ा तो क्या और लोगस्स पढ़ा तो क्या? इनमें आग्रह कर एक दूसरे को भला-बुरा बताना, समभाव की साधना में विषम भाव पैदा करना है।

परम्पराओं में आचार्यों की दृष्टियों को समझने का यत्न करना चाहिए और देखना चाहिए कि काउसग्ग आदि में कौनसे पाठ कब कैसी स्थिति में चालू हुए और प्राचीन काल में कैसे पाठ बोले जाते थे। 'लोगस्स' की परंपरा में कहा जाता है कि 'इरियावहिया' का पाठ पहले पढ़ चुके, अतः काउसग्ग में उसकी पुनरावृत्ति न कर लोगस्स पढ़ना चाहिए, क्योंकि इसमें पूर्ण समभाव में स्थित वीतरागों की स्तुति की गई है, दूसरी ओर इरियावहिया पढ़ने वालों का कहना है कि रास्ते चल कर आये हैं, इसलिए गमनागमन की शुद्धि के लिये

प्रथम इरियावहिया पढ़ें। उसके अनुसार कौनसे दूषण लगे, इसका चिन्तन करने के लिए काउसग्ग में इरियावहिया का आलोचन किया जाता है।

सावत्थी का श्रावक पुष्कली पौषधशाला में शंख श्रमणोपासक के पास गया, तब 'इरियावहिया' प्रतिक्रमण का उल्लेख भगवती सूत्र में आता है। इरियावहिया वाले भी सामायिक पारने के समय तो 'लोगस्स' करते ही हैं। कहीं दो लोगस्स के काउसग्ग की भी परम्परा है। एक की सहेतुकता तो समझ में आती है, पर दूसरे लोगस्स के लिये शास्त्रीय प्रमाण उपलब्ध नहीं होता, फिर भी स्तवन की भावना से कोई करता है तो कोई अपराध जैसी बात नहीं है। अतः तन, मन और वाणी के संयम का अधिक ध्यान रखकर चलने का ही प्रयत्न करना चाहिए। ऐसा करने से कहीं किसी परम्परा वाले के साथ सामायिक के अवसर पर संघर्ष और विवाद का कारण ही उत्पन्न नहीं होगा। इस प्रकार साधक विचार-सहिष्णुता की भावना को बढ़ाते गया तो भावी पीढ़ी धर्म से दूर न भागकर अवश्य इस ओर आकर्षित हो सकेगी।

सामायिक : दण्ड से मुक्ति की साधना

यह जीव भले-बुरे कर्मों का दण्ड विभिन्न दण्डकों में प्राप्त करता है। आवश्यक सूत्र, स्थानांग सूत्र और भगवती सूत्र में बताया गया है कि यह जीव जिससे सजा पावे, उसे दण्ड कहते हैं। अब इस दण्ड से बचना है तो कौनसा रास्ता पकड़ना? भगवान ने कहा कि सामायिक का रास्ता पकड़ो। जितनी तुम सामायिक करोगे, उतना ही तुमको लाभ होगा। अशुभ मन, अशुभ वचन और अशुभ काया दण्ड के कारण हैं। मनुष्य यह जानता है, लेकिन जानता हुआ भी उपयोग नहीं कर पाता। हमारे लिए प्रभु ने कहा कि यदि जीवन के इस कर्म के कचरे को धोना है और आत्मा को हल्का करना है तो आप सामायिक करें।

जीवन उन्नत करना चाहो तो, सामायिक साधन कर लो।
आकुलता से बचना चाहो तो, सामायिक साधन कर लो।।
तन, धन, परिजन सब सपने हैं, नश्वर जग में नहीं अपने हैं।
अविनाशी सद्गुण पाना हो तो, सामायिक साधन कर लो।।

सामायिक का अर्थ बताते हुए कहा गया है कि दण्ड से अदण्ड में लाने की प्रवृत्ति का नाम सामायिक है। सावद्य योग या पापकारी क्रिया चाहे मन की हो, चाहे वचन की हो, जिसमें पापकारी क्रिया है, वह दण्ड का रूप है। सामायिक में सबसे पहले सावद्य योग रूप दण्ड का त्याग होता है। शिष्य गुरु के चरणों में निवेदन करता है कि भगवन्! मैं सावद्य योगों का त्याग करता हूँ, जिनमें पाप है, झूठ है, क्रोध है, मान है, माया है, राग है, द्वेष है जो भी पापकारी प्रवृत्तियां हैं, दण्ड के लायक हैं उनको मैं छोड़ता हूँ। (क्रमशः)

सेवा करना सीख लें

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

अन्धे को कोई नयन दे दे, इससे भी बढ़कर जीवन में गुरु का महत्त्व होता है। सद्गुरु से जो कुछ प्राप्त होता है वह करोड़ों रुपयों से भी अर्जित नहीं हो सकता। इसलिए गुरु की सेवा परम कर्त्तव्य बनता है। साधक जीवन में वैयावृत्त्य या सेवा का बड़ा महत्त्व है। न केवल गुरु की, गुरु भ्राता, अग्रज, रोगी एवं वृद्ध संतों की सेवा भी उसी अग्लान भाव से करनी चाहिए। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा जयपुर में ३ अगस्त १९९७ को आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के पुण्यदिवस श्रावण कृष्णा अमावस्या को फरमाया गया यह प्रवचन भावपूर्ण, विचारपूर्ण एवं अतीव प्रेरक है। *-सम्पादक*

संसार में अनादिकाल से संसरण करते हुए इस जीव ने सम्यक् रूप से भगवद्-वाणी की आराधना नहीं की, सम्यक् रूप से वीतराग भगवन्तों की आज्ञा की आराधना नहीं की। यही कारण है कि इस जीव को आज तक भी जन्म-मरण करते हुए इसी संसार-सागर में विविध प्रकार के दुःख और पीड़ाओं के थपेड़ों को सहन करना पड़ रहा है। इस जीव को अनेक बार जगाने वाले महापुरुषों का संयोग मिला, पर उनको प्राप्त करके भी इसने द्रव्य रूप से तो ऊपरी स्तर पर उनकी भक्ति की, उनकी सेवा सुश्रूषा की, पर अन्तर में इसको पहुंचाया नहीं ।

तीन प्रकार के सिद्ध बताये जाते हैं- स्वयं बुद्ध सिद्ध, प्रत्येक बुद्ध सिद्ध और बुद्ध बोधित सिद्ध । अंतिम भव में स्वयं बोध को प्राप्त करके मुक्ति में जाने वाले तीर्थंकर भगवन्त भी पूर्व भव में किसी न किसी योग्य सद्गुरु का सान्निध्य प्राप्त कर चुके होते हैं। तीर्थंकर के लिए नियमा है कि तीसरे भव में तीर्थंकर बनने से पहले उनका बीच का भव देवता या नरक का होता है। तीर्थंकर की आगति ३८ बतायी जाती है । ३५ प्रकार के वैमानिक देवता बताये गये हैं और पहली, दूसरी और तीसरी नरक से निकला हुआ जीव तीर्थंकर बन सकता है। उसके पहले के मनुष्य भव में उस जीव ने तीर्थंकर उपार्जन के बीस बोलों की आराधना की, योग्य सद्गुरु का सान्निध्य प्राप्त किया। बिना गुरु के मुक्त होने वाले प्रत्येक बुद्ध भी हैं जो किसी घटना को देखकर पहले आराधे हुए महाव्रतों का जातिस्मरण के द्वारा साक्षात्कार कर पुनः घर से निकल जाते हैं। चूड़ियों की खनखनाहट तो निमित्त थी, बैल की दीन दशा तो निमित्त थी, वह आम्रफल, आम्र का वृक्ष, वह भी निमित्त था, पर उनसे हुए जातिस्मरण ज्ञान से पहले के भव की साधना-आराधना का साक्षात्कार करते हुए बिना गुरु के उपदेश के भी घर-बार छोड़कर निकल गए, किन्तु सबसे ज्यादा गुरु के

उपदेश को सुनकर साधना मार्ग पर चलने वालों का नम्बर आता है। सम्यक् दर्शन, निसर्ग और अधिगम से दो प्रकार का बताया जाता है। निसर्ग से होने वाले सम्यग्दर्शन के लिए बाहर के गुरु निमित्त की आवश्यकता नहीं, किन्तु वह अपवाद का मार्ग गिने-चुने लोगों को ही मिलता है। राजमार्ग तो योग्य गुरु के चरणों में बैठकर उपासना करना है। इसी से जीव को साधना के सच्चे स्वरूप को समझने का सुअवसर प्राप्त होता है। सामान्य रूप से साधना पथ पर चलने वाले को यदि कोई मार्गदर्शन नहीं मिले तो भटकाव आ सकता है, पथभ्रष्टता आ सकती है। इसलिए वीतराग की वाणी में जहाँ राग का निषेध किया जाता है, वहाँ पर भी गुरुभक्ति को बहुत बड़ी महत्ता प्रदान की गयी है।

उत्तराध्ययन सूत्र का पहला अध्याय अथवा दशवैकालिक सूत्र का नौवां अध्ययन कितना सुंदर विवेचन प्रस्तुत करता है। गुरु-पद की सेवा-भक्ति के लिए मार्गदर्शन देता है। बड़ा कठिन काम है योग्य गुरु का मिलना और उससे भी बड़ा कठिन काम है, उन चरणों में समर्पण। व्यक्ति को अगर अपनी स्वार्थसिद्धि होती है तब तक तो ठीक है और जरा सा भी उसकी इच्छा पर कुठाराघात होता है तो आप देखें कि क्या हालात बनते हैं। मटकी को गढ़ने वाले प्रजापत की उपमा दी गयी है गुरु को-

"गुरु प्रजापति सारिखा गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहे चोट।।"

लेकिन शायद उसकी समानता नहीं की जा सकती है, क्योंकि मिट्टी में प्रतिक्रिया व्यक्त करने की ताकत नहीं है। कुम्भकार उसको चाहे जैसा ठोक लें, वह मिट्टी कुछ भी प्रतिरोध नहीं कर सकती है। उसके हाथ में है चाहे जैसा घुमाना और बनाना। कारीगर की उपमा भी दी जाती है-

"गुरु कारीगर सारिखा, टांची वचन रसाल।
पत्थर से प्रतिमा करे, पूजा लहे अपार।।"

लेकिन पत्थर में भी वह ताकत नहीं है कि कारीगर की टांची पड़ती हो, उसको रोक ले। जीव भले ही हो पृथ्वीकाय का, परन्तु अपनी वेदना की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता, प्रतिकार नहीं कर सकता। इस कारण से मिट्टी को गढ़ना सोरा (सरल) है, पत्थर को टांचना सोरा (सरल) है। परन्तु जीते-जागते चैतन्य को टांचना बड़ा मुश्किल का कार्य है। सामने वाले की अपनी कुछ इच्छा है, अपनी कुछ सोच है। सामने वाला कुछ न कुछ भावना रखता है। उस समय उसको दिशा दी जाती है। मीठी-मीठी बातें करना बहुत सरल है, बहुत सोरी बात है, पर किसी के जीवन का निर्माण करना बहुत

कठिन काम है। आज तो माता-पिता अपने बच्चों को भी अच्छी तरह नहीं गढ़ पाते हैं। बचपन से जिनका पालन-पोषण किया जा रहा है, जिनका संबंध जुड़ा हुआ है, उन बच्चों को गढ़ने में परेशानी पैदा हो रही है। गोद में बच्चे को लिए हैं, बच्चा जिद्‌द करने लगा- मैं कोल्ड ड्रिंक पीऊँगा। मुश्किल से ३-४ साल का बच्चा होगा, कैसी भी जिद्‌द पर अड़ जाए, कोई कहे मैं तो रोटी नहीं खाऊँगा, कोई कहे कोल्ड ड्रिंक पीऊँगा। बच्चे के पापाजी कहते हैं- महाराज आजकल के बच्चे कोई बात नहीं मानते। इन संस्कारों के रहते क्या निर्माण कर पाएंगे आप?

आज की तिथि उस जीवन निर्माण के शिल्पकार को याद करने की तिथि है जिसको हमने अपनी आंखों से नहीं देखा। जिस महापुरुष को देखा नहीं, पर जिसकी निर्मित कृति को देखकर गुरु के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। चित्र को देखकर चित्रकार का सहज में अहसास हो जाता है। किसी भी ग्रंथ को पढ़कर उसके रचनाकार के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है, इसी प्रकार पूज्य हस्ती को देखकर उनके गुरुदेव पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के जीवन का अनुमान लगाया जा सकता है।

कौन से बिन्दु से उनका वर्णन प्रारम्भ किया जाए, साक्षात् जिनको भगवानदासजी पिता मिले और माता का नाम भी पार्वती बाई। संयोग होता है-तिथि भी मिली तो ज्ञान पंचमी, सौभाग्य पंचमी। कार्तिक शुक्ला पंचमी को जन्म हुआ, सम्वत् १९१४ को जोधपुर के चामड़ मेहता वंश में। बाल्यकाल में बच्चों की स्कूल में पढ़ने गए। पाठशाला में पहले आठ साल की उम्र में भेजा जाता था। आजकल तीन साल हो गयी उम्र। पूर्व जन्म के संस्कारों से बचपन में वैराग्य के भाव जग गये। संयोग मिला आचार्य पूज्य कजोड़ीमल जी महाराज का। चरणों में निवेदन किया छोटे से बालक ने। **संत प्रलोभन नहीं देते थे, संसार की असारता बताते, संयम का स्वरूप समझाते, इस जीवन के दुःख-द्वंद्वों को समाप्त करने की प्रेरणा देते। यह वीतराग वाणी के प्रवचनकार का लक्ष्य होता है।** पर आने वाले मुमुक्षु को पहले टटोलना,परखना आवश्यक है। यह कोई ऐसी बात नहीं है कि आज दीक्षा लो और कल इच्छा नहीं हो तो छोड़ दो। जीवन का समर्पण है इसलिए संत चेता रहे हैं। गुरुदेव ने इस मार्ग की कठिनाई बताई। किन्तु जिसको आत्मा का रस लग गया वह जीव भौतिक जगत में रच नहीं सकता, रह नहीं सकता।

आपने कभी सुना हो तिवरी गांव के पीरचन्द्र जी के विषय में जो आचार्य पूज्य जयमल जी की सम्प्रदाय में दीक्षित हुए, तेजस्वी संत बने। उनकी माँ आंखों से अंधी थी। वे विवाहित थे। दीक्षा की बात कही तो माँ कहने लगी,

क्या बात करता है, मेरी सेवा कौन करेगा? वे कहने लगे, माँ तेरी बहू है, साधन भी पूरे हैं, कोई कमी नहीं है, तेरी जिन्दगी आराम से गुजर जायेगी और रिश्तेदार, परिवार वाले संभाल लेंगे। मेरे से तो अब घर में रहा नहीं जाता। माँ कहने लगी, बेटा, ऐसा मत कह। ज्यादा आग्रह कहने से पीरचन्द जी रुक गए। एक दिन पत्नी आवश्यक कार्य से बाहर गई हुई थी। घर आये, माँ ने अंदाजे से भोजन परोस दिया। बेटा खा-पीकर चला गया। पत्नी आयी, माँ से पूछा, आज वे खाना खाने नहीं आये। माँ ने कहा- वह तो खा गया। पत्नी ने कहा, परन्तु खिचड़ी की तो पूरी देगची भरी हुई है। माँ को दिखता नहीं था, अतः पास में बाटे की भगोनी थी, उसमें से परोस दिया। घर में भैंस को बाटा डालते थे, वह बाटा परोस दिया। माँ ने कहा, अरे, मेरे को तो नहीं दिखता, पर उसकी तो आंखें मौजूद थीं । माँ समझ गई, अतः बोली-"**अब तू दीक्षा लेले, तू घर में रहने लायक नहीं है।**" जिसके अंतर में आत्मा के रस की अनुभूति हो गयी, भीतर में जिसने प्रभु के दर्शन कर लिये, आत्मदेव के स्वरूप को जिसने समझ लिया, वह प्राणी कभी भी घर में रह नहीं सकता। मजबूरी में रहना पड़े तो तड़पता है।

"अहं अधण्णे अकयपुण्णे"

मैं अधन्य हूँ,अकृत पुण्य हूँ। तड़प रहा है। अन्तगड़सूत्र में देखिये, तीन खंड का नरेश कृष्ण वासुदेव तड़प रहा है, कैसी उसके मन में व्याकुलता जगी है। क्या आपके मन में पुद्गलों के प्रति ऐसी अनासक्ति के भाव जगे हैं। **जब तक पुद्गल पर आसक्ति है, इस जीव के दुःख-दर्द खत्म हुए नहीं होते हैं। सारे बंधनों का मूल है आसक्ति।** बालक शोभाचन्द्र के मन में वह आसक्ति टूट चूकी थी।

गुरुचरणों में पुनः-पुनः निवेदन करते हुए आज्ञा प्राप्त करके १३ साल की उम्र में सम्वत् १६२७ बसंत पंचमी के दिन जयपुर में दीक्षा अंगीकार की। जो गुरु चरणों में समर्पित होकर गुरु की सेवा करता है वही शिष्य योग्य गुरु बन सकता है। ऐसे गुरु पद को प्राप्त करके उस गौरवमय पद को वही सुशोभित कर सकता है, जिसने गुरु के चरणों में रहकर सम्यक् साधना की है, सम्यक् आराधना की है। संवत् १६२७ से लेकर १६३६ तक, श्री कजोड़ीमल जी महाराज के चरणों में तथा देवलोकगमन के अनन्तर आचार्य श्री विनयचन्द जी महाराज के चरणों में सेवा की। ३६ साल गुरु भाई के चरणों में ऐसी सेवा की, गुरुदेव (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) के शब्दों में कहूं-

विनयचन्द पूज्य की सेवा, चकित हो देखकर देव,
गुरु भाई की, की सेवा, खिवैया हो तो ऐसे हों,
अगर संसार में तारक, गुरुवर हों तो ऐसे हों।।

घर को संभालने वाला मुखिया या स्वयं माताजी-पिताजी बीमार पड़ जाएँ तो आज उनको संभालना मुश्किल हो रहा है, उनकी सेवा करना मुश्किल हो रहा है। आाप सुपरिचित हैं। ऐसा जमाना है, पर साधक अवस्था में आचार्य पूज्य कजोड़ीमल जी के शिष्य शोभाचन्द जी महाराज ने गुरु भाई विनयचन्द्र जी महाराज की जो सेवा की- वह अद्भुत थी। आचार्य श्री विनयचन्द जी चौदह साल जयपुर में विराजे। जिनके कारण से यह क्षेत्र सरसब्ज बना। उनका जयपुर की धरा पर अनन्त उपकार है। ऐसे धर्म के संस्कार देने के मुख्य स्रोत विनयचन्द जी महाराज और उनकी सेवा करने वाले आचार्य श्री शोभाचन्द जी महाराज, जिनका गुणगान करने की आकांक्षा आज हमारे मन में जगी।

यह जिनेन्द्र का शासन है। इसका गौरव है, यह भगवान महावीर का शासन है। ऐसे ही गौरवशाली महापुरुषों से सुशोभित होता आया है, उसी से देदीप्यमान होकर चल रहा है।

स्वाध्याय से पहला कर्त्तव्य सेवा है। साधक के लिए सिर्फ दो कार्य करणीय हैं-सेवा और स्वाध्याय। पहले सेवा है, पीछे स्वाध्याय है। इस **सेवा में वह ताकत रही हुई है कि यदि सेवा सत्य मन से, सच्चे भाव से की जाए तो महान् निर्जरा करके साधक अपनी आत्मा को आगे बढ़ा सकता है।** सेवा से बाहर का यश भी जल्दी मिलता है। उस यश में डूबकर व्यक्ति उस सेवा के वास्तविक लाभ से वंचित भी हो जाता है। कभी दिखाने के लिए सेवा होती है, पर आराधना कराने वाले महापुरुषों ने कैसी सेवा की। यह तो देखने वाले ही जान सकते हैं। हम तो केवल ग्रंथों को पढ़कर उनमें लिखी हुई बातों को और गुरुदेव के मुख से कही हुई बातों को सुनकर ही कह सकते हैं।

१९७२ में आचार्य पूज्य विनयचन्द जी महाराज का मगसर बदी बारस को, जयपुर में देवलोक होने के पश्चात् ऊहापोह मच गयी कि किसको आचार्य बनाया जाए। गौरवशाली परम्परा रही है रत्नवंश की, जिसके भक्त छगनमल जी, मगनमल जी मुणोत अखिल भारतीय कांफ्रेंस के महासचिव रहे। उनका और उनके परिवार का बहुत अच्छा योगदान रहा है। इस सम्प्रदाय के समर्पित श्रावक पहुँचे रियां पीपाड़, बाबाजी श्री चन्दनमल जी महाराज के पास। मारवाड़ को संभालने का काम स्वामीजी श्री चन्दनमल जी महाराज ने किया।

स्वामी जी श्री चन्दनमल जी महाराज के चरणों में निवेदन किया- शोभाचन्द्र जी महाराज फरमा रहे हैं कि यह बूढ़ा बैल इस गाड़ी को नहीं ढो सकेगा। रत्नसंघ में २४ साल रतनचन्द जी महाराज ने आचार्य पद नहीं लिया।

स्वामीजी श्री चंदनमल जी इसी यशस्वी परम्परा के यशस्वी संत थे। अधिक जानना पढ़ना चाहें तो 'अमरता के पुजारी' व 'आदर्श विभूतियाँ' पुस्तकों को पढ़िये।

छगनलाल जी मुणोत, अजमेर वालों को चंदनमल जी महाराज ने कहा- मैं शोभाचन्द जी महाराज को अपने हाथों से आचार्य बनाऊँगा। उन्होंने कहलवाया कि मैं विहार करके अजमेर आ रहा हूँ और आप भी जयपुर से अजमेर आ जाएँ। आचार्य श्री श्रीलाल जी महाराज भी पधारे थे। उनकी विहार करने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। चन्दनमल जी महाराज ने कहला दिया कि आप नहीं जा सकते हैं। अगर आप इस अवसर को छोड़कर जाएंगे तो लोगों में भ्रांति पैदा हो जाएगी। ऊहापोह की स्थिति पैदा हो जाएगी। सम्मान की भावना, विनय का भाव देखिए कि आचार्यश्री श्रीलालजी महाराज ने विहार नहीं किया। पूज्य श्री चन्दनमल जी महाराज ने अजमेर में शोभाचन्द्र जी महाराज को पूज्य पछेवड़ी ओढायी। ये इतिहास की कड़ियां हैं।

किसी भी समाज में यदि लोग अपनी-अपनी लगायेंगे तो वह समाज, वह संघ चल नहीं सकता है। कोई कहे कि इसमें मेरी नहीं चली, मैं अब कोई काम नहीं करता, तो इससे कोई भी संघ पनप नहीं सकता है। समाज में, संघ में कोई भी निर्णय समान रूप से स्वीकार करना चाहिए, समर्पण की भावना रहनी चाहिए।

आज आप घर की चिंता तो करते है, लेकिन कुछ चिंता इस महावीर के शासन की करें।

''घर की चिंता सब करे, शासन चिंता नहीं होय,
क्या कहूं मैं भाइयों, मुख से कहा न जाए।
मंदिर, स्थानक, उपासरा, दिन-दिन बढ़ता जाए,
श्रद्धा, ज्ञान, तत्त्व, मुनि दिन-दिन घटता जाए।।''

केवल घर की चिंता न करें। संघ की, समाज की चिंता भी करें। यदि संघ नहीं रहेगा, समाज नहीं रहेगा तो आपका अस्तित्व भी नहीं रहेगा। आज कोई पाकिस्तान में जाकर धर्म-ध्यान करना चाहे, कर सकता है? बाहर की शांति और संघ का सौहार्द आवश्यक है। कोई विरला साधक ही स्वयंबोध पाकर साधना के पथ पर बढ़ सकता है। इसीलिए नन्दी-सूत्र में भगवान की स्तुति में तीन गाथाएँ हैं और संघ की स्तुति में १४ गाथाएँ उस संघ के गौरव को समझा रही हैं।

''अलग-अलग ढपली बजे, टूटे घर परिवार।
साधे सब जन एकता, सुखी रहे संसार।।''

संघ की बात चल रही है। **संघ में व्यक्ति समर्पण की भावना से जुड़ता है तो निश्चित रूप से संघ का अभ्युदय होता है।** चारदीवारी की चिंता करके केवल कमा लिया, खा लिया, पी लिया तो कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। मानव सामाजिक प्राणी है और वात्सल्य धर्म का सहयोगी अंग है। ६७ बोल में भी कहा है कि स्वधर्मी का विनय करें और क्रियावान का विनय करें। वैयावृत्त्य में भी स्वधर्मी और क्रियावान की वैयावृत्त्य करने की बात कही गई है, जबरदस्ती समझकर नहीं। यह हमारे धर्म का सहयोगी, संबंधी भ्राता है, इसकी धर्मसाधना आगे बढ़ सके, इसके लिए सहयोग देने की भावना हो।

पूज्य श्री चन्दनमल जी महाराज, श्री श्रीलालजी महाराज आदि महापुरुषों की मौजूदगी में फाल्गुन कृष्णा अष्टमी को पूज्य शोभाचन्द जी महाराज का चादर महोत्सव हुआ। उन्होंने संघ को दिपाया। पूज्य हस्तीमल जी महाराज जैसे महापुरुषों को दीक्षा प्रदान कर उनका जीवन निर्माण किया। आपकी सरलता, विचक्षणता अनूठी थी। किन्तु आचार्य बनने के पश्चात् आप अधिक काल तक शासन की सेवा नहीं कर सके। संवत् १९७२ से १९८३ की श्रावण कृष्णा अमावस्या तक, ११ वर्ष भी पूरे नहीं होते। लगभग १० साल और ६ महीने यानी साढ़े १० साल, अधिक विचरण भी नहीं हो पाया। उनकी जीवनी पढ़ो तो पढ़ते रह जाओ। एक के बाद एक आघात। एक वर्ष बाद श्री चंदनमल जी महाराज का देवलोक गमन हो गया। **बाहर की परिस्थिति दुःख-दर्द, संयोग-वियोग कैसे भी आये, साधक तो हर परिस्थिति से लाभ अर्जित करता है। परिस्थिति के प्रवाह में प्रवाहित हुए बिना वह साधक उस परिस्थिति से अप्रभावित रहते हुए अपने आत्म उत्थान के रास्ते पर चलता है।** गुरुवर बहुत भाव-विभोर होकर उन महापुरुषों की गाथा सुनाते थे, जब वह विचरण करके बीकानेर पधारे। भाई वन्दना करने को नहीं आ रहे हैं तो भी वही साधना है, कोई चिंता नहीं है। राय बहादुर को सूचना हुई कि मेरे आचार्य वहाँ पधारे हैं और इस तरह का भेदभाव हो रहा है, उन्होंने आदरणीय आचार्य श्री जवाहर के चरणों में श्रावकों की संकीर्णता की बात रखी, उनका हुक्म आया। उसके बाद श्रावक आने लगे। वह समता का आराधक था, समता का साधक था। उन्होंने उदारता सिखायी। हर पंच महाव्रतधारी की सेवा करना। बराबर सेवा हुई है रत्नवंश के उपासक श्रावकों द्वारा। पंजाब के संत आये तो उनकी बराबर सेवा हुई। संतों ने, महापुरुषों ने उस बात को वापस प्रतिकार के रूप में नहीं कहा, तो इतिहास की कड़ियां बन गयीं। हम उन महापुरुषों का गुणानुवाद करने बैठे हैं,. उनकी जीवन गाथाओं को देखने बैठे हैं। अभी तो मात्र इतना देखें कि **योग्य गुरु बनने**

से पहले उन्होंने योग्य शिष्य बनकर सेवा की। गुरु की सेवा की, गुरु भाई की सेवा की और संघ के बड़े संतों के प्रति समर्पण के भाव रहे। संघ बड़ा है। चतुर्दिक में संघ की महत्ता है। आप तो उस गुरु के भक्त हैं, जिसने अपने नियुक्ति पत्र में भी लिखा है- पहली लाइन में लिखा है संघ सेवक, दूसरी लाइन में शोभाचार्य शिष्य, तीसरी लाइन में हस्ती, उस महापुरुष के आप उपासक हैं। उस महापुरुष की गौरव गाथाएँ गाने का सच्चा तरीका यह है कि हमारे मन में भी समर्पण की भावना आये।

संघ में हर इकाई का महत्त्व है। मात्र एक इकाई से काम नहीं चलता है। हर इकाई को महत्ता देकर समर्पण की भावना बढ़ती जाए तो सूत्र और ज्ञान की सेवा करता हुआ साधक एक न एक दिन बंधनों को काटकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

तूफानों को ललकारो

नितेश नागोता

सूरज की पहली किरण निकली। उसने देखा आज नये पौधे उदास हैं। किरण-"प्यारे पौधों! तुम हमेशा मंद हवा में झूमते हुए सदा मेरा स्वागत करते थे। आज उदास क्यों हो?"

पौधे- "तुम देखती नहीं। रात प्रचण्ड तूफान आया था। बड़े-बड़े पेड़ उखड़ गये हैं। ये सभी जमीन पर पड़े हैं। अतः हमें भी बढ़ते हुए डर लग रहा है।"

किरण- "इन पेड़ों को मत देखो। जिन पेड़ों की जड़ें कमजोर थीं, जिनमें दीमक लग गई थी या जो जमीन से रस पीने में मंद हो गए थे, ऐसे आधारक्षीण पेड़ उखड़ गए हैं। तुम डरो मत, अपनी जड़ों को मजबूत करो, मूल मजबूत होगा तो ऊपर फूल खिलेंगे और फल मधुर रस बाटेंगे।"

वैसे भी बचने के तीन उपाय हैं- विनम्र रहो, झुकना सीखो और मूल के बल पर तने-खड़े रहकर तूफानों को ललकारो। पौधे किरण की बात सुनकर प्रमुदित हो उठे और तनावमुक्त होकर आनंद में झूमने लगे।

उपर्युक्त उदाहरण हमारे चिंतन-मनन और जीवन को नई दिशा देता है। अतः भौतिकता के इस वातावरण में जब संस्कारों का दिवाला निकल रहा है तब पद-प्रतिष्ठा, यशकीर्ति और गौरव को प्राप्त करने के लिए चरित्र रूपी मूल की मजबूती अत्यधिक जरूरी है। अतः नैतिक कर्तव्यों का निष्ठा से पालन करते हुए कर्त्तव्य कर्म को ही पूजा मानकर पूर्ण प्रामाणिकता से कार्य करते हुए हम प्रत्येक स्थान पर अपनी आदर्श और अमिट छाप छोड़ सकते हैं। अतः जीवन में हर परिस्थिति का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहें, क्योंकि संघर्ष ही जीवन है। **-भवानी मण्डी (राज.)**

लोभ पर विजय संतोष से

श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

लोभ सभी पापों का निमित्त और सद्गुणों का विनाशक है। मनुष्य को जब कोई वस्तु प्राप्त हो जाती है तो उसकी इच्छा अन्य वस्तुओं को प्राप्त करने की बढ़ती जाती है, यही लोभ है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है-

" **इच्छा हु आगाससमा अणंतिया।। 9.48**

इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। अगर सोने और चांदी के विशाल असंख्य पर्वत हो जाएं तो भी मनुष्य को तृप्त नहीं कर सकते। उसके लिए वे अपर्याप्त हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र में श्रमण सम्राट् भगवान महावीर ने लोभ की वृद्धि होने के कारण बताये हैं-

"जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढई।
दो मासकयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं।।" 8.17

अर्थात् ज्यों-ज्यों लाभ होता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता है। लाभ से लोभ की वृद्धि होती है। कपिल ब्राह्मण का दो माशा से होने वाला कार्य करोड़ मोहरों से भी पूरा नहीं हुआ। इसका कारण है मनुष्य का लोभ में आ जाना। लोभ से मनुष्य की तृप्ति अशक्य है। लोभ के साथ व्यवहार में कपट आ जाता है। लालच से वह कषाय रूपी कीचड़ में फंस जाता है। उचित-अनुचित का विवेक भूल कर लाभ के लिये लोभ का कार्य करता है। लोभ में आकर पाप कर्म के कार्य करता है। लोभ को पाप का बाप भी कहा जाता है, क्योंकि लोभ से पाप का जन्म होता है। इच्छाएँ बढ़ने से लोभ की प्रवृत्ति बढ़ती है। इच्छाओं का कोई ओर छोर नहीं है।

श्रावक के बारह व्रतों में स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत को पांचवां स्थान दिया गया है। भगवान महावीर ने संग्रह की प्रवृत्ति को स्वयं के लिये व समाज के लिये घातक बताया है। प्रश्न व्याकरण सूत्र में उल्लेख है कि परिग्रह के लिये लोग हिंसा करते हैं, धोखेबाजी करते हैं और भ्रष्टाचारी होने के साथ दूसरों को अपमानित करते हैं। लोभ के कारण परिग्रह होता है। उक्त सबका मूल लोभ है जो मानव के समस्त गुणों का नाश करता है।

तृष्णा भी लोभ का ही एक रूप है। यह लोभ सभी पापों का निमित्त और सद्गुणों का विनाशक है- "..................**लोहो सव्व विणासणो।।**"

संतोष धारण किये बिना तृष्णा मिटती नहीं है। एक इच्छा पूर्ण हुई, दूसरी इच्छा स्वतः ही जागृत हो जाती है। ज्यों-ज्यों धन एवं भोग की सामग्री बढ़ती जाती है त्यों-त्यों तृष्णा भी बढ़ती जाती है। धनसंग्रह से व्यक्ति चिन्ताओं की चिता में जलने लगता है।

"एतदेवेगेसिं महब्भयं भवति।" आचारांग 1.5.2.154

यह परिग्रह ही परिग्रहियों के लिये महाभय का कारण होता है।

"सव्वदुक्खसंनिलयणं।" प्रश्नव्याकरण सूत्र १.५.१९

यह परिग्रह समस्त दुःखों का घर है।

अंग्रेजी में सुन्दर ढंग से इच्छा के संबंध में कहा गया है-

१. Desire is like burning fire, he who falls into it never rises again.

इच्छा जलती हुई आग है। उसमें गिरा हुआ कभी उठता नहीं।

२. Desire leads to disappointment while faith brings a light of hope in life.

इच्छाएं व कामनाएं मनुष्य को निराशा की ओर ले जाती हैं और श्रद्धा जीवन में आशा का प्रकाश लाती है।

३. Desiring is devilish, desirelessness is divine.

वासना या इच्छा शैतानियत है और इच्छामुक्ति दिव्यता है।

मनुष्य की एक इच्छा की पूर्ति के पश्चात् दूसरी इच्छा का जन्म होता है। यह प्रक्रिया चलती रहती है। ऋषिभाषित सूत्र में कहा है-

"इच्छा बहुविहा लोए, जाए बद्धो किलिस्सति।
तम्हा इच्छामणिच्छाए, जिणित्तो सुहमेधति।।"

संसार में इच्छाएँ असंख्य हैं और अनेक प्रकार की है। उनसे बंधकर जीव क्लेश-दुःख पाता है। इच्छा को अनिच्छा से जीत लिया जावे तो मनुष्य सुख पा सकता है।

इच्छा को अनिच्छा से कैसे जीता जा सकता है? भगवान महावीर ने बहुत सरल उत्तर दिया- "इच्छा लोभं न सेविज्जा।।"

अर्थात् इच्छा और लोभ का सेवन नहीं करना चाहिए।

लोभ मुक्ति पथ का अवरोधक है। स्थानांग सूत्र में कहा है-

मुत्तिमग्गस्स पलिमंथू।।" 6.3

उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है-

"लोभाविले आययई अदत्तं।।" 32.29

व्यक्ति लोभ से कलुषित होकर चोरी करता है।

लोभ के संबंध में अंग्रेजी भाषा में कहा गया है-

१. **Greed is the root of all sins.**

लोभ सभी पापों का मूल है।

२. **Greed is the cause of many disasters.**

लुब्धता अनेक विपत्तियों की कारण है।

३. **Greedy people can neither sleep soundly nor eat heartly.**

लोभी आदमी को आहार व निद्रा नसीब नहीं होती है।

लोभ लौकिक दृष्टि से भी बहुत हानिप्रद है। उसका कोई कुटुम्बी नहीं होता है। कितना सुन्दर कहा गया है-

"माखी बैठी शहद पर पंख गये लिपटाय।
हाथ मले और सिर धुने लालच बुरी बलाय।।"

लोभ से ऐहिक और पारलौकिक दोनों प्रकार का भय होता है-

"लोहाओ दुहओ भयं" उत्तराध्ययन सूत्र 9.54

कबीर ने उत्तम ढंग से कहा है-

"कबीरा औंधी खोपड़ी, कबहु धापै नांय।
तीन लोक की संपदा , जो आवे घर मांय।।"

मन मरा माया मरी, मर मर गया शरीर।
आशा तृष्णा ना मरी, कह गये दास कबीर।।"

संतोष के अभाव में तृष्णा बढ़ती है तथा तृष्णा बढ़ने से आदमी लोभी बनता है। अतः लोभ का सर्वथा त्याग कर संतोषवृत्ति को अपनाने का प्रयास करना आवश्यक है।

अब प्रश्न पैदा होता है कि लोभ को कैसे जीता जा सकता है। दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

"............लोहं संतोसओ जिणे।"

लोभ को संतोष से जीता जा सकता है।

लोभ को जीतने पर संतोष की प्राप्ति होती है। भगवान महावीर ने फरमाया-

"लोभ विजएणं संतोसं जणयइ लोभ वेयणिज्जं।

कम्मं न बंधइ पुव्वाबद्धं च निज्जरेई।। –उत्तरा. 29.70

हे भगवन्! लोभ को जीत लेने से क्या लाभ होता है? भगवान ने उत्तर दिया- लोभ को जीत लेने से संतोष की प्राप्ति होती है, लोभ से होने वाले नूतन कर्म का बंध न होकर पूर्व के कर्म नष्ट हो जाते हैं। परन्तु लोभी आत्मा को संतोष होना कठिन है। लोभी को लाभ के पश्चात् भी संतोष नहीं होता है। उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर ने अपने अंतिम उपदेश में कहा है-

''कसिणं पि जो इमं लोयं पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणापि से न संतुस्से, इइ दुप्पुरए इमे आया।।'' उत्तरा. 8.16

इसका संक्षिप्त भावार्थ यह है कि किसी एक व्यक्ति को यदि धन-धान्य से भरपूर समग्र विश्व भी दे दिया जाय, तो भी उससे उसकी संतुष्टि नहीं होती। इतनी दुष्पूर है लोभाभिभूत आत्मा।

''संतोषामृततृप्तानां, यत् सुखं शांतचेतसाम्।
कुतस्तद् धनलुब्धाना, मितस्ततस्धावताम्।।''

संतोषरूपी अमृत से तृप्त, शान्त हृदय पुरुषों के पास जो सुख है वह इधर उधर भटकते धन-लोलुप के पास नहीं होता है। संतोष मानव जीवन का अमूल्य हीरा है। सच्चा सुख संग्रह में नहीं है, वरन् त्याग में है-

"Contentment is better than wealth."

संतोषवृत्ति सम्पत्ति से अधिक श्रेष्ठ है।

सुभाषितकार कहते हैं-

''न च संतोषात्परं सुखं न च तृष्णायाः परो व्याधिः''

अर्थात् संतोष जैसा कोई सुख नहीं और तृष्णा जैसी कोई व्याधि नहीं। संतोष प्राप्त होने पर विश्व का सारा धन और सम्पत्ति धूल के समान प्रतीत होती है। कवि के शब्दों में-

''गोधन गजधन, रतनधन, कंचन खान सुखान।
जब आवे संतोषधन, सब धन धूरि समान।।''

पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि शाश्वत सुख को प्राप्त करना हो और मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर होना हो तो लोभ (लालच) का सर्वथा त्याग करें और संतोषवृत्ति को अपनाएँ।

-पूर्व न्यायाधिपति राजस्थान उच्च न्यायालय एवं
संरक्षक अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
चन्दन, बी-२ रोड़, पावटा, जोधपुर (राज.)

धर्मक्रियाएँ हों निर्दोष

श्री सज्जनसिंह मेहता 'साथी'

धम्मो ताणं, धम्मो सरणं, धम्मो गइ पइट्ठा य।
धम्मेण सुयरिएण य गम्मइ अजरामरं ठाणं।।

धर्म तिराने वाला है, धर्म शरण रूप है, धर्म ही गति है तथा धर्म ही आधार है। धर्म की सम्यक् आराधना करने से आत्मा को अजर-अमर पद की प्राप्ति होती है।

जैन धर्म का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है और आधार शिला ज्ञान, दर्शन, चारित्र हैं। 'तत्त्वार्थ सूत्र' के रचनाकार आचार्य वाचक उमास्वाति ने सूत्र का प्रारम्भ '**सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः**' से किया है।

ज्ञान दर्शन चारित्र की संक्षिप्त व्याख्या के लिए उत्तराध्ययन सूत्र अध्याय २८ गाथा ३५ द्रष्टव्य है-

नाणेण जाणइ भावे, दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ।।

अर्थात् ज्ञान से तत्त्वों को जाना जाता है, दर्शन से उन पर यथार्थ श्रद्धा की जाती है, चारित्र से कर्म बंध का निरोध होता है और तप से शुद्धि होती है। तप चारित्र का अंग है।

सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन एवं सम्यक्चारित्र तीनों मिलकर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं अर्थात् तीनों सम्मिलित रूप से मोक्ष के साधन हैं। चारित्र के पूर्व सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान आवश्यक हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के अध्याय २८ की गाथा ३० से यह स्पष्ट है-

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा।

अर्थात् सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान सम्यग् नहीं होता, सम्यग् ज्ञान के बिना सम्यक् चारित्र नहीं होता, चारित्र गुण के बिना मुक्ति नहीं होती और मोक्ष के बिना निर्वाण नहीं होता। दशवैकालिक सूत्र में कहा है-

पढमं नाणं तओ दया।

अर्थात् प्रथम ज्ञान प्राप्त करो, फिर दया करो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि चारित्र-पालन के पूर्व सम्यक् ज्ञान आवश्यक है।

इस निबन्ध का प्रमुख उद्देश्य उपासना विशुद्धि है, जिसका सीधा संबंध तो चारित्र से है, परन्तु चारित्र के पूर्व सम्यग्ज्ञान एवं सम्यग्दर्शन आवश्यक है। चारित्र के दो भेद हैं- १. सकल चारित्र और २. देश चारित्र अथवा अनगार चारित्र और आगार चारित्र।

चरित्तधम्मे दुविहे पण्णत्ते-आगार चरित्त धम्मे चेव अणगार चरित्त धम्मे चेव।–*स्थानांग सूत्र, स्थान 2 उ.1*

अर्थात् चारित्र धर्म दो प्रकार का है- १. आगार चारित्र धर्म अथवा गृहस्थ धर्म और २.अनगार चारित्र धर्म अथवा मुनि धर्म। तत्त्वार्थ सूत्र में भी कहा है-अगार्यनगारश्च (अ.७सूत्र१४) अर्थात् व्रती दो प्रकार के हैं- १. आगारी और २. अनगार।

श्रावक धर्म, आगार धर्म, गृहस्थ धर्म, देश चारित्र, चरित्ता- चरित्त आदि शब्द समानार्थक हैं एवं अनगार धर्म, मुनि धर्म, सकल चारित्र आदि शब्द समानार्थक हैं। उपासनाविशुद्धि की दृष्टि से दोनों प्रकार के चारित्र का चिन्तन अपेक्षित है, किन्तु यहाँ श्रावक की उपासना विशुद्धि पर ही विचार किया जा रहा है।

गृहस्थ धर्म के उपासक-श्रावकों की तीन श्रेणियाँ बनाई जा सकती हैं- १. श्रोता श्रावक २. दर्शन श्रावक और ३. व्रतधारी श्रावक।

१. श्रोता श्रावक- जिसने व्रत ग्रहण नहीं किये हैं, सम्यक्त्व भी पूर्ण रूप से शुद्ध हो या न हो फिर भी बोलचाल की भाषा में उसे धर्म-श्रवण करने के कारण श्रावक कहा जा सकता है। ऐसे श्रावक भी सामायिक, दया, उपवास, नवकारसी आदि धार्मिक अनुष्ठान यदा-कदा करते हैं।

२. दर्शन श्रावक- चौथे गुणस्थान वाला सम्यग्दृष्टि जीव जिसने श्रावक के बारह व्रतों को स्वीकार तो नहीं किया, परन्तु धर्म पर, जिनवाणी पर जिसकी श्रद्धा निर्मल है, वह दर्शन श्रावक है।

ऐसा श्रावक भी सामायिक, नवकारसी, उपवास, दया, पौषध आदि धार्मिक अनुष्ठान अपनी शक्ति के अनुसार करता है, परन्तु अप्रत्याख्यानी के उदय के कारण श्रावक के व्रतों को ग्रहण करने का साहस नहीं करता है, व्रतों में उसकी पूर्ण श्रद्धा होती है।

३. व्रतधारी श्रावक- जो आत्मा अपनी क्षमता के अनुसार श्रावक के बारह व्रतों को अंश रूप से या पूर्ण रूप से ग्रहण करता है वह पंचम गुणस्थान का अधिकारी, व्रतधारी श्रावक कहलाता है। व्रतधारी श्रावक के पुनः दो भेद किये जा सकते हैं- १. सामान्य व्रतधारी श्रावक २. पडिमाधारी श्रावक।

मेरी चर्चा समुच्चय रूप से तीनों प्रकार के श्रावकों के लिए है। उपासना विशुद्धि के संदर्भ में मैं कुछ प्रमुख धार्मिक क्रियाओं के सम्यक् पालन के लिए लिखने का प्रयत्न करूंगा। श्रावकों द्वारा की जाने वाली धार्मिक क्रियाओं में, जानकारी के अभाव से या प्रमादवश कई प्रकार की विकृतियाँ प्रवेश करती

जा रही हैं। अतः इस संदर्भ में चिन्तन-नितान्त आवश्यक है।

प्रमुख धार्मिक क्रियाएँ

१. सामायिक- सामायिक के महत्त्व को जैन धर्म की सभी सम्प्रदायों ने निर्विवाद रूप से स्वीकार किया है। अतः मैं सर्वप्रथम सामायिक और उसकी शुद्धता पर कुछ पंक्तियाँ लिख रहा हूँ।

आत्मा का स्वभाव समभाव है और समभाव की साधना को सामायिक कहते हैं। निंदक-प्रशंसक पर, शत्रु-मित्र पर, लाभ-हानि में समभाव रखना, विषम से विषम परिस्थिति में भी विचलित नहीं होना सामायिक की साधना है।

'सर्वजीवेषु मैत्री साम, साम्नो, आयः लाभः सामायः स एव सामायिकम्।'

समस्त प्राणियों के प्रति मैत्री भाव 'साम' है, उस साम से जिस लाभ की प्राप्ति होती है, उसे सामायिक कहते हैं।

सम+आय अर्थात् जिस साधना द्वारा समता भाव की प्राप्ति हो उसे सामायिक कहते हैं।

सम+अयन। सम=अच्छा, अयन=आचरण। अर्थात् अच्छा आचरण करना। इस दृष्टि से ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र में प्रवृत्ति करना भी सामायिक है।

भगवती सूत्र में आत्मा को सामायिक कहा है-

'आया सामाइए, आय सामाइयस्स अट्ठे।'

अर्थात् आत्मा सामायिक है और आत्मा ही सामायिक का अर्थ है। सामायिक का फल है। अतः सामायिक निज आत्मा में रमण करने की प्रक्रिया है, साधन है।

सामायिक का महत्त्व

१. सामायिक मोक्ष का साधन है-

"जे के वि गया मोक्खं, जे वि य गच्छन्ति जे गमिस्संति। ते सव्वे सामाइयपभावेण मुणेयव्वं।"

अर्थात् पूर्व में जो मोक्ष गये हैं, वर्तमान में जो मोक्ष में जा रहे हैं और भविष्य में जो जायेंगे, वे सभी सामायिक के प्रभाव से ही ऐसा कर पाये हैं।

२. **दिवसे-दिवसे लक्खं देई, सुवण्णस्स खंडियं एगो।**
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स।।

अथवा

लाख खण्डी सोना तणी, लाख वर्ष दे दान।
इक सामायिक तुल्य नहीं, भाख्यो श्री भगवान।।

लाखों-करोड़ों का दान भी एक सामायिक की तुलना में कम है। अतः सामायिक का महत्त्व शब्दों में आंकना कठिन है। भगवान महावीर के शब्दों में

सम्राट् श्रेणिक की सम्पूर्ण सम्पत्ति पूनिया श्रावक की एक सामायिक क्रय करने की दलाली के लिए अपर्याप्त रही।

सामायिक की शुद्धता

त्याग की न्यूनाधिकता के आधार पर सामायिक के दो भेद हैं-

'आगार सामाइए चेव, अणगार सामाइए चेव।

-स्थानांग सूत्र, स्था. २-३०५

श्रावक की सामायिक एवं साधु की सामायिक। श्रावक मर्यादित काल के लिए सामायिक करता है, लेकिन साधु की सामायिक जीवन पर्यन्त की होती है। श्रावक की एक सामायिक ४८ मिनिट (दो घड़ी या एक मुहूर्त) की होती है। यद्यपि सामायिक के महत्त्व को जैन धर्म की सभी सम्प्रदायें स्वीकार करती हैं, परन्तु श्वेताम्बर स्थानकवासी (साधुमार्गी) परम्परा में इसका प्रचलन अधिक है।

मेरे विचार से सामायिक की शुद्धता एवं गुणवत्ता के संबंध में निम्न बिन्दुओं का चिन्तन आवश्यक है-

१. सामायिक के उपकरण- पोशाक, मुखवस्त्रिका, आसन, पूंजणी, माला, धार्मिक पुस्तकें आदि सामायिक के उपकरण हैं तथा सामायिक के समय पहने जाने वाले वस्त्र भी सामायिक के उपकरणों के अंग हैं। अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं का इस ओर कोई विशेष चिन्तन नहीं रहता। श्रावकों की पोशाक के लिए मेरा सुझाव है कि सामायिक के समय श्वेत, इक लंगी धोती या चोलपट्टे का प्रयोग करें; पेंट, पायजामा आदि का नहीं। जो श्रावक दुलंगी धोती धारण करते हैं, उन्हें सामायिक एवं अन्य धार्मिक क्रियाएँ करते समय धोती की एक लांग खोल देनी चाहिए।[1] ऐसी प्राचीन परम्परा है और लोक व्यवहार में ऐसा उचित भी है।[2] पुरुष वर्ग ऊपर के कोट कमीज, बनियान आदि खोलते हैं, अतः उनके लिए लिखने की आवश्यकता नहीं है। महिलाएँ यदि श्वेत वस्त्र धारण न कर सकें तो सादे वस्त्र का उपयोग करें। सामायिक के समय पैरों के मौजे भी उतारना आवश्यक है। मौजे उपानह की श्रेणि में है।

१. आसन-सामायिक के लिए आसन श्वेत होना सर्वोत्तम है, वह सूती या ऊनी हो सकता है। रंगीन आसनों का प्रचलन अधिक है, परन्तु रंगीन आसन की तुलना में श्वेत आसन में सूक्ष्म जीवों को सरलता से देखकर रक्षा की जा सकती है। अतः श्वेत रंग के आसन का प्रयोग करना उपयुक्त है।

२. मुखवस्त्रिका- मुखवस्त्रिका का निर्धारित नाप है। मुखवस्त्रिका स्वयं की

---

१. द्रष्टव्य- उपासकदशांग और उसका श्रावकाचार, पृष्ठ ५७

२. वही पृ. १८३-१८४

अंगुलियों से इक्कीस अंगुल लम्बी एवं सोलह अंगुल चौड़ी श्वेत वस्त्र की बनी होनी चाहिये, जिसके आठ पुट बनाकर, डोरा डालकर मुंह पर बांधना चाहिए। ऐसी आठ पुट वाली मुखवस्त्रिका ऊपर से आठ अंगुल लम्बी एवं पाँच अंगुल चौड़ी होनी चाहिए। इस ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। क्योंकि सामान्यतया मुखवस्त्रिकाएँ विविध नाप की देखी जाती हैं।

कभी-कभी यह भी देखा जाता है कि वक्तागण सामायिक में बोलते समय मुखवस्त्रिका को मुंह से हटाकर हाथ में लेकर बोलते हैं। यह सर्वथा अनुचित है। मुखवस्त्रिका मुख से हटाकर बोलना सावद्य क्रिया है। अतः सम्पूर्ण सामायिक काल तक मुखवस्त्रिका मुंह पर बंधी रहनी चाहिए, फिर बोलते समय तो मुखवस्त्रिका का मुंह पर बंधी रहना अनिवार्य है।

३. पूंजणी- यह भी सामायिक का अनिवार्य उपकरण है। पूंजणी जीव रक्षा का साधन है। अतः सामायिक में जिस प्रकार मुखवस्त्रिका आवश्यक है वैसे ही पूंजणी भी आवश्यक है। आसन बिछाने से पूर्व पूंजणी से स्थान परिमार्जन कर आसन बिछाना चाहिए। सामायिक में अकारण गमनागमन नहीं करना चाहिए। विशेष कारण से यदि गमनागमन करना पड़े तो दिन में पूंजणी साथ में रखते हुए, भूमि को अच्छी तरह देखते हुए गमनागमन किया जावे एवं रात्रि को डांडिये (ओगा) द्वारा पूंजते हुए ही गमनागमन किया जावे। सामायिक में रात्रि में बिना पूंजे एक कदम भी चलना उचित नहीं है, क्योंकि रात्रि को दिखाई नहीं देता है, अतः जीवों की रक्षा नहीं हो सकती है। दिवस संबंधी प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर परस्पर क्षमायाचना हेतु भाई-बहिन रात्रि में बिना भूमि-परिमार्जन के ही गमनागमन करते हैं, यह अनुचित है। सामायिक में रात्रि में बिना पूंजे एक कदम भी नहीं चलना चाहिए। क्षमायाचना करना अच्छी बात है, परन्तु सामायिक के नियमों का पालन, जीव रक्षा, प्रमाद का त्याग आदि भी नितान्त आवश्यक है। अतः क्षमायाचना के लिए गमनागमन करना पड़े तो भूमि को पूंजते हुए ही चलें। धर्मस्थान पर डांडियों (ओगों) की व्यवस्था अनिवार्य है।

सामायिक के समय प्रयुक्त वस्त्र एवं सामायिक के सभी उपकरण श्वेत, सादे, अल्पमूल्य वाले एवं स्वच्छ होने चाहिए। श्रावक-श्राविकाओं के घरों में वस्त्रों की पेटियां भरी रहती हैं, परन्तु सामायिक के उपकरण मुखवस्त्रिका, पूंजणी, आसन आदि व्यवस्थित नहीं रहते हैं। कई भाई-बहिनें सामायिक करते समय पास में पूंजणी नहीं रखते। यह उचित नहीं है। ***(क्रमशः)***

-झालामन्ना चौराहा, बड़ी सादड़ी (राज.)

स्थानकवासी होने का अर्थ

श्रमणसंघीय परामर्शदाता श्री ज्ञानमुनि जी म.सा.

'स्थानकवासी' शब्द का प्रयोग करते हुए भी हम उसके महत्त्व से अनभिज्ञ हैं। प्रस्तुत लेख में स्थानकवासी शब्द की सुन्दर विवेचना की गई है, जिसे पढ़कर सच्चे स्थानकवासी बनने की प्रेरणा मिलती है। यह प्राचीन लेख/समाधान हमें स्थानकवासी सम्प्रदाय के हितचिन्तक मनीषी विद्वान् श्री लालचन्द्र जी नाहटा 'तरुण' केकड़ी ने प्रेषित किया है। नाहटा जी ने लेख के अन्त में अपनी टिप्पणी भी दी है। *-सम्पादक*

'स्थानकवासी' शब्द का अर्थ क्या है? व्याकरण की दृष्टि से 'स्था' धातु से 'अनट्' प्रत्यय हो कर स्थान शब्द बनता है। फिर स्वार्थ में 'क' प्रत्यय कर लेने पर स्थानक रूप हो जाता है। वास शब्द से शीलार्थ में 'णित्' प्रत्यय करके 'वासी' शब्द बनता है। स्थानक और वासी दोनों शब्दों को मिलाकर 'स्थानकवासी' शब्द सिद्ध हो जाता है। स्थान का अर्थ है- ठहरने की जगह और वासी शब्द का अर्थ है "निवास करने वाला"। स्थानक[1] में निवास करने वाला व्यक्ति स्थानकवासी कहलाता है।

स्थानक द्रव्य और भाव इन भेदों से से दो प्रकार का होता है। द्रव्यस्थानक शब्द अमुक प्रकार के क्षेत्र, भूमि या निवास करने की जगह आदि अर्थों का बोधक है। स्थानक शब्द द्रव्य दृष्टि से सामान्यतया इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त होता है, किन्तु जैन परम्परा में यह शब्द एक विशेष अर्थ में रूढ हो गया है। स्थानक जैन जगत का अपना एक पारिभाषिक शब्द बन गया है और उसका प्रयोग उस स्थान के लिए किया जाता है जिसमें माटी, पानी, तृण, घास आदि सचित्त पदार्थ नहीं हैं, जो स्त्री, पशु और नपुंसक से रहित है, जो साधु-मुनिराजों के निमित्त तैयार नहीं किया गया है, अर्थात् साधु को निमित्त बनाकर जिसमें किसी भी प्रकार की आरंभ, समारंभ आदि क्रियाएँ नहीं की गई हैं, चाहे वह किसी व्यक्ति- विशेष का है, या किसी समाज का है, ऐसे शान्त, एकान्त तथा शुद्ध स्थान को स्थानक कहा जाता है। अथवा उस धर्म-स्थान का नाम स्थानक है, जिसका श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन परम्परा को मानने वाले गृहस्थ लोगों ने अपनी आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निर्माण किया है। अथवा समय-समय पर संयमशील जैन-मुनि जिस स्थान में निवास करते हैं, धर्म प्रचार करने के लिए अपनी मर्यादा के अनुसार आकर ठहरते हैं वह स्थान स्थानक कहलाता है।

स्थानक शब्द की उक्त अर्थ-विचारणा से यह स्पष्ट हो जाता है कि

१. स्थीयते अस्मिन्निति स्थानम्, स्थानमेवेति स्थानकम्, स्थानके वसति, तच्छील इति स्थानकवासी

स्थानक शब्द का प्रयोग दो स्थानों के लिए किया जा सकता है, एक जो सामान्य मकान है, जो धर्म-स्थान के रूप में नहीं बनाया गया है, जो किसी एक व्यक्ति का है और जिसमें साधु मुनिराज ठहरते हैं, धर्मोपदेश करते हैं तथा दूसरा वह स्थान जिसका 'धर्म-स्थान' के रूप में समाज या एक व्यक्ति द्वारा निर्माण हुआ है। इस प्रकार स्थानक शब्द दो अर्थों का बोधक है, किन्तु आजकल इसका अधिक प्रयोग श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के एक धार्मिक स्थान के लिए ही किया जाता है।

स्थानक को उपाश्रय भी कहा जाता है।[२] स्थूल दृष्टि से देखा जाए तो ये दोनों पर्यायवाची शब्द हैं, दोनों एक ही अर्थ के परिचायक हैं। मूर्ति-पूजा को आगम-विहित न मानने वाली स्थानकवासी परम्परा और उसे आगमविहित मानने वाली श्वेताम्बर मन्दिरमार्गी परम्परा दोनों में स्थानक और उपाश्रय इन शब्दों का व्यवहार चल सकता है। इन दोनों शब्दों में अर्थगत कोई विशेष भेद न होने पर भी सम्प्रदाय-भेद से एक ही भाव के वाचक दोनों शब्द आज बंट गए हैं। मूर्ति-पूजा में विश्वास न रखने वाली स्थानकवासी परम्परा में प्रायः स्थानक शब्द प्रसिद्ध है, और मूर्ति-पूजा में विश्वास रखने वाली श्वेताम्बर या पीताम्बर मन्दिरमार्गी परम्परा में उपाश्रय शब्द को अपना लिया गया है। वैसे स्थानकवासी परम्परा में भी उपाश्रय शब्द का आदर पाया जाता है, किन्तु अन्तिम शताब्दियों में इस परम्परा में स्थानक शब्द का ही अधिक प्रयोग मिलता है।

स्थानक का दूसरा भेद भावस्थानक है। आत्मा की स्वाभाविक गुण-परिणति या आत्मा का निज स्वरूप में रमण करना भावस्थान कहलाता है। जब आत्मा क्रोध, मान, माया और लोभ आदि विकारों को जीवन से अलग कर देता है, क्षमा, मृदुता, सरलता और निर्लोभता आदि आत्म-गुणों में रमण करता है; भौतिक पदार्थों को छोड़ कर ज्ञान, दर्शन और चारित्र में अपने को लगा देता है उस समय वह भावस्थानक को प्राप्त कर लेता है। वस्तुतः आत्मा का विभाव को छोड़ कर निज स्वरूप में रमण करना भावस्थानक है।

अध्यात्म जीवन में द्रव्य विशुद्धि और भाव शुद्धि दोनों की नितान्त आवश्यकता होती है। द्रव्यशुद्धि का भी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह भाव शुद्धि में सहायता प्रदान करती है। इसलिए जैनागमों ने साधुओं के लिए स्थान-स्थान पर एकान्त और शान्त स्थान में रहने का तथा कामविवर्द्धक स्थान के परित्याग करने का बल-पूर्वक आदेश दिया है। वह स्थान जहां संयम

२. उपाश्रीयते संसेव्यते संयमात्मपालनायेत्युपाश्रयः (स्थानांगवृत्ति)

को बाधा पहुंचती हो, अन्तर्जगत के दूषित और अस्वस्थ होने की संभावना रहती हो उसको त्याग देने की आज्ञा प्रदान की है। इस प्रकार जहां द्रव्य-शुद्धि के लिए जैनागमों में जोर दिया है, वहां इससे अधिक भाव शुद्धि पर बल दिया गया है। भाव-शुद्धि का सर्वोपरि स्थान है। भाव शुद्धि के बिना द्रव्य शुद्धि का कोई महत्त्व नहीं रहता। वस्तुतः भावशुद्धि से ही द्रव्यशुद्धि में प्राण आता है। अन्यथा वह मृत कलेवर की भांति निस्सार और निष्प्राण बन जाती है। द्रव्य शुद्धि केवल जीवन के बाह्य वातावरण को शुद्ध करती है, किन्तु आत्मसमाधि और संयम की निर्मलता की प्राप्ति के लिए भावशुद्धि अपेक्षित होती है। इसलिए मोक्षाभिलाषी साधक को द्रव्य शुद्धि से आगे बढ़कर भावशुद्धि को अपनाने की आवश्यकता होती है। भावशुद्धि का ही दूसरा नाम भावस्थानक है। भावस्थानक आत्मा की संयम-पूर्ण शुद्ध अवस्था का ही नामान्तर है।

जैनागमों ने भाव ५ बतलाए हैं- १. औपशमिक २. क्षायिक, ३. क्षायोपशमिक, ४. औदयिक और ५. पारिणामिक। जो उपशम से पैदा हो, उसे औपशमिक भाव कहते हैं। उपशम एक प्रकार की आत्मा की शुद्धि होती है। जो सत्तागत कर्म का उदय रुक जाने पर वैसे ही प्रकट होती है जैसे मल के नीचे बैठ जाने पर जल में स्वच्छता प्रकट होती है। क्षय से पैदा होने वाले भाव का नाम क्षायिक है। यह आत्मा की वह परमविशुद्धि है जो कर्म का संबंध सर्वथा छूट जाने पर प्रकट होती है। जैसे सर्वथा मल के निकाल देने पर जल स्वच्छ हो जाता है, ऐसे ही क्षायिक भावों में आत्मा सर्वथा स्वच्छ हो जाती है। क्षय और उपशम दोनों से पैदा होने वाला भाव क्षायोपशमिक कहलाता है। क्षयोपशम भी एक प्रकार की आत्मिक शुद्धि ही है। यह कर्म के एक अंश का उदय सर्वथा रुक जाने पर और दूसरे अंश का प्रदेशोदय द्वारा क्षय होते रहने पर प्रकट होती है। यह विशुद्धि वैसी ही मिश्रित है जैसे धोने से मादक शक्ति के कुछ क्षीण हो जाने और कुछ रह जाने पर कोदों (सांवाँ-की जाति का एक मोटा अन्न) की शुद्धि होती है। उदय से होने वाले भाव को औदयिक कहते हैं। उदय एक प्रकार का आत्मिक कालुष्य-मालिन्य है जो कर्म के विपाकानुभव से वैसे ही पैदा होता है, जैसे मल के मिल जाने पर जल में मालिन्य प्रकट हो जाता है। पारिणामिक भाव द्रव्य का वह परिणाम है जो सिर्फ द्रव्य के अस्तित्व से आप ही आप प्रकट हुआ करता है। अर्थात् किसी भी द्रव्य का स्वाभाविक स्वरूप-परिणमन ही पारिणामिक भाव कहलाता है। जीवत्व, चैतन्य, भव्यत्व-मुक्ति की योग्यता, अभव्यत्व-मुक्ति की अयोग्यता ये तीनों भाव पारिणामिक हैं, स्वाभाविक हैं। ये तीनों न कर्मों के उदय से, न उपशम से, न क्षय से और न क्षयोपशम से पैदा

होते हैं, किन्तु अनादिसिद्ध आत्म-द्रव्य के अस्तित्व से ही सिद्ध हैं, इसी से वे पारिणामिक हैं।

इन पांच भावस्थानों में क्षायिक भाव ही मुख्य भावस्थान है। यह भावस्थान कर्म संबंध के सर्वथा क्षय हो जाने के अनन्तर ही प्राप्त होता है। कर्म-संबंध का नाश करने के लिए संयम की परिपालना अत्यावश्यक है। संयम का पालन करने के लिए चारित्र को अपनाना होता है। चारित्र पांच हैं- १. सामायिक २. छेदोपस्थापनीय, ३. परिहारविशुद्धि ४. सूक्ष्मसंपराय और ५. यथाख्यात। समभाव में स्थित रहने के लिए सावद्य प्रवृत्तियों का त्याग करना सामायिक है। प्रथम दीक्षा लेने के बाद विशिष्ट श्रुत का अभ्यास कर चुकने पर विशेष शुद्धि के निमित्त जो जीवन पर्यन्त पुनः बड़ी दीक्षा ली जाती है या प्रथम ली हुई दीक्षा सदोष हो जाने पर उसका छेद करके फिर नए सिरे से जो दीक्षा का आरोहण किया जाता है वह छेदोपस्थापनीय चारित्र होता है। जिसमें विशेष प्रकार के तपः-प्रधान आचार का पालन किया जाता है, उसे परिहार विशुद्धि चारित्र कहते हैं। जिसमें क्रोध आदि कषायों का तो उदय नहीं होता, सिर्फ लोभ का अंश अति सूक्ष्म रूप से शेष रहता है वह सूक्ष्म-संपराय चारित्र कहलाता है तथा जिसमें किसी भी कषाय का उदय नहीं होने पाता वह यथाख्यात (वीतराग) चारित्र कहा जाता है।

भावस्थान को प्राप्त करने वाला साधक उक्त चारित्र का पालन करता है। ये चारित्र भावस्थान को प्राप्त करने के साधन है। इन साधनों द्वारा भावस्थान की प्राप्ति होती है। इन साधनों पर "अन्नं वै प्राणाः" इस सिद्धान्त के अनुसार यदि साध्य का आरोप कर लिया जाए तो इनको भी भावस्थान कह सकते हैं। साधन में साध्य का आरोप कर लेने पर सामायिक आदि संयम-स्थान भी भावस्थान के नाम से व्यवहृत किए जा सकते हैं। सामायिक आदि अनुष्ठानों में संलग्न आत्मा परभाव को छोड़ कर निजस्वभाव में अवस्थित होता है। पुद्गलानन्दी न रह कर आत्मानन्दी बन जाता है। इसलिए भावस्थान का "आत्मा का विभाव को छोड़कर निजस्वरूप में प्रतिष्ठित होना" यह अर्थ भी फलित हो जाता है। इस प्रकार भावस्थानक के दो अर्थ प्रमाणित होते हैं- १. आत्मस्वरूप तथा २. आत्मस्वरूप की प्राप्ति में साधन-भूत सामायिक आदि चारित्र।

स्थानक शब्द की द्रव्य और भाव गत अर्थविचारणा के अनन्तर यह स्पष्ट हो जाता है कि द्रव्य स्थानक में वास करने वाला द्रव्य स्थानकवासी और भाव स्थानक में वास करने वाला भावस्थानकवासी कहलाता है। **स्थानके**

द्रव्यस्थानके कस्यांचित् वसत्यां वसति तच्छील इति द्रव्यस्थानकवासी, तथा भावस्थानके भावसंयमादिरूपे सम्यक्-चारित्रे वसति तच्छीलः, भावस्थानकवासी। इस प्रकार गुणनिष्पन्न यौगिक व्युत्पत्ति के द्वारा स्थानकवासी के दोनों रूपों की स्पष्टता और प्रामाणिकता भलीभांति सुनिश्चित हो जाती है। यह सत्य है कि शाब्दिक व्युत्पत्ति के आधार पर व्यक्ति चाहे जैन हो या अजैन, द्रव्य और भाव स्थानक में वास करने से स्थानकवासी कहला सकता है। स्थानकवासी शब्द की भावना से भावित प्रत्येक व्यक्ति स्थानकवासी पद से व्यवहृत किया जा सकता है। मूर्ति-पूजा में विश्वास न रखने वाला श्वेताम्बर जैन समाज ही आज स्थानकवासी शब्द द्वारा समझा व माना जाता है।

स्थानकवासी शब्द का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। इस की परिधि में संयम के महापथ पर बढ़ने वाले, आत्मस्वरूप को प्राप्त करने के लिए कर्मसेना के साथ युद्ध करने वाले सभी संयमी, साधु, मुनिराज और आत्मस्वरूप को प्राप्त करने वाले केवलज्ञानी, सिद्ध, बुद्ध सभी जीव आ जाते हैं। मोक्ष स्थान को प्राप्त करने की अभिलाषा रखने वाले साधक तो विशुद्ध भाव से सामायिक आदि चारित्र रूप भावस्थान में निवास करने के कारण तथा भावस्थान (संयम) के पोषक निर्दोष स्थानक, उपाश्रय या वसति आदि में वास करने से स्थानकवासी कहलाते ही हैं, किन्तु लोक के अग्रभाग में विराजमान सिद्ध भगवान भी स्थानकवासी कहे व माने जा सकते हैं। इसी प्रकार सर्वोत्कृष्ट कैवल्य-विभूति द्वारा प्राप्त, परम-पुनीत जीवन-मुक्त स्थान में निवास करने वाले तीर्थंकर भगवान और अन्य केवली भी स्थानकवासी प्रमाणित हो जाते हैं, क्योंकि ये यब आत्माएँ अपने भावस्थान-ज्ञान, दर्शन आदि आत्मस्वरूप में विराजमान रहती हैं। इनका भावस्थानक में होना ही इनको स्थानकवासी प्रमाणित कर देता है। इसके अतिरिक्त यह भी समझ लेना चाहिए कि **प्रत्येक मोक्षाभिलाषी साधक को सर्वप्रथम स्थानकवासी बनना ही पड़ता है। स्थानकवासी बनकर ही वह मोक्ष मंजिल को प्राप्त करने में सफल मनोरथ हो सकता है। स्थानकवासी बने बिना मोक्ष महालय हाथ नहीं आ सकता है । कारण स्पष्ट है, जब तक यह आत्मा संयम रूप भावस्थान में वास करता हुआ अपने वास्तविक स्वरूप को उपलब्ध नहीं होता तब तक मोक्ष प्राप्त होना कठिन ही नहीं, बल्कि सर्वथा असंभव है। अतः प्रत्येक साधक को सबसे पहले स्थानकवासी बनना होता है। उसके अनन्तर ही उसे सच्चिदानन्द की अवस्था मिल सकती है।**

स्थानकवासी शब्द का प्रयोग केवल जैन-साधुओं के लिए ही नहीं होता, बल्कि स्थानकवासी परम्परा को मानने वाले या देश-संयम रूप भावस्थान

में वास करने वाले गृहस्थ वर्ग पर भी लागू होता है। जैन परम्परा में श्वेताम्बर शब्द से जैसे श्वेताम्बर साधु और गृहस्थ दोनों का बोध होता है तथा दिगम्बर शब्द जैसे दिगम्बर साधु और गृहस्थ इन दोनों का परिचायक है वैसे ही स्थानकवासी शब्द स्थानकवासी साधु और गृहस्थ दोनों का संसूचक है। दूसरे शब्दों में स्थानकवासी शब्द से त्यागी वर्ग और गृहस्थ वर्ग दोनों का ग्रहण किया जाता है।

श्री लालचन्द जी नाहटा की टिप्पणी–

जैन धर्म का मूल सिद्धान्त है कि जब तक आत्मा पर-पदार्थों को अपना मानता है, उन पर राग रखता है, जीव अजीव के भेद विज्ञान को नहीं समझता है, तब तक सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता है। पर-पदार्थों यथा हाट, हवेली, चांदी, सोना, घर परिवार, मन्दिर मूर्ति यहां तक कि अपने स्वयं के शरीर पर भी राग भाव रखता है, इनका वंदन पूजन करता है, इनसे अपनी कल्याण कामना करता है, तब तक वह मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ ही नहीं सकता। भगवान ने स्वयं ठाणांग सूत्र में फरमाया है कि "अजीव को जीव समझे तो मिथ्यात्व' अजीव को जीव समझना मिथ्यात्व है, तो उसे जीवों में भी शिरोमणि 'भगवान' मानना क्या होगा? सूत्रकृतांग में भी अजीव में जीव बुद्धि रखने वालों को अनार्य और मृषावादी बताया है। साक्षात् भगवान पर रागांश मात्र रखना ही गौतमस्वामी की मुक्ति में, केवलज्ञान में बाधक हो गया तो उपर्युक्त पर पदार्थों का राग तो सम्यग्दर्शन में बाधक है ही। जब तक पर-पदार्थों का आलम्बन है तब तक मिथ्यात्व है। ध्यान, ध्याता, ध्येय की एकरूपता होगी, परावलम्बन टूटेगा अर्थात् जीव पूर्णतया स्थानकवासी बनेगा, तभी वह मुक्ति मार्ग में आगे बढ़ सकेगा। स्थानकवासी अर्थात् जैन धर्म का सनातन रूप स्थानकवासी अर्थात् जैन धर्म का अनादि अनंत असली रूप, स्थानकवासी अर्थात् जैन धर्म का मूल मौलिक सत्य स्वरूप। स्थानकवासी अर्थात् जिसमें भक्त और भगवान के बीच आत्मा और परमात्मा के बीच साधक और साध्य के बीच कोई दलाल नहीं, कोई कमीशन एजेण्ट नहीं, कोई बिचोलियां नहीं, कोई ठग नहीं, कोई वंचक नहीं। स्थानकवासी अर्थात् आत्मकल्याण का सही मार्ग, आत्मोद्धार की सहज स्वाभाविक प्रक्रिया, भगवान महावीर आदि अनंत तीर्थकरों द्वारा उपदिष्ट शुद्ध वीतराग मार्ग। हमें गर्व और गौरव होना चाहिये कि हम स्थानकवासी हैं।

–प्रेषक : लालचन्द नाहटा 'तरूण'

केकड़ी (अजमेर)

(क्रमशः ४)

दशवैकालिक सूत्र : नवम अध्ययन(२)

डॉ. अमृतलाल गांधी

तीसरे उद्देशक में पूज्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि जो सत्य, शील आदि आचार धर्म की शुद्ध पालना के लिए गुरु का विनय करता हुआ और सेवा में रहता हुआ गुरु वचनों को अंगीकार करता है एवं उपदेशानुसार कार्य करता है तथा गुरु भी आशातना नहीं करता, वह संसार में पूज्य होता है। जो साधु आहार का लोलुपी नहीं होता, संयम-यात्रा हेतु थोड़ा भोजन ग्रहण करता है, आवश्यक आहार नहीं मिलने पर खेद नहीं करता अथवा इच्छानुसार मिलने पर प्रशंसा नहीं करता, ऐसा यथालाभ संतुष्ट मुनि पूज्य है। भोजन की तरह जो साधु संथारा, शय्या स्थान, आहार-पानी में अल्प इच्छा वाला होता है, अधिक मिलने पर भी थोड़ा ही लेता है, यथालाभ संतुष्ट रहता है, मानसिक विकल्प नहीं करता, वह संतोष भाव में रमण करने वाला साधु लोक पूज्य होता है। संसार में वही साधु पूज्य है जो रसना पर विजय करता है, लोलुपी नहीं है। जादूगर की तरह संसार को खेल दिखा कर प्रभावित नहीं करता, कभी माया और चुगली नहीं करता तथा दीनभाव रहित रहता है। वह दूसरों से अपनी महिमा नहीं कराता और न स्वयं आत्म श्लाघा करता है। वेष से कोई साधु नहीं होता, साधुता का संबंध साधना के गुणों से है। अतः जो संयम के गुणों का पालन करता है वह साधु है और अवगुणों से असाधु कहलाता है। साधु का प्राणिमात्र से मैत्री भाव होता है। सबको आत्मवत् समझ कर न किसी से अहंकार करे और न ही किसी पर क्रोध करे, ऐसा साधु संसार में पूज्य होता है। अंत में कहा है कि गुरुदेव की सतत सेवा करने वाला मुनि जिनमत में निपुण और विनयाचार में कुशल होता है। वह पूर्वकृत कर्मरज को आत्मा से अलग कर अतुल सिद्धिगति को प्राप्त करता है।

इस अध्ययन के चतुर्थ उद्देशक में विनय-समाधि, श्रुत-समाधि, तप-समाधि और आचार-समाधि का वर्णन है। इसकी प्रथम गाथा के अनुसार सिद्धांत अनुकूल पंडित वे मुनि हैं जो जितेन्द्रिय होकर विनय में, श्रुत में, तप में और पंचविध आचार में सदा आत्मा को रमाए रखते हैं। आगे विनय समाधि के चार भेद बतलाये हैं- १. गुरु से हित शिक्षा सुनने की इच्छा करना २. उसे प्रेम से श्रवण कर ग्रहण करना। ३.फिर उस पर आचरण करना और ४.ज्ञान पाकर गर्व नहीं करना। श्रुत समाधि के चार लाभ बताये हैं-१. अध्ययन से ज्ञान होता है २.मन की एकाग्रता आती है ३.धर्म में स्थित होता है और ४.अन्य को भी स्थिर करता है। तप समाधि के संबंध में कहा गया है कि जो साधक सर्वदा विविध

गुण वाले तप में रत रहने वाला और पौद्गलिक प्रतिफल की इच्छा से रहित होकर केवल कर्मनिर्जरा का अभिलाषी होता है, वह साधु ही तप द्वारा संचित पुराने कर्मों का नाश करता है और तप समाधि में सदा प्रेम से लगा रहता है। अन्य शब्दों में जो फल की प्राप्ति की कामना के बिना तप करता है, उसके यह लोक और परलोक दोनों पवित्र होते हैं।

अन्त में आचार समाधि के संबंध में हिन्दी पद्य इस प्रकार हैं-

आचार समाधि के चार भेद, निश्चय होते हैं इस जग में।
इस लोक लाभ के हेतु नहीं, आचार शांति देता जग में।।
परलोक हेतु भी ना पाले, ना कीर्ति आदि के हित पाले।
जिनकथित हेतु से बाह्य कहीं, आचार समाधि नहीं पाले।।

इस पद्य में आचार समाधि के संबंध में निम्न चार बातें कही गई है-

१. इस लोक के निमित्त आचार का पालन नहीं करे।
२. परलोक के निमित्त आचार का पालन नहीं करे।
३. यशकीर्ति के निमित्त आचार का पालन नहीं करे।
४. जिनेन्द्र कथित हेतु के अतिरिक्त अन्य किसी उद्देश्य से आचार का पालन नहीं करे। अन्य शब्दों में, मुमुक्षु साधक के व्रत-नियमादि आचरण शास्त्रानुमोदित संवर-निर्जरा से आत्म शुद्धि हेतु ही किये जाने चाहिये।

अंतिम गाथा का भावार्थ है कि उपर्युक्त चारों समाधियों को जानकर शुद्ध भाव वाले साधकों का मात्र एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि जितना हो सके, इस अनित्य शरीर से अविनाशी सदा सुखदायी शिवपद की साधना कर ली जाय। यही चरम और परम इष्ट तत्त्व है।

-नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

एक पैगाम बहिनों के नाम

आर.प्रसन्नचन्द चोरड़िया

हमारे घरों में हर रोज हरी सब्जियां छीली जाती हैं, फल-फ्रूट भी उपयोग में लाये जाते हैं। लेकिन उनके छिलकों को कचरा बाल्टी में डाल देते हैं जो बिना उपयोग के बेकार चला जाता है। जीव जन्तु पैदा हो जाते हैं और अनजाने में बीमारी को बुलावा दे देते हैं।

अगर हम इन्हीं छिलकों को अलग से एक टोकरी या थैली में रखकर एकत्रित कर गायों के खाने के लिए सामने रख देते हैं तो उन हरे भरे छिलकों को गाय बहुत प्रेम से, रुचि के साथ खाती है और पेट भर लेती है, आपको आशीर्वाद देती है। इस तरह थोड़ा सा ध्यान, थोड़ी सी सावधानी रखते हैं तो आम के आम गुठलियों के दाम की कहावत को चरितार्थ कर सकते हैं। *–52, कालाथी पिल्ले स्ट्रीट, चेन्नई–79*

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

✯ श्री धर्मचन्द जैन

प्र.18 प्रथमोपशम और द्वितीयोपशम में क्या-क्या अन्तर है?

उत्तर–

	प्रथमोपशम	द्वितीयोपशम
१.प्राप्ति	इसकी प्राप्ति मिथ्यात्व के छूटनेपर होती है।	इसकी प्राप्ति क्षयोपशम समकित से उपशम श्रेणी करने पर होती है।
२.उपशमादि	इसमें अनन्तानुबंधी का क्षयोपशम (प्रदेशोदय) ही रहता है।	इसमें अनंतानुबंधी का उपशम एवं विसंयोजना(अस्थायी क्षय)होती है।
३.गुणस्थान	इसमें गुणस्थान चौथे से सातवाँ होता है।	प्राप्ति ७ से११ गुणस्थान में होती है, किन्तु गिरने की अपेक्षा चौथे गुण-स्थान तक संभव है।
४.कर्म की सत्ता	मोहनीय की २८ ही प्रकृतियों की सत्ता होती है।	इसमें २८ की अथवा अनंतानुबंधी चौक को छोड़कर २४ की सत्ता भी रह सकती है।
५.गति	इसे चारों गति के जीव प्राप्त कर सकते हैं।	मनुष्य गति का जीव (साधु) ही प्राप्त कर सकता है।
६. काल	इसमें जीव काल नहीं कर सकता।	इसमें जीव काल भी कर सकता है। काल करने पर अनुत्तर विमान में जाता है।
७.जीव के भेद	इसमें ७ नरक, ५सन्नी तिर्यंच, १५ कर्मभूमि, ७६ देवता इन सबके पर्याप्ता-१०३ भेद पाये जाते हैं।	इसे प्राप्त करने वाले १५ कर्म-भूमिज मनुष्य ही हैं। ये श्रेणी में काल करके ८१ देवता के अपर्याप्ता और ७६ देवता के पर्याप्ता-१७२ भेद को प्राप्त करते हैं।(चतुर्थ कर्मग्रन्थ के परिशिष्ट में अन्य विवक्षा भी उपलब्ध है)
८.स्थिति	इसकी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त है।	इसकी भी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त है।
९.अन्तर	इसका अन्तर जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग तथा उत्कृष्ट देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल है।	इसका अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन काल है।
१०.भव व आकर्ष	इसमें जघन्य एक भव तथा उत्कृष्ट तीन भव होते हैं । यह एक भव में	इसमें ज.१ भव उ. २ भव होते हैं। यह एक भव में ज. १ बार उ.२ बार

	ज. १ बार, उ. २ बार तथा अनेक भवों में ज. २ बार तथा उ.५ बार आती है।	तथा अनेक भवों में ज. २ बार उत्कृष्ट४ बार आती है।

प्र.19 क्षयोपशम समकित किसे कहते हैं?

उत्तर- अनन्तानुबंधी चौक और दर्शन त्रिक इन सात प्रकृतियों में से जब कुछ का क्षय, उपशम, क्षयोपशम (प्रदेशोदय) अथवा विसंयोजना होने तथा १ समकित मोहनीय का वेदन (विपाकोदय) होने पर जीवों का जो तत्त्व श्रद्धान रूप परिणाम होता है, उसे क्षयोपशम समकित कहते हैं ।

प्र.20 उपशम समकित और क्षयोपशम समकित में क्या-क्या अन्तर है?

उत्तर-

	उपशम समकित	क्षयोपशम समकित
१.	इसमें दर्शन त्रिक (मिथ्यात्व, मिश्र एवं समकित मोहनीय) के उपशम की नियमा है।	इसमें समकित मोहनीय के उदय की नियमा है। मिथ्यात्व व मिश्र मोह का क्षयोपशम, उपशम या क्षय हो सकता है।
२.	इसमें अनंतानुबंधी चौक का क्षयोपशम, उपशम या विसंयोजना, तीनों स्थितियाँ हो सकती हैं।	इसमें अनंतानुबंधी चौक का क्षयोपशम, उपशम और विसंयोजना के साथ क्षय भी हो सकता है।
३.	इसमें गुणस्थान ४ से ११ तक हो सकते हैं।	इसमें गुणस्थान ४ से ७ तक संभव हैं।
४.	इसकी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त है।	इसकी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की तथा उत्कृष्ट६६ सागरोपम झाझेरी है।
५.	इसमें जीव प्रथमोपशम में काल नहीं करता, किन्तु द्वितीयोपशम में काल कर सकता है तथा अनुत्तर वैमानिक देव बनता है।	इसमें काल करके जीव चारों गतियों में जा सकता है।
६.	इसमें मिथ्यात्व, मिश्र व समकित मोहनीय का प्रदेश व विपाक दोनों ही उदय नहीं रहता।	इसमें मिथ्यात्व व मिश्र मोह का प्रदेशोदय रहे अथवा न भी रहे, किन्तु समकित मोहनीय का प्रदेश व विपाक दोनों उदय नियमा रहेंगे।
७.	यह क्षायिक समकित के समान निर्मल है, किन्तु अल्पकालीन होती है।	इसमें चल, मल, अगाढ़ दोष रह सकते हैं। यह क्षायिक समकित पाने, श्रेणी करने तथा यथाख्यात चारित्र पाने में बाधक बनती है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

महावीराष्टक स्तोत्र

श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'

चेतन अचेतन ज्ञात होकर, मुकुर सम जिनके सदा,
ध्रौव्य व्यय उत्पाद अवस्था, युक्त झलकें सर्वदा।
जगत् साक्षी मार्ग वे, रवि सम प्रकट करते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।१।।

युग नयन सरसिज लालिमा, स्पन्दन रहित भी व्यक्त है,
जन जन को करते बाह्य अन्तर क्रोध क्षय स्थिति प्रकट है।
स्पष्ट शांति युक्त मुद्रा, अति विमल धरते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।२।।

नत शीष इन्द्रों के मुकुट, मणियों की आभा जो धरें,
शोभित हुए युग पद कमल, तन धारियों के दुःख हरें।
जल सम भवाग्नि स्मरण से, भी शान्त वे करते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।३।।

जिनके अर्चन भाव से, दर्दुर हुआ प्रमुदित मना,
क्षणमात्र में पा स्वर्ग, गुण गण युक्त सुख निधि सुर बना।
आश्चर्य क्या यदि भक्त गण, सुख मोक्ष का वरते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।४।।

तप्त स्वर्ण सम कान्ति युत, तन रहित ज्ञान निधान हैं,
विचित्र एक अनेक, सिद्धारथ पुत्र भी श्रीमान हैं।
अज विगत भवराग भी, अद्भुत गति धरते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।५।।

जिनकी वाणी जाह्नवी, बहु नय कल्लोल से निर्मला,
सद्ज्ञान जल में स्नान से करती है हर जन का भला।
बुद्ध मनुज मराल उसमें, आज भी तरते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।६।।

दुर्निवार मदन सुभट, जिस जीत सारा जग लिया,
युवा अवस्था में ही उसको विजित निज बल से किया।
शिव राज्य नित्यानन्द में, जिनवर सदा रमते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।७।।

मोह महा व्याधि शमन, निःस्वार्थ वैद्य महान हैं,
कल्याण कर निष्काम बंधु, ज्ञात महिमावान हैं।
उत्तम गुणी उनकी शरण, भवभीत मुनि पड़ते रहें,
महावीर स्वामी नयन पथ गामी, मेरे बनते रहें।।८।।

भागेन्दु कृत महावीर अष्टक, स्तोत्र भक्ति भाव से,
जो पढ़ेगा या सुनेगा, 'दास' इसको चाव से।
सद्भावना से वह मनुज उत्तम गति को पायेगा,
अनुवाद यह पढ़ने से भी जीवन सफल हो जायेगा।।

-१२ सी.डी. आदर्शनगर, आजम बाग
लखनऊ-२२६००५

>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>>

जीवन का निर्माण करो

मोहन कोठारी 'विनर'

ज्ञान-ध्यान का संबल लेकर, जीवन का निर्माण करो तुम,
संस्कारों की सौरभ लेकर, जीवन का उत्थान करो तुम।
तुम भारत के भाग्य-विधाता, मात-पिता के आश पुंज हो,
नैतिकता के पथ पर चलकर, गौरवमय इतिहास रचो तुम।।1।।
बदहाली है आज फिजा में, हैरत का माहौल बना है,
फैशन की है धमा चौकड़ी, अनुशासन का सूर्य ढला है।
घोर तिमिर को दूर हटाकर, जीवन में प्रकाश करो तुम,
नैतिकता के पथ पर चलकर, गौरवमय इतिहास रचो तुम।।2।।
सूझबूझ का परिचय देकर, कुछ करने की ललक जगाओ,
उद्दण्डता से दूर रहो तुम, गुरु भक्ति आलोक जगाओ।
होना नहीं गुमराह डगर से, मर्यादा का भान रखो तुम,
नैतिकता के पथ पर चलकर, गौरवमय इतिहास रचो तुम।।3।।
नैतिकता का घोर अनादर, मानवता को भूल गये हैं,
राष्ट्र प्रेम नहीं आज दिलों में, भौतिकता में झूल गये हैं।
मत विसराओ संस्कृति को तुम, इसका खूब सम्मान करो तुम,
नैतिकता के पथ पर चलकर, गौरवमय इतिहास रचो तुम।।4।।
लक्ष्य तुम्हारा हो अप्रतिम, जज्बातों में एक दिशा हो,
स्वर्णिम हो प्रभात तुम्हारा, आदर्शों की दैदीप्य शिखा हो।
नाज करे तुम पर जमाना, ऐसा सुन्दर काम करो तुम,
नैतिकता के पथ पर चलकर, गौरवमय इतिहास रचो तुम।।5।।
ज्ञान-ध्यान का संबल लेकर, जीवन का निर्माण करो तुम।।

धोवन का विवेक

श्री ऋषभ जैन

गृहस्थ जीवन का दायित्व निभाते हुए एक सद्गृहस्थ यदि विवेकपूर्ण जीवन जीने का संकल्प ले ले तो पापकर्म से बच सकता है। आज प्रायः देखा जाता है कि व्यक्ति विवेक के अभाव में अर्थदण्ड द्वारा जितना पापार्जन नहीं करता, उतना अनर्थदण्ड से कर लेता है। बुद्धिमान कहलाने वाला मानव थोथी मान-प्रतिष्ठा में आज अनर्थदण्ड द्वारा पाप का संग्रह कर रहा है। सन्त-भगवन्त फरमाते हैं-

"बुद्धि ताहि सराहिए, जो सेवे जिनधर्म।
वो बुद्धि किस काम की, जो पड़्या बांधे कर्म।।"

हमें पुण्य से बुद्धि, शक्ति, समय, सब कुछ अनुकूल मिले हैं, इनका उचित नियोजन कर भविष्य को संवारें और उत्तमोत्तम बनाएँ। हम लोग गृहस्थ जीवन में प्रतिदिन बासी बर्तन साफ करते हैं। किन्तु अधिकांश लोग उन बर्तनों को सर्फ, लिक्विड, विम पाउडर, साबुन आदि से साफ करते हैं जो अविवेक का परिचायक है। इन पदार्थों से बर्तनों को साफ करने से अनेक हानियां हैं, यथा-

१. पानी का अपव्यय विशेष होता है।
२. यह पानी बहकर नालियों में जाता है तो क्षारीय पदार्थों से जीवों की विराधना भी विशेष होती है।
३. यह पानी घरेलू काम में भी उपयोगी नहीं बनता और न ही पशुओं के पीने योग्य होता है।
४. लिक्विड पदार्थ का अंश यदि बर्तनों में थोड़ा भी रह जाता है तो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए घातक भी हो सकता है। यहाँ तक कि कैंसर की भी संभावना बन सकती है।
५. इन पदार्थों से बर्तन साफ करने से हाथ भी खराब होते हैं तथा त्वचा का रोग हो सकता है।
६. उक्त पदार्थों के उपयोग में धन का भी अपव्यय होता है।

अब मैं विवेक सम्मत कार्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा, जिससे कि लाभ में रहते हुए उक्त हानियों से बच सकते हैं, साथ ही विवेक सम्मत कार्य से धर्म भी सहज ही हो सकता है। यदि प्रातःकालीन साफ किए जाने वाले बर्तनों को राख से साफ किया जाए तो अनेक लाभ हो सकते हैं, यथा-

१. अनावश्यक पानी का अपव्यय नहीं होगा।

२. इस पानी को संगृहीत करके रख दिए जाने से, नालियों में नहीं जाने से, सम्मूर्च्छिम जीवों की विराधना से होने वाले पाप से सहज बचाव होगा साथ ही वह संगृहीत पानी सुपात्र दान का भी कारण बन सकता है। यह पानी निर्दोष, बिना निमित्त के निर्मित होने से सुपात्र दान में महान् लाभ का कारण बनता है। कल्पना करो, गर्मी के मौसम में विहार करके पिपासा परीषह से युक्त अचानक सन्त पधारें और उन्हें गवेषणा में धोवन पानी उपलब्ध नहीं हो तो कभी विकट स्थिति भी बन सकती है। ध्यान रहे कि आहार के बिना जीवन चल सकता है, पर पानी के बिना नहीं। यदि उस विकट स्थिति में सहज निर्मित संगृहीत धोवन पानी उपलब्ध हो तो उस सुपात्र दान से महान लाभ का कारण बनता है। शास्त्र में वर्णन आता है कि सुपात्र दान से जीव तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन करता है तथा संसार को परीत कर लेता है। यह है राख से बर्तन साफ करने का महान् लाभ।

३. इस पानी के निथर जाने के बाद इसे घरेलू कार्य में भी उपयोग में लिया जा सकता है।

४. यदि राख का अंश बर्तन में रह जाए और पेट में चला भी जाए तो स्वास्थ्य खराब नहीं होता। वैसे देखा जाए तो यह प्रतिरोधी (Antiseptic) है जो रोग निवारण में भी सहयोग कर सकती है।

५. रुपये-पैसे का भी इसमें अपव्यय नहीं होता।

जो लोग यह कहते हैं कि अब तो राख का भी मिलना दुर्लभ हो रहा है, यह एक बहाना है। आज आदमी खरीददारी के लिए श्रम, समय, शक्ति को खर्च कर दूर-दूर नगर-महानगरों में बाजार और दुकानों पर जाकर मनपसंद सामग्री ला सकता है तो थोड़े से प्रयत्न से मिलने वाली राख कैसे प्राप्त नहीं हो सकती। थोड़ा प्रयत्न/पुरुषार्थ करे तो वह राख भी गाय-भैंसों के बाड़े वालों आदि के पास या गांवों में सहज उपलब्ध हो सकती है।

धोवन पानी के संबंध में कुछ और भी बातें ज्ञातव्य हैं-

१. पानी में राख घोलने से वह पानी घोलन कहलाता है जबकि राख से मांजे गए या साफ किए गए बर्तन को धोने से निर्मित पानी धोवन कहलाता है।

२. धोवन पानी घर के खुले चौक में नहीं रखें, क्योंकि कभी बरसात की एक बूंद भी धोवन पानी के बर्तन में गिर जाये तो सारा पानी सचित्त बन जाता है।

३. परण्डे के स्थान में जहाँ दूसरी-दूसरी मटकियाँ सचित्त पानी से भरी होती हैं वहाँ रखने से पानी को लेते समय कदाचित् एक बूंद भी धोवन पानी में गिर जाये तो सारा पानी सचित्त हो जाता है।

४. धोवन पानी फ्रीज में नहीं रखें। क्योंकि वह फिर अचित्त (धोवन) नहीं कहलाता है।

५. बर्फ या फ्रीज का ठण्डा पानी धोवन बनाकर केन या केटली में भरकर रखा जाता है तो वह पानी धोवन नहीं कहलाता है।

६. राख कम मिलने से राख की चिमटी भर घोलने अथवा एक-दो बर्तन मांजकर, दो-चार लौंग डालकर, दो-चार दाने चीनी मिलाकर पानी को अचित्त मान लिया जाता है। किन्तु वर्णादि की परिणति के बिना पानी अचित्त नहीं हो सकता। यद्यपि राख की समस्या भी कम फरस का एक कारण बनती जा रही है, तथापि विवेकी श्रावक गांवों से राख मंगाकर स्थानक आदि में रखवा सकते हैं, तथा वांछित लोगों को सहज उपलब्ध करा सकते हैं।

७. यदि उसी बर्तन में धोवन पानी बनाना हो तो उस मटकी को सायंकाल सुखा देना चाहिए, गीली मटकी में किया गया धोवन ग्राह्य नहीं होता। अथवा दूसरी सूखी मटकी को काम में लिया जा सकता है।

८. मटकी को कभी धूप नहीं लगने दें। क्योंकि धूप लगने से उस पर लीलन आने की संभावना रहती है।

९. यदि मटकी पर लीलन न हो तथा पूरा फरस (राखादि) हो तो मटकी का पानी सन्त-सतियों को बहरानें में कोई बाधा नहीं है।

-श्री वर्द्ध. जैन स्वाध्याय पाठशाला
पीपाड़ शहर, जिला-जोधपुर (राज.)

सामायिक से लाभ

श्री चेतनप्रकाश डूंगरवाल

- सामायिक मन, वचन, काया को निर्मल बनाती है।
- सामायिक से वचन और काया की पाप करणी रुक जाती है।
- सामायिक से बारह व्रतों में से नवम प्रथम शिक्षाव्रत का पालन होता है।
- सामायिक से जीव हिंसादि अठारह पापों का व्यापार बंद होता है।
- सामायिक की आराधना से तीर्थंकर भगवान की आज्ञा पालन का लाभ होता है।

-बैंगलोर (कर्नाटक)

णमोकार का प्रभाव

णमोकार मंत्र अनादि सिद्ध मंत्र है। श्रद्धापूर्वक स्मरण और ध्यान करने से इसका तुरन्त फल प्राप्त होता है। प्रतिदिन के जीवन में कई लोगों का अनुभव है कि णमोकार मंत्र के पाठ से उनका असाध्य रोग मिट गया। सन्निकट विपत्ति टल गई, मनोकामनाएँ पूर्ण हो गईं। ऐसे अनेक प्रकार के भौतिक लाभों के अतिरिक्त णमोकार मंत्र का आध्यात्मिक लाभ तो अचिन्त्य है। श्रद्धापूर्वक जपने से आत्मा में प्रसन्नता और निर्मलता आती है। अन्तिम समय में भी णमोकार मंत्र का स्मरण करने से परलोक में सद्गति की प्राप्ति होती है।

जैन शास्त्रों में णमोकार मंत्र का महत्त्व और उसके फल बताने वाली अनेक घटनाएँ हैं, उनमें से एक सच्ची घटना का उल्लेख किया जा रहा है।

गुजरात के जामनगर जिले में गुलाबचन्द भाई नामक एक शिक्षक रहते थे। एक दिन कक्षा में पढ़ाते-पढ़ाते अचानक उनके सिर में बहुत तेज दर्द उठा। विद्यालय से आने के पश्चात् शाम को गुलाबचन्द भाई अपने फैमिली डॉक्टर कपूर के पास गये। उन्होंने अपनी सिर-दर्द संबंधी समस्या डॉ. कपूर के समक्ष रखी। डॉक्टर ने उनकी जाँच की, परन्तु कोई प्रभावी कारण समझ में नहीं आया। डॉ. कपूर ने कुछ दवाइयां लिख दीं व उन्हें यथासमय लेते रहने पर जोर दिया।

दो दिन बाद गुलाबचन्द भाई को फिर तेज सिर दर्द हुआ। इस बार सिरदर्द के साथ उनके गले में सूजन आनी प्रारम्भ हो गई। गुलाबचन्द भाई पुनः डॉक्टर कपूर के पास पहुँचे। इस बार डॉ. कपूर ने उनकी विस्तृत जाँच से निदान निकाला कि उनको कैंसर हो गया है। गुलाबचन्द यह सुनकर बुरी तरह घबरा गये। डॉक्टर ने उन्हें सांत्वना देते हुए पेनिसिलीन का कोर्स करने की सलाह दी। गुलाबचन्द भाई डॉक्टर की दी हुई दवाइयाँ लेकर घर आ गये।उनके उतरे हुये चेहरे को देखकर उनकी पत्नी ने इस उदासी का कारण पूछा। गुलाबचन्द भाई ने कैंसर संबंधी समस्या का खुलासा कर दिया। यह सुनकर सबके चेहरों पर सन्नाटा-सा छा गया। कुछ ही दिनों में गुलाबचन्द भाई कीं दशा और खराब हो गई। गले में अन्दर ही अन्दर बहुत सूजन आ गई। खाने और निगलने में परेशानी होने लगी। दवाइयाँ भी इस भयंकर बीमारी के समक्ष अपना प्रभाव न दिखा सकीं। सभी परिवारजन इस

प्रकार उन्हें खाने-पीने में असमर्थ देखकर चिंतित रहने लगे। डॉ. कपूर उनकी अस्वस्थता देखकर उनके उपचार हेतु मुम्बई ले गये। वहाँ टाटा मेमोरियल अस्पताल में कैंसर विशेषज्ञ डॉ. मोदी को दिखाया। डॉ. मोदी ने उनकी जाँच पड़ताल की। डॉ. मोदी ने अपने परीक्षणों के आधार पर गुलाबचन्द भाई को गले और जीभ के कैंसर की चपेट में बताया। डॉक्टर मोदी ने बताया कि उनकी बीमारी आखिरी स्टेज पर है। स्थिति इतनी बिगड़ चुकी है कि जाँच के लिए अन्दर से टुकड़ा लेकर भी बायप्सी नहीं की जा सकती है। गुलाबचन्द भाई ने अपनी पिपासा की शान्ति के लिए डॉ. मोदी से विनम्र शब्दों में अनुरोध करते हुए कहा, "डॉक्टर साहब, मैंने दो दिन से पानी भी नहीं पिया है। कृपया किसी तरह मुझे पानी पिला दीजिए। मुझसे अब प्यासा नहीं रहा जाता।" उनकी दुर्दशा देखते हुए डॉ. मोदी ने प्रत्युत्तर में कहा "आप किसी तरह आज की रात निकाल लें, कल मैं नली से आपके पेट में पानी पहुँचा दूँगा।" डॉ. मोदी यह बात जान चुके थे कि अब गुलाबचन्द भाई एक-दो दिन के मेहमान हैं। अतः गुलाबभाई के प्राण शान्तिपूर्वक निकल सकें, इसके लिए उन्होंने नशे के इन्जेक्शन देने का परामर्श दिया। गुलाबचन्द भाई घर वापस आ गये। वे जीवन की ओर से निराश हो चुके थे। उनके लिए जीवन निस्सार हो चुका था। बार-बार उनके मन में यही विचार आने लगा- "शायद आज की रात मेरी जीवन यात्रा की अन्तिम रात है।" यह सोच-सोच कर उनके मन में धीरे धीरे निराशा का अंधकार अपने पाँव पसार रहा था।

यह सत्य है कि जब मनुष्य का पुरुषार्थ थक जाता है, सांसारिक सहारे टूट जाते हैं, तो वह स्वतः ही धर्म की ओर मुड़ता है। गुलाबचन्द भाई ने भी अन्तिम समय में धर्म पथ की ओर अपने कदम बढ़ाने का निश्चय किया। उन्होंने विचार किया, "क्यों न मैं अपने आखिरी समय में नवकार मंत्र का स्मरण करूँ और सिद्धगति प्राप्त करूँ।" दृढप्रतिज्ञ होकर संध्या के साढ़े सात बजे उन्होंने अपने सभी परिवारवालों को अपने पास बुलाया और अपने विगत अपराधों के लिए क्षमायाचना करते हुए कहा- "मेरा अन्तिम समय निकट है। मैंने यदि जीवन में कभी आपके हृदय को ठेस पहुँचाई हो, तो मुझे क्षमा कर देना। अब मैं अपना अन्तिम समय नवकार मन्त्र का जाप करके गुजारना चाहता हूँ।"

उसके बाद वे कमरा बन्द करके नवकार मंत्र की साधना में तल्लीन हो गए। नवकार मंत्र में चित्त की एकाग्रता होने से गले की पीड़ा की अनुभूति धीरे-धीरे कम होती गई। अन्य इच्छाएँ समाप्त हो गईं। मात्र एक ही इच्छा शेष थी-सद्गति प्राप्त हो।

रात के ग्यारह बजे लगभग मंत्र जाप करते-करते उन्हें जोरदार वमन हुआ। अत्यधिक कमजोरी के कारण वे मूर्च्छित होकर फर्श पर गिर पड़े। आवाज सुनकर परिवार वाले उनके पास पहुँचे तो उन्हें बेहोश देखकर घर में रोना-पीटना शुरू हो गया।

कुछ देर बाद गुलाबचंद भाई की बेहोशी टूट गई। होश आने पर उन्हें अपने स्वास्थ्य में सुधार की अनुभूति हुई। उन्होंने पूरा लोटा भरकर पानी पी लिया।

सन्ध्या तक एक घूँट पानी न पी सकने वाले व्यक्ति को पूरा लोटा भर पानी पीता देखकर परिवार वालों में आशा की एक किरण चमकी। उन्हें गुलाबचन्द भाई के चेहरे पर जिन्दगी की चमक दिखाई दी। दूध पीकर गहरी नींद में सोने के बाद जब वे सुबह उठे तो उन्हें अपने भीतर नई स्फूर्ति का अनुभव हुआ।

हुआ यह कि अनन्य भावपूर्वक नवकार मंत्र के जप ने अपना प्रभाव दिखाया। वमन के द्वारा कैंसर के विषैले कीटाणु और विषाक्त रक्त बाहर निकल गया और वे स्वस्थता का अनुभव करने लगे। चार-पाँच दिनों में गुलाबचन्द भाई की तबीयत में तेजी से सुधार आया। अब वे आराम से भोजन आदि करने लगे। डॉ. कपूर ने भी उन्हें जाँच के बाद पूर्णतः स्वस्थ बताया।

संकलन-सम्पादन-सुश्री मधुरिका जैन
३ के २४-२५, कुड़ी भगतासनी
जोधपुर (राज०)

प्रेम

दिलीप धींग

मन्द चिनगारी भी बन सकती है प्रखर।
नन्हीं चींटी भी चढ़ सकती है शिखर।
अहम् के नशे में न हो उपहास किसी का।
निरक्षर भी पढ़ सकते हैं 'ढाई अक्षर'।

-बम्बोरा, जिला-उदयपुर (राज.)

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

***हिन्दी गद्य के विकास में जैन मनीषी पं. सदासुखदास का योगदान**—डॉ. (श्रीमती) मुन्नी जैन **प्रकाशक**— 1. पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी, वाराणसी—221005, 2. श्री दिगम्बर जैन सिद्धकूट चैत्यालय टेम्पल ट्रस्ट, सेठ मूलचन्द सोनी मार्ग, अनूप चौक, अजमेर(राज.) 305001 **पृष्ठ** 308+18, **मूल्य** 300 रुपये, सन् 2002*

हिन्दी भाषा को जैन विद्वान् लेखकों का भी योगदान रहा है। उन्होंने १७वीं शती से ही ढूंढारी, ब्रज मिश्रित राजस्थानी आदि के प्रयोग के साथ हिन्दी भाषा के विकास को एक दिशा प्रदान की। प्रस्तुत शोध ग्रंथ ऐसे ही जैन विद्वान् पं. सदासुखदास जी कासलीवाल के द्वारा हिन्दी भाषा में रचित वचनिकाओं को आधार बनाकर लिखा गया है। ग्रन्थ के पुरोवाक् में मूर्धन्य मनीषी विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन ने लिखा है- "श्वेताम्बर परम्परा में एकाध अपवाद को छोड़कर श्रावकों द्वारा रचित ग्रन्थ नहीं मिलते, किन्तु दिगम्बर परम्परा की यह विशेषता रही है कि इसमें लगभग सातवीं शती से साहित्य-रचना का कार्य आचार्यों एवं मुनियों के साथ गृहस्थ उपासकों द्वारा भी किया गया है।" लेखिका ने अपने शोधग्रन्थ को चार अध्यायों में प्रस्तुत किया है। प्रथम अध्याय में पं. सदासुख जी (१७९५-१८६५ई.) के व्यक्तित्व एवं जीवनवृत्त पर तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय में पं. सदासुख जी के पूर्ववर्ती और समकालीन जैन गद्यकारों की चर्चा की गई है। इस अध्याय में पाण्डे राजमलजी को प्राचीनतम गद्य लेखक निरूपित करते हुए पं. बनारसी दास, पाण्डे हेमराज, पं. टोडरमल, जयचन्द छाबड़ा आदि प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध ७४ गद्य लेखकों का परिचय दिया गया है। इसी अध्याय में समकालीन ६ जैनेतर गद्यकारों में बालकृष्णभट्ट, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं. अम्बिकादत्त व्यास, मुंशी सदासुखलाल आदि की भी चर्चा की गई है। इस प्रकार जैन एवं जैनेतर गद्यकारों के संबंध में जानकारी की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। तृतीय अध्याय में पं. सदासुख जी के कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। पण्डित जी ने भगवती आराधना, तत्त्वार्थ सूत्र, रत्नकरण्डश्रावकाचार जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थों पर भी वचनिकाओं का लेखन किया था। लेखिका ने पण्डितजी के कृतित्व की व्यापक चर्चा की है। चतुर्थ अध्याय में पण्डितजी के साहित्य की भाषा एवं शैली का विश्लेषण किया गया है। उनकी भाषा में देशज, राजस्थानी, ढूंढारी, बुन्देली, ब्रज, उर्दू आदि भाषाओं के शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। लेखिका डॉ. श्रीमती मुन्नी जैन प्रसिद्ध जैन विद्वान् डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' की धर्मसहायिका धर्मपत्नी हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में विश्रुत समालोचक डॉ. नामवर सिंह जी की शुभाशंसा है। जैन विद्वानों के द्वारा हिन्दी भाषा में किए गए कार्यों को प्रकाश में लाने की दिशा में यह ग्रन्थ एक महत्त्वपूर्ण कार्य है।

जिनवाणी पर अभिमत

नैतिक चेतना को मानवीय जीवन में घोलने वाली पत्रिका "जिनवाणी" का हर शब्द आध्यात्मिक ज्ञान की सतत ऊर्जा प्रदान करता है। स्वार्थों से प्रदूषित समाज का सुधार तभी संभव होगा जब कोने-कोने के लोग 'जिनवाणी' के लेखों का मनन-चिन्तन करें और नैतिक मूल्यों को आत्मसात् कर व्यवहार में लाएँ। उन सभी को धन्यवाद जो किसी न किसी रूप में जिनवाणी से जुड़े हुए हैं।

लोकेन्द्रनाथ मोदी, जोधपुर

जिनवाणी का अप्रेल अंक प्राप्त करके प्रसन्नता हुई। व्यावहारिक, सामाजिक एवं धार्मिक लेखों का उत्कृष्ट संकलन आपके विद्वत् सम्पादकत्व का परिचायक है। सभी द्वेष, भेदभाव से परे जिनवचनों व सत्य-अहिंसा धर्म के प्रचार का आपका पावन संकल्प अनुकरणीय एवं अभिनंदनीय है। निज विवेक का आदर क्यों? तथा महावीर का स्वास्थ्य चिंतन आदि लेख अत्यधिक चिंतनपूर्ण एवं प्रासंगिक हैं। एतदर्थ विद्वत्जनों को भी कोटि-कोटि साधुवाद।

जिनवचनों का प्रबल प्रचार कर रही है जिनवाणी,
निष्पक्ष, गुणग्राही, अनमोल है हिन्दी मासिक जिनवाणी।
जिनवाणी की हो जय-जयकार यही भावना हमारी है,
बातें करते युग बीत गया, करो कर्म-कहती जिनवाणी है।।

-प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन', भवानीमण्डी

जिनवाणी का अंक ५ (मई २००३) पढ़ा। हर रचना को पढ़ने से बहुत ही मन प्रसन्न हुआ। प्रेरक प्रसंग "फांसी पर चढ़ने से पूर्व की सामायिक" को दो बार सजल नेत्रों से पढ़ा। इस प्रसंग से "जैन समाज" गौरवान्वित हुआ। वह शहीद श्री अमरचन्द जी बांठिया के देशप्रेम और धार्मिक साधना निश्चय ही हम सबको प्रेरणा देती रहेगी।

दिनांक 19.5.2003 *श्री पारसमल कुचेरिया, जयपुर*

मैं जिनवाणी का करीब ५० वर्षों से नियमित पाठक हूँ। जब से जिनवाणी का प्रकाशन मेरे ससुराल भोपालगढ़ से हुआ। मैं इसका रुचिपूर्वक अध्ययन करता रहा हूँ। मई मास के अंक में अमर शहीद अमरचन्द जी बांठिया की फांसी पर लटकने के पूर्व सामायिक एवं नवकार मन्त्र के प्रति श्रद्धा पढ़कर अत्यन्त हर्ष हुआ। मेरी आयु ८२ वर्ष की हो गई है। मैं प्राणिमात्र से क्षमा याचना करता हूँ, मेरे को सब क्षमा करें। इसी तरह जिनवाणी पत्रिका वीतराग दर्शन के माध्यम से आगे बढ़ती रहे, यही मेरी मंगल कामना है।

दिनांक 23.5.2003 *श्री सुगनचन्द बोकड़िया, कोयम्बटूर*

मेरे स्वाध्याय में जिनवाणी पत्रिका तो प्रमुख अंग बन गई है। आपका संपादन कार्य प्रशंसनीय है, सराहनीय है, अनुकरणीय है। आपका सम्पादकीय लेख अति सुन्दर रहता है। *-जवाहरलाल करनावट, हावड़ा*

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा स्वीकृत चातुर्मास

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. द्वारा विक्रम संवत् २०६० ईस्वी सन् २००३ के चातुर्मास साधु-मर्यादा के अनुसार इस प्रकार स्वीकृत किए गए हैं-

१. इचलकरंजी (जिला-कोल्हापुर) (महाराष्ट्र)

१. आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन मुक्ति के प्रबल-प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री१००८ श्री हीराचन्द्रजी म.सा.
२. महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.
३. सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणजी म.सा.
४. तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.
५. श्रद्धेय श्री कपिलमुनिजी म.सा.
६. श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.
७. श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.
८. श्रद्धेय श्री बलभद्रमुनिजी म.सा. ठाणा ८

चातुर्मास स्थल- महावीर भवन, इचलकरंजी-४१६११५ (जिला- कोल्हापुर) महाराष्ट्र

सम्पर्क सूत्र- श्री जवाहरलालजी चांदमलजी बोहरा, ६/५०७, बोहरा भवन, महावीर भवन के पास, पो.-इचलकरंजी- ४१६११५ (जिला-कोल्हापुर) महाराष्ट्र, फोन नं.- (०२३०) २४३४२४६/२४३६८२० नि., फोन व फैक्स-का २४३३०५६, मोबाइल-६८२२४-१६०५२

आवागमन के साधन- राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-४ पर कोल्हापुर स्थित है। इचलकरंजी हेतु सड़क मार्ग से पहुंचने के लिए कोल्हापुर से पहले ७ कि.मी. शिरोली से बांये मुड़कर जाना पड़ता है। शिरोली-कोल्हापुर से इचलकरंजी के लिए नियमित बस/टैक्सी सेवा उपलब्ध है। मुम्बई से इचलकरंजी ४०० कि.मी. है और सतारा से १३५ कि.मी. है।

रेल मार्ग-इचलकरंजी का समीपवर्ती स्टेशन हातकंणगले है जो इचलकरंजी से मात्र ८ किमी. है। स्टेशन से ऑटोरिक्शा की सुविधा हर समय उपलब्ध है। समीपवर्ती मिरज जं. पर मुम्बई - चेन्नई आने-जाने वाली सभी गाड़ियों का ठहराव है। बैंगलोर-पूना के बीच मिरज स्टेशन से इचलकरंजी मात्र ३० कि.मी. है। मिरज से इचलकरंजी के लिए बस/टैक्सी की हर समय सुविधा उपलब्ध है। (गाड़ियों की सूची अलग से दी जा रही है)

२. घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

१. आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा.

२. मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.

३. तपस्वी श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा.

४. श्रद्धेय श्री मंगलमुनिजी म.सा.

५. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ठाणा ५

चातुर्मास स्थल-सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र- श्री सुमेरनाथजी मोदी, घोड़ों का चौक, जोधपुर- ३४२००१ (राजस्थान), फोन व फैक्स (०२९१) २६३६७६३ का., २६३२६८१ नि.

आवागमन के साधन- जोधपुर हेतु जयपुर, दिल्ली, हरिद्वार, जम्मूतवी, वाराणसी, कोलकाता, मुम्बई, अहमदाबाद, चैन्नई, बैंगलोर आदि क्षेत्रों से रेल सेवाएँ उपलब्ध हैं। परिवहन सेवा एवं हवाई सेवा भी उपलब्ध है।

३. घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

१. साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा.

२. महासती श्री विमलावतीजी म.सा.

३. महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा. ठाणा ३

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक, जोधपुर(राज.)

सम्पर्क सूत्र-क्रम संख्या-२ के अनुसार

आवागमन के साधन- क्रम संख्या-२ के अनुसार

४. पावटा-जोधपुर (राज.)

१. शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.

२. महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.

३. महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.

४. महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- सी-५५, वर्द्धमान भवन, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-३४२००६

सम्पर्क सूत्र-श्री नरपतराजजी चौपड़ा, सी-८२, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-३४२००६, फोन नं.- नि.-(०२९१) २५४७४६२/२५४५२६५

आवागमन के साधन- क्रम संख्या-२ के अनुसार

५. सरस्वती नगर-जोधपुर (राज.)

१. सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवरकंवर जी म.सा.

२. महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.

३. महासती श्री कौशल्याजी म.सा.

४. महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल-स्वाध्याय भवन, ए-७५/७६, सरस्वती नगर, जोधपुर

सम्पर्क सूत्र- श्री अमरचन्दजी सदावत मेहता,"करणी" ३३३-सेक्टर-ए, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर-३४२००५, फोन नं.-(०२९१) २७४२१३६/ २७४२१३८

आवागमन के साधन-सरस्वती नगर, बासनी कृषि मण्डी के सामने है। पावटा व घण्टाघर से बस नं.-१० सरस्वती नगर आती-जाती है। टेम्पो/टैक्सी से भी सरस्वती नगर पहुंचा जा सकता है।

६. भोपालगढ़ (जिला-जोधपुर) राज.

१. शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवरजी म.सा.

२. व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.

३. महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.

४. महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- पुराना जैन स्थानक, भोपालगढ़-३४२६०३

सम्पर्क सूत्र-श्री सुगनचन्द जी कांकरिया, पोस्ट- भोपालगढ़- ३४२६०३ (जिला-जोधपुर), फोन नं.-(०२९२०) २२३११७/ २२२२६३

आवागमन के साधन- भोपालगढ़ के लिये जोधपुर, बिलाड़ा, पीपाड़ सिटी, मेड़ता सिटी, गोटन, कुचेरा, नागौर, आसोप आदि ग्राम-नगरों से नियमित अन्तराल पर बस सुविधा उपलब्ध है। भोपालगढ़ जोधपुर से ७५ कि.मी. पर, पीपाड़ से ३५ कि.मी. एवं मेड़ता सिटी से ५५ कि.मी दूरी है।

७. निफाड़ (जिला-नासिक) महाराष्ट्र

१. व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.

२. महासती श्री सुमनलताजी म.सा.

३. महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.

४.महासती श्री मंजूलताजी म.सा.

५.महासती श्री चैतन्यप्रभाजी म.सा.

६.नवदीक्षिता महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा. ठाणा ६

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, मामलेदार चौक, पोस्ट- निफाड़ (जिला-नासिक) महा.

सम्पर्क सूत्र- श्री चम्पालाल जी नैनसुखजी चोरड़िया, पो.-निफाड़- ४२२३०३, जिला-नासिक (महा.), फोन नं.- (०२५५६) २४११०२

आवागमन के साधन- नासिक जिलान्तर्गत निफाड़ कस्बा रेल एवं सड़क मार्ग से नासिक रोड़ स्टेशन से जुड़ा हुआ है। नासिक से निफाड़ ४० कि. मी. दूर है। मनमाड से निफाड़ ६० कि.मी. है जहां से बस द्वारा निफाड़ पहुंचा जा सकता है।

८. शाहीबाग-अहमदाबाद (गुज.)

१. व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा.

२. व्याख्यात्री महासती श्री शशिकलाजी म.सा.

३. महासती श्री समताजी म.सा.

४. महासती श्री उषाजी म.सा.

५. महासती श्री निरंजनाजी म.सा. ठाणा ५

चातुर्मास स्थल- श्री राजस्थान स्था. जैन संघ, हठीभाई की वाड़ी शाहीबाग रोड, अहमदाबाद-३८०००४, फोन नं.- (०७९) ५६२४६५०

सम्पर्क सूत्र-श्री पदमचन्दजी कोठारी, ३७-न्यू क्लॉथ मार्केट, अहमदाबाद-३८०००२, फोन नं.-(०७९) का. २१६०६७५, नि.-६४४३८१५ मो. -९८२५४-७३९००

आवागमन के साधन- रेल, सड़क एवं हवाई मार्ग से देशभर से जुड़ा अहमदाबाद गुजरात की राजधानी एवं प्रमुख व्यावसायिक शहर है।

९. बीजापुर (कर्नाटक)

१. विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.

२. व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

३. महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.

४.महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.

५. महासती श्री रक्षिताजी म.सा.

६..महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

७. नवदीक्षिता महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा ७

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, बालाजी के मन्दिर के पास, राममन्दिर रोड़, बीजापुर (कर्नाटक)

सम्पर्क सूत्र-श्री नेमीचन्दजी रुणवाल, महावीर रोड़, बीजापुर- ५८६१०१ (कर्ना.), फोन नं.- (०८३५२) २५०२६१/२५२२१२, फैक्स-२५५४४४

आवागमन के साधन-बीजापुर रेलवे स्टेशन है। निकटवर्ती सोलापुर स्टेशन के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों से गाड़ियां मिलती हैं। सोलापुर से बीजापुर १०० कि. मी. है जहां से नियमित बस सेवाएं उपलब्ध हैं।

१०. कोटा (राजस्थान)

१. व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.

२. महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.

३. महासती श्री शारदाजी म.सा.

४. महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा. ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, रामपुरा बाजार, कोटा- ३२४००३(राज.)

सम्पर्क सूत्र-श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, वर्द्धमान नमकीन्स, मेन रोड़, गुमानपुरा, कोटा-३२४००३ (राज.), का.-(०७४४) २३२४१२६, नि. २३२०८३२ मोबाइल-९४१४१-७७१३६

आवागमन के साधन- दिल्ली-मुम्बई मुख्य रेल मार्ग पर कोटा रेलवे स्टेशन है जहां सभी गाड़ियों का ठहराव है।

११. चौथ का बरवाड़ा (जिला-सवाईमाधोपुर) राज.

१. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.

२. महासती श्री समर्पिताजी म.सा.

३. महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.

४. महासती श्री वृद्धिप्रभा जी म.सा.

५. महासती श्री सिद्धिप्रभा जी म.सा., ठाणा ५

चातुर्मास स्थल-जैन स्थानक, सदर बाजार, चौथ का बरवाड़ा- ३२२७०२ (जिला-सवाईमाधोपुर)

सम्पर्क सूत्र- श्री भैरूलालजी जैन, कमीशन एजेन्ट व ग्रेन मर्चेण्ट, पो.-चौथ का बरवाड़ा-३२२७०२ (सवाईमाधोपुर), फोन नं.- (०७४६२) का. २५७०४६, नि.-२५७०२१

आवागमन के साधन- जयपुर-सवाईमाधोपुर रेल मार्ग पर चौथ का बरवाड़ा रेलवे स्टेशन है। सवाईमाधोपुर से नियमित अन्तराल पर ट्रेन एवं बस सेवाएं हैं। जोधपुर से भी प्रातः ५:४५ बजे सवाईमाधोपुर जाने वाली इण्टरसिटी यहां ठहरती है।

१२. सतारा (महाराष्ट्र)

१. व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.

२. महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.

३. महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

४. नवदीक्षिता महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.

५. नवदीक्षिता महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. ठाणा ५

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, मोती चौक, सतारा (महाराष्ट्र)

सम्पर्क सूत्र-श्री हिम्मतमलजी मूथा, ४१-मूथा कॉलोनी, सतारा केम्प, सतारा (महा.)-४१५००१, फोन नं- का.(०२१६२) २३४७२७/ २३४४४५ नि. -२३११०५ फैक्स-२३१२२० मोबाइल- ९८२२०-१८६६६

आवागमन के साधन-राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-४ पर पूना से सतारा ११० कि.मी. दूरी पर है। पूना से कोल्हापुर जाने वाली रेलगाड़ियाँ सतारा होकर जाती है। सतारा रेलवे स्टेशन से शहर ५ कि.मी. है और आवागमन के लिए टेम्पो/टैक्सी की सुविधा हर समय मिलती है।

१३. नदबई (जिला-भरतपुर) राज.

१. व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवतीजी म.सा.

२. महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.

३. महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा. ठाणा ३

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नदबई-३२१६०२ (जिला-भरतपुर) राजस्थान

सम्पर्क सूत्र-श्री ज्ञानचन्दजी जैन, सिन्धी कॉलोनी, कटरा, नदबई- ३२१६०२ (जिला-भरतपुर) राजस्थान, फोन नं.-(०५६४३) २२३६६६ नि.

आवागमन के साधन-घाटगेट-जयपुर से नदबई के लिए राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की बसें नियमित अन्तराल पर मिलती रहती हैं। जयपुर- आगरा

हाइवे पर भरतपुर से २५ कि.मी. पहले डहरामोड है। डहरामोड से नदबई १० कि.मी. है। नदबई रेलवे स्टेशन भी है। बांदीकुई-आगरा रेल मार्ग पर होकर चलने वाली ट्रेन नदबई होकर जाती है।

१४. इचलकरंजी (जिला-कोल्हापुर) महा.

१. व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.

२. महासती श्री पुष्पलताजी म.सा.

३. महासती श्री स्नेहलताजी म.सा.

४. महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.

५. महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

६. महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.

७. महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. ठाणा ७

चातुर्मास स्थल- क्रम संख्या-१ के अनुसार

आवागमन के साधन- क्रम संख्या-१ के अनुसार

१५. कुश्तला (जिला-सवाईमाधोपुर) राज.

१. व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

२. महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

३. महासती श्री परागप्रभा जी म.सा.

४. महासती श्री ऋद्धिप्रभा जी म.सा., ठाणा ४

चातुर्मास स्थल- जैन स्थानक, कुश्तला (जिला-सवाईमाधोपुर)

सम्पर्क सूत्र- श्री सुरेशचन्दजी जैन-सरपंच, पोस्ट-कुश्तला- ३२२०२१ (जिला-सवाईमाधोपुर), फोन- (०७४६२) का.-२५८००४, नि. २५८०४५

आवागमन के साधन- कुश्तला सवाईमाधोपुर से मात्र १० किमी. दूर है। सवाईमाधोपुर से कोटा एवं टोंक जाने वाली सभी बसें कुश्तला होकर जाती हैं। दिल्ली-मुम्बई रेलवे लाइन पर सवाईमाधोपुर ब्रोडगेज का जंक्शन है।

निवेदन

अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रदत्त गुणी-अभिनन्दन सम्मान, आचार्य श्री हस्ती-स्मृति सम्मान, युवा-प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान तथा विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान संघ के आगामी अधिवेशन दिनांक १२-१३ सितम्बर २००३ के अवसर पर तदनुरूप योग्य व्यक्तियों को दिये जाने प्रस्तावित हैं। कृपया विचारार्थ आपके प्रस्तावों एवं सुझावों से अवगत करावें। **-गुणी अभिनन्दन समिति, द्वारा संघ महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर**

सभी सन्त-सतियों का चातुर्मास-स्थलों की ओर विहार

- **परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ सकल जैन संघ, पूना की विनती पर पूना पधारे तो पूनावासियों ने भक्ति-भावना के साथ आचार्यप्रवर की अगवानी में पलक-पांवडे बिछाये। आनन्द तीर्थ में चार मुमुक्षु बहिनों की आडम्बरविहीन दीक्षा का प्रसंग पूनावासियों को सदा याद रहेगा। धनकवडी संघ को बड़ी दीक्षा का सहज अलभ्य लाभ प्राप्त होने से धनकवड़ी क्षेत्र के श्रद्धालु अपनी पुण्यवानी बता रहे हैं।

बड़ी दीक्षा तक प्रायः अधिकांश चातुर्मास घोषित हो चुके थे। अतः स्वीकृत चातुर्मास स्थलों की ओर विहार के क्रम में आचार्यप्रवर पूना से सतारा पधारे। रास्तें में छोटे-छोटे गांव हैं, आहार-विहार की सुविधा एवं श्रावक- श्राविकाओं को संभालने की भावना के परिप्रेक्ष्य में आचार्यप्रवर ने दो संघाड़ों में विहार की व्यवस्था का निर्देशन किया, परिणामस्वरूप गांव-गांव और नगर-नगर में सत्संग-सेवा और संत-समागम का सुयोग तो मिला ही, आचार्यप्रवर ने घाटी के दुरूह रास्तों को सुगमता से पार किया। आचार्यप्रवर का आत्मबल देखकर श्रावक विस्मित थे। श्रावकों ने भी विहार-सेवा का भावनापूर्वक लाभ लिया। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत आचार्यप्रवर की स्वास्थ्य समाधि की जानकारी के प्रयोजनार्थ बीच में सेवा में पधारे।

सतारा के सुश्रावक श्री हिम्मतमल जी मूथा विचरण-विहार की दूरस्थ क्षेत्रों के श्रावकों द्वारा पृच्छा करने पर समुचित जानकारी तो देते ही, स्वयं विहार-सेवा में आगे रहते। सतारा में वि.सं. १९९६ में आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न हुआ था। उनके पट्टधर के प्रथम बार पधारने के समाचारों से छः दशक पूर्व की स्मृति से उत्साहित सतारा श्री संघ ने घर आई गंगा से लाभ उठाने की भावना से रास्ते के गांवों में समय-समय पर पहुंच कर निवेदन किया कि आपश्री हमें पर्याप्त सेवा का अवसर प्रदान करें। सतारा श्री संघ ने महासती मण्डल के चातुर्मास के लिए पुरजोर विनति रखी। आचार्यप्रवर ने स्वास्थ्य समाधि और विहार की स्थिति का ध्यान रखते व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास सतारा स्वीकार किया।

सतारा में ६ जून को आचार्यप्रवर का मंगलप्रवेश अत्यन्त भव्यता से हुआ। प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम में आबाल-वृद्ध

सबका उत्साह रहा तो व्रत-नियम अंगीकार करने में भी सतारावासी पीछे नहीं रहे। सतारा की भक्ति-भावना से आचार्यप्रवर करीब १० दिन वहां विराजे। आचार्यप्रवर के प्रवचन प्रेरणाप्रद होते हैं, प्रवचन ही नहीं प्रत्यक्ष सम्पर्क में आने वालों को धर्म स्थान में सामायिक करने की प्रभावी प्रेरणा से गांव-गांव और नगर-नगर में दैनिक साप्ताहिक सामायिक-साधना का वातावरण बना है।

आचार्यप्रवर ने १५ जून को अपने आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ को आगे विहार करवाया। आचार्यप्रवर ने सतारा से इचलकरंजी हेतु विहार किया तो मध्यान्तर के ग्राम उंब्रज, कराड़, मसूर, टाकरी, पलसू आदि क्षेत्रों में धर्म की अच्छी प्रभावना रहीं। आचार्यप्रवर इचलकरंजी के निकट पधार गए हैं। इचलकरंजी के श्रावक उत्साहित हैं तथा निरन्तर विहार सेवा का लाभ ले रहे हैं।

आचार्यप्रवर अपने आज्ञानुवर्ती संतों के साथ जुलाई के प्रथम सप्ताह के अन्त में चातुर्मासार्थ इचलकरंजी में प्रवेश करें, ऐसी संभावना है।

❁ **परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.**, सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा., विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा ३ मध्यप्रदेश से मारवाड़ तक धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करते हुए सूर्यनगरी- जोधपुर के सन्निकट पधार रहे हैं, जानकर मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २ जोधपुर से विहार कर पीपाड़ शहर पधारे। पीपाड़ श्रद्धा-भक्ति वाला क्षेत्र है। पीपाड़ में मुनिद्वय के सान्निध्य में संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ और ८ जून को मुनिद्वय ने पीपाड़ से जालीवाड़ा और तदनन्तर ६ जून को कोसाना विहार किया। उपाध्यायप्रवर ब्यावर से चांग, नानणा, गिरी, बर, नीमाज आदि मध्यान्तर के ग्रामों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते दिनांक ६ जून को जैतारण पधारे। भवानीमण्डी, रामगंजमण्डी, कोटा, बून्दी, देवली, केकड़ी, सरवाड़, करेड़ा, फूलिया, धनोप, कोठिया, आगूचा, विजयनगर, मसूदा आदि- आदि मध्यान्तर के ग्राम-नगरों में जहां भी उपाध्यायप्रवर पधारे हर क्षेत्र की यही विनती रही कि आपश्री कुछ दिन यहां और विराजें। कोटा-कांवलियास जहाँ उपाध्यायप्रवर के यशस्वी चातुर्मास हो चुके हैं उन क्षेत्रों के भक्तों की पुरजोर विनति के कारण कुछ दिन अधिक विराजकर उपाध्यायप्रवर ने उनको संतुष्ट किया। ब्यावर-जैतारण-पीपाड़-भोपालगढ़-जोधपुर के श्रावकों ने विचरण- विहार में एवं प्रवास में समय-समय पर उपस्थित होकर अपने-अपने क्षेत्रों को पूरा समय देने का निवेदन किया। तीव्र गर्मी में लम्बे विहार कठिनता से होते हैं, उपाध्यायप्रवर ने मौसम की प्रतिकूलता को दरकिनार कर हर गांव-नगर को संभालने की भावना से नित्य विहार-क्रम को मूर्तरूप दिया। ब्यावर को चार दिन के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक १ जून को प्रातः प्रवचन फरमा कर सायं ब्यावर से विहार किया। २ जून को नानणा, ३ को गिरी, ४ को बर, ५ को निमाज, ६ को जैतारण, ७ को निम्बोल, ८ को रणसीगावं, ६ को मादलिया, १० को कोसाणा, ११ को रतकूड़िया, १२ को भोपालगढ़ पधारे। उपाध्याय प्रवर ने कभी १६ किलोमीटर, कभी १४ किलोमीटर तो कभी ११-१२ किलोमीटर का विहार किया।

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ठाणा २ पीपाड़ से उपाध्यायप्रवर की अगवानी में कोसाना पधारे। कोसाना से मादलिया के मार्ग में उपाध्यायप्रवर की सेवा में पहुंचकर संतों ने वन्दन-नमन किया, सुख शांति पूछी और पाँच ठाणों के साथ जय-जयकार के जयनादों के बीच उपाध्यायप्रवर का कोसाना में मंगल पदार्पण हुआ। कोसाना से रतकूड़िया होकर त्रयोदशी दिनांक १२ जून को उपाध्यायप्रवर का क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में मंगल प्रवेश भव्यता से हुआ।

पीपाड़, पालासनी, कोसाना, रतकूडिया एवं जोधपुर के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने भोपालगढ़ पहुंचकर उपाध्यायप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। १६ जून को भोपालगढ़ से सभी सन्त सायं विहार कर नाड़ातोड़ा पधारे। रतकूड़िया-साथिन क्षेत्रों को पावन करते उपाध्यायप्रवर का २२ जून को पीपाड़शहर में मंगल प्रवेश अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ हुआ। चार दिन प्रवचन-लाभ देकर उपाध्यायप्रवर ने २५ जून को पींपाड़ से रिंया विहार किया। २६ जून को चोढ़ावास, २७ को बीनावास होते २८ जून को पालासनी पधारे । पालासनी से डांगियावास-बनाड़ फरसते हुए २ जुलाई को लक्ष्मीनगर, जोधपुर पधारे । घोड़ों का चौक स्थानक में ४ जुलाई को विशाल उपस्थिति एवं जय-जयनादों के साथ आपका प्रवेश अत्यन्त भव्यता से हुआ।

- **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ३ सकारण घोड़ों का चौक स्थानक विराजित है। आचार्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखा का चातुर्मास घोड़ों का चौक स्वीकार किया है।
- **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.** आदि ठाणा ४, ६ जून को वर्द्धमान भवन- पावटा से विहार कर रेनबो हाउस पधारे हैं जहाँ महासती मण्डल सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं। शासनप्रभाविका जी म.सा. परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत- मुनिराजों के जोधपुर पधारने पर दर्शन-वन्दन और सेवा का सुअवसर प्राप्त कर चातुर्मासार्थ आप वर्द्धमान भवन-पावटा पधारेंगे। शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. एवं महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है। जयपुर के सुज्ञ श्रावक श्री सुमतिचन्द जी कोठारी आवश्यकता होने पर सेवाभावी चिकित्सक डॉ. नानावती को जोधपुर लेकर

पधारते हैं और महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में यथायोग्य परामर्श देते हैं।

- **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ पूर्व में वर्द्धमान भवन-पावटा विराज रहे थे। कुछ दिनों तक इनकमटैक्स कॉलोनी स्थित स्थानक में विराजे। महासती मण्डल का चातुर्मास सरस्वती नगर, जोधपुर स्वीकार हुआ है, उपाध्यायप्रवर के जोधपुर पधारने पर दर्शन-वन्दन एवं सेवा लाभ लेकर महासती मण्डल चातुर्मासार्थ सरस्वती नगर पधारें, ऐसी संभावना है।
- **शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ सुख शांतिपूर्वक विराजमान हैं। शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती जी म.सा. का गत वर्ष भोपालगढ़ चातुर्मास था। थोड़ा चलने पर श्वांस की गति बढ़ जाने से विहार की स्थिति नहीं थी, अतः भोपालगढ़ श्री संघ की विनति मान्य कर आचार्यप्रवर ने उनका चातुर्मास भोपालगढ़ स्वीकार किया है। उपाध्यायप्रवर का कुछ दिनों पूर्व भोपालगढ़ पधारना महासती मण्डल की भावना के अनुरूप श्रेयस्कर रहा।
- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा दीक्षा पूर्व पूना पधार गये थे। बड़ी दीक्षा पूर्व आचार्यप्रवर ने व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास निफाड़ स्वीकार किया। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ ग्रामानुग्राम ज्ञान गंगा प्रवाहित करते नयागांव-दायगांव तक २७ जून को पधार गये थे, जहाँ से निफाड़ मात्र १५ किलोमीटर दूर है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ५ का अहमदाबाद के समीपवर्ती उपनगरों को फरस कर जुलाई के प्रथम सप्ताह में शाही बाग हठी भाई की वाड़ी स्थित राजस्थान उपाश्रय में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश संभावित है।
- **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ७ ने बड़ी दीक्षा पश्चात् पूना से सतारा एवं तदनन्तर बीजापुर की ओर विहार किया। २७ जून तक प्राप्त सूचनानुसार महासती मण्डल कोटे-माकल-मालीनगर-टपालपुर तक पधारे हैं। अभी भी करीब ७० किलोमीटर का विहार शेष है। विहार की गति को देखते लगता है अगले आठ-दस दिन में महासती मण्डल बीजापुर पधारें। बीजापुर के सुज्ञ श्रावक विहार-सेवा में सक्रिय हैं।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी(सोहनजी) म.सा.** आदि ठाणा ४ विजयनगर से धनोप-देवली-हिण्डौली-बूंदी-तालेड़ा आदि क्षेत्रों में ज्ञान गंगा प्रवाहित कर १९ जून को कोटा पधारे। कोटा के शॉपिंग सेन्टर, दादावाड़ी,

टीचर्स कॉलोनी आदि क्षेत्रों को पावन कर महासती मण्डल ने ३० जून २००३ को चातुर्मासार्थ रामपुरा बाजार स्थित जैन स्थानक में मंगल प्रवेश किया।

- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ६ अजमेर से आगे-पीछे दो संघाड़ों में विहार करते हुए केकड़ी-सरवाड़ होकर सवाईमाधोपुर की ओर बढ़े। चोरू में ५ जून को महासती श्री रुचिता जी म.सा. के स्वास्थ्य में एकाएक प्रतिकूलता हुई। सवाईमाधोपुर से गए चिकित्सकों ने जांच हेतु सवाईमाधोपुर पधारना आवश्यक बताया। अलीगढ़, कुश्तला, सवाईमाधेपुर आदि के श्रावकों ने आचार्यप्रवर की आज्ञा मिलने पर डोली द्वारा महासतीजी को सवाईमाधोपुर एवं फिर बजरिया तक विहार करवाया। कुछ उपचार प्रारम्भ हुआ। श्रावकों की सजगता से महासती जी की अस्वस्थता के समाचार जयपुर भी हो चुके थे, अतः जयपुर से दो सेवाभावी चिकित्सक सेवा में पहुंचे। श्रमणोचित औषधोपचार से स्वास्थ्य समाधि की ओर गति देखकर श्रावकों को संतोष हुआ। अब महासती श्री रुचिता जी म.सा. का स्वास्थ्य सामान्य हो गया है। आचार्यप्रवर ने चौथ का बरवाड़ा एवं कुश्तला चातुर्मास पूर्व में घोषित कर दिये थे अतः व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ ने २८ जून को बजरिया से विहार किया तथा ३ जुलाई २००३ को उनका चौथ का बरवाड़ा स्थानक में मंगल प्रवेश हो गया है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा ५ का पूना से सतारा की ओर विहार चल रहा था, रास्ते में महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. के रक्तचाप में न्यूनाधिकता हो गई। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. दीक्षा महोत्सव के कारण राजस्थान से महाराष्ट्र तक का लम्बा विहार करके पधारे हैं, अतः उनका चातुर्मास आचार्यप्रवर की सन्निधि में होने की संभावना थी, परन्तु दूरद्रष्टा आचार्यप्रवर ने स्वास्थ्य-समाधि के परिप्रेक्ष्य में विहार की अनुकूलता का आकलन कर उनका चातुर्मास सतारा घोषित किया।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा ३ का विचरण पोरवाल क्षेत्र में चल रहा था, आचार्यप्रवर के आदेशानुसार महासती मण्डल ने पोरवाल से पल्लीवाल क्षेत्र की ओर विहार किया। गंगापुर-करौली- हिण्डौन-मण्डावर एवं खेरली क्षेत्रों में धर्म जागृति कर महासती मण्डल नदबई चातुर्मासार्थ प्रवेश करेंगे। महासती मण्डल की प्रेरणा से खेरली में शिविर का आयोजन रखा गया जो सफल रहा।
- **व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा.** आदि ठाणा ७ जो पूर्व में व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. की सन्निधि में विहार कर रहे थे, आचार्यप्रवर के निर्देश पर सासवड़ से व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.

सा. ने दिशा बदली और इचलकरंजी की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। महासती मण्डल का विहार इचलकरंजी के समीप चल रहा है और चातुर्मासार्थ प्रवेश भी आचार्यप्रवर के प्रवेश के आगे-पीछे संभावित है।

- **व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा.** आदि ठाणा ४ बजरिया विराज रहे हैं। बजरिया से कुशतला मात्र १० किलोमीटर दूर है, अतः समय पर चातुर्मासार्थ प्रवेश होने की संभावना है। महासती श्री रुचिता जी म.सा. के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार हो रहा है।

सभी चातुर्मास स्थलों के सम्पर्क सूत्र के पते चातुर्मास सूची में दिये गये हैं अतः अलग से सम्पर्क सूत्र यहाँ नहीं दिये गये है, कृपया चातुर्मास सूची से सम्पर्क सूत्र, चातुर्मास स्थल व आवागमन के साधन नोट कर सकते हैं।

-अरुण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षाएँ २७ जुलाई को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००३, रविवार, दोपहर १२ से ३ बजे तक कक्षा १ से ११ तक के लिये आयोजित होगी। प्रथम व द्वितीय कक्षा में प्रश्नों के उत्तर प्रश्न-पत्र में ही लिखने हैं। उनके लिये उत्तरपुस्तिकाएँ नहीं रहेगी। कक्षा ३ से ११ तक के परीक्षार्थियों के भाग 'ब' के प्रश्नों के उत्तर लिखने हेतु नयी उत्तरपुस्तिकाएँ बोर्ड द्वारा सभी केन्द्रों पर भेज दी गयी हैं। अतः सभी केन्द्राधीक्षकों से निवेदन है कि वे अपने-अपने केन्द्रों पर नयी उत्तरपुस्तिकाएँ ही परीक्षार्थियों को प्रदान करावें। पूरक उत्तरपुस्तिका की आवश्यकता हो तो उसमें पुरानी उत्तरपुस्तिकाएँ उपयोग में ली जा सकती है। उत्तर पुस्तिका पर निर्धारित कोड संख्या अवश्य अंकित करावें।

२७ जुलाई २००३ की परीक्षा के सभी कक्षाओं के प्रवेश-पत्र बोर्ड कार्यालय द्वारा सभी केन्द्रों पर भेज दिये गये हैं। यदि किन्ही कारणों से किसी परीक्षार्थी को प्रवेश-पत्र प्राप्त नहीं हुआ हो, किन्तु उसका नाम परीक्षार्थियों की सूची में हो तो वह संबंधित केन्द्र पर परीक्षा दे सकता है।

परीक्षार्थियों से निवेदन है कि उत्तरपुस्तिका पर अपने रोल नम्बर अंकों व शब्दों में तथा कक्षा का नाम स्पष्ट लिखें। कोई भी अपना नाम व गांव/शहर का नाम नहीं लिखे।

स्थानीय पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, केन्द्राधीक्षकों एवं निरीक्षकों से विनम्र अनुरोध है कि सभी परीक्षार्थी २७ जुलाई की परीक्षा में अवश्य भाग लें, कोई भी परीक्षार्थी अनुपस्थित न रहने पावें, इस हेतु प्रत्यक्ष अथवा फोन द्वारा परीक्षार्थियों से सम्पर्क कर उन्हें प्रेरित करने की कृपा करावें। ***-नवरतन डागा, सचिव, फोन नं. 2630490***

चेन्नई के २६ केन्द्रों पर आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा

चेन्नई–श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की २७ जुलाई २००३ को आयोज्य परीक्षा की तैयारी हेतु ६ जुलाई २००३ को धार्मिक प्रशिक्षण शिविर रखा गया है। प्रातः ७.३० बजे से सायं ४.०० बजे तक शिविर का आयोजन श्री बादलचन्द सायरचन्द चोरड़िया जैन प्राइमरी स्कूल, मुदली स्ट्रीट में रखा गया। २७ जुलाई को आयोजित होने वाली बोर्ड परीक्षा में चेन्नई के २६ केन्द्रों पर लगभग १००० परीक्षार्थियों के बैठने की संभावना है।– **आर. नरेन्द्र कांकरिया**

धार्मिक पाठशालाओं का आयोजन सफलता पूर्वक सम्पन्न

जोधपुर– श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बालक-बालिकाओं को ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करने एवं उनमें धार्मिक एवं नैतिक संस्कार के बीजारोपण हेतु जोधपुर के सात प्रमुख केन्द्रों पर धार्मिक पाठशालाओं का आयोजन दिनांक १७ मई से ८ जून २००३ तक प्रातः ७.३० से ९.३० बजे तक किया गया। दो घण्टे चलने वाली इन पाठशालाओं में ७०० शिविरार्थियों को उनकी योग्यतानुसार कक्षाओं में विभक्त कर सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, पच्चीस बोल, वक्तृत्व, गायन एवं जीवनोपयोगी विषयों पर अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। पाठशालाओं में प्रतिदिन बच्चों को पारितोषिक प्रदान किया गया। ६ जून को शिविरार्थियों के सीखे गये ज्ञान का मूल्यांकन करने हेतु परीक्षा का आयोजन हुआ एवं प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले शिविरार्थियों को चांदी के मेडल श्रीमान् हंसराज जी जैन, जोधपुर की ओर से प्रदान किये गये। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार श्रीमान पुखराज जी गिड़िया, जोधपुर की तरफ से प्रदान किया गया। इस वर्ष पाठशालाओं का कुशलतापूर्ण संचालन श्रीमान् नरपतराज जी चौपड़ा, जोधपुर द्वारा किया गया।

हैदराबाद में धार्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ द्वारा विदुषी महासती डॉ. श्री ज्ञानलता जी म. सा. आदि ठाणा ७ के पावन सान्निध्य में ३० मई से ८ जून २००३ तक १० दिवसीय धार्मिक शिक्षण संस्कार शिविर का आयोजन काचीगुडा जैन स्थानक में किया गया। ८ से ६० वर्ष के १५० व्यक्तियों ने शिविर में भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिक्षण व्यवस्था में श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल-बैंगलोर, श्री पारसमल जी मुरडिया- बल्लारी एवं नगरद्वय के शिक्षकों का सहयोग रहा। शिविर में जोधपुर के परीक्षा बोर्ड के पाठ्यक्रम के आधार पर अध्ययन कराया गया।

–रतनलाल पीपाड़ा, शिविर संयोजक।

महिला स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

जलगाँव—श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगाँव के तत्त्वावधान में २६ अप्रेल से ३० अप्रेल २००३ तक नवजीवन मंगल कार्यालय में महिला स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में भुसावल, धुलिया, नागद, मुकटी, भड़गांव, शिरपुर, चिंचाला, बोदवड़, पाचोरा, जलगाँव आदि गांवों से १६४ महिला शिविरार्थियों ने भाग लिया, जिन्हें ५ कक्षाओं के माध्यम से धार्मिक विषयों, वक्तृत्व, गायन, भाषण, प्रश्नोत्तर आदि कलाओं तथा सुसंस्कारों का सुव्यवस्थित ढंग से अभ्यास कराया गया। श्री फूलचन्द जी मेहता-उदयपुर, श्री धर्मचन्द जी जैन-जोधपुर, श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जलगांव, श्री हीरालाल जी मंडलेचा, श्री माणकचन्द जी जैन, श्री मनोज जी संचेती-जलगांव द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर की व्यवस्था एवं मार्गदर्शन में श्री रतनलाल जी बाफना एवं श्री दलीचन्द जी चोरड़िया का विशेष सहयोग रहा।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

चेन्नई— श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, चेन्नई (प्रधान कार्यालय- घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ {राज.} के अन्तर्गत) विगत वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व २४ अगस्त से ३१ अगस्त तक रहेंगे। अतः दक्षिण क्षेत्रों के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक १५ जुलाई २००३ तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें।***—दुलीचन्द बोहरा, संयोजक, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, चेन्नई, 24/25, वाटर बेसीन स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई—600079(तमि.) फोन नं. 26423036/26411015***

बैंगलोर— कर्नाटक प्रान्त एवं निकट के सभी श्री संघों को सूचित किया जाता है कि कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर विगत वर्षों से पर्युषण पर्वाधिराज की अष्ट दिवसीय सेवाएँ करता रहा है। इस वर्ष भी निवेदन है, उन सभी श्री संघों से जहाँ पूज्य संत-सतियाँ जी म.सा. का चातुर्मास नहीं है। वे सभी संघ हमें सूचित करके हमारे स्वाध्यायी बंधुओं की सेवाएँ प्राप्त करें। अपना माँग पत्र संघ कार्यालय में दिनांक ३१ जुलाई २००३ तक भेजने की कृपा करावें। प्रथम बार माँग भेजने वाले संघ अपने संघ के अध्यक्ष, मंत्री के पते, स्थानकवासी एवं अन्य जैन घरों की संख्या, पहुँचने का रेल/बस मार्ग, स्थानक भवन का पता आदि जानकारी साथ में अवश्य भेजें।***—शांतिलाल बोहरा, कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, 61—नगरथपेठ, बैंगलोर—560002 (कर्नाटक) फोन नं.2201970***

बी.एल.इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलाजी द्वारा हेमचन्द्रसूरि पुरस्कार

दिल्ली—भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अलीपुर, दिल्ली द्वारा २५ मई से १५ जून २००३ तक 'प्राकृत भाषा और साहित्य' विषय पर प्रारम्भिक एवं अग्रिम पाठ्यक्रमों के रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किए गए। समापन समारोह के दिन १५ जून को प्रसिद्ध समालोचक डॉ. नामवरसिंह के मुख्य आतिथ्य एवं श्रीमती लैला गुलगांवकर (प्रमुख अधिकारी, यू.एस.लायब्रेरी ऑफ कांग्रेस) की अध्यक्षता में सम्पन्न कार्यक्रम में सन् २००१ के आचार्य हेमचन्द्रसूरि पुरस्कार से डॉ. गणेश विष्णु तगारे को तथा सन् २००२ के इसी पुरस्कार से डॉ. नगीन जे. शाह को सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार में प्रत्येक विद्वान् साहित्यकार को ५१ हजार रुपये की राशि प्रदान की गई। डॉ. नामवर सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा- "प्राकृत भाषा और सहित्य इस देश की सांस्कृतिक धरोहर का अविभाज्य अंग है, जिसमें देश के विगत ३००० वर्षों के जन-जीवन के सजीव चित्र प्राप्त होते हैं। प्राचीन वैदिक भाषा से लेकर आज तक की देश की सभी बोलियों के बीच की जीवन्त कड़ी प्राकृत भाषा है। प्राकृत भाषा और साहित्य से ही यह अकाट्य प्रमाण भी उपस्थित होता है कि यह देश और इसकी संस्कृति एक और अविभाज्य हैं। ***—विमलप्रकाश जैन***

दिगम्बर जैनों में भगवान महावीर की जन्मस्थली को लेकर विवाद

दिगम्बर जैन समाज भगवान महावीर की जन्मस्थली को लेकर दो धड़ों में विभक्त है। आचार्य विद्यानन्द जी एवं उनके साथ अनेक जैन विद्वान् भगवान महावीर की जन्मस्थली कुण्डपुर (विदेह) को स्वीकार करते हैं जो वर्तमान में मुजफ्फरपुर जिले के वैशाली के निकट स्थित वसाढ़ नगर के समीप वासोकुण्ड है। दूसरा दल भगवान महावीर की जन्मस्थली पूर्व परम्परानुसार कुण्डलपुर मानता है। इसके मानने वालों में आर्यिका चन्दनामती जी प्रमुख है।

आचार्य श्री विजय हेमभूषणसुरीश्वरजी बने तपागच्छ के गच्छाधिपति

तपागच्छ में गच्छाधिपति आचार्य श्री विजयरामचन्द्रसूरीश्वर जी का साधु-साध्वी समुदाय सबसे बड़ा सुविहित समुदाय है। वि.सं. २०४७ की आषाढ़ कृष्णा १४ को पूज्यपाद के समाधिपूर्ण कालधर्म के पश्चात् ११ वर्ष तक आचार्य श्री विजयमहोदयसूरिश्वरजी ने गच्छाधिपति के दायित्व का निर्वहन किया। संवत् २०५८ चैत्र कृष्णा २ को उनका स्वर्गवास हो जाने के पश्चात् से रिक्त गच्छाधिपति का दायित्व अब आचार्य श्री विजयहेमभूषणसूरीश्वरजी को सौंपा गया है। साढ़े बारह वर्ष की अल्पायु में दीक्षित होकर आप संवत् २०४६ में गणिपद, २०४७ में पंन्यासपद एवं सं. २०४९ में आचार्यपद पर आरूढ़ हुए तथा अब गच्छाधिपति पद से विभूषित हुए हैं।

अन्य प्रमुख चातुर्मास

१. जोधपुर (राज.)- ज्ञानगच्छाधिपति श्री चम्पालाल जी म.सा.
२. बड़ी सादड़ी(राज.)-आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.
३. जोधपुर- आचार्यकल्प श्री शुभचन्द्र जी म.सा.
४. मालेर कोटला (पंजाब)-आचार्य श्री डॉ. शिवमुनिजी म.सा.
५. ब्यावर (राज.)- आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा.

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई– श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई के तत्त्वावधान में २८ मई से १ जून २००३ तक पंचदिवसीय जैन संस्कार शिविर का आयोजन श्री जैन रत्न स्वाध्याय भवन, साहुकार पेट में किया गया। शिविर का समापन श्रावक संघ एवं युवक परिषद् के गणमान्य श्रावकों के शुभाशीर्वाद के साथ परिषद् के सचिव श्री आर. नरेन्द्र कांकरिया के सुसंचालन में सम्पन्न हुआ।

मुम्बई– ६ मई २००३ वैशाख शुक्ला अष्टमी को परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के १२वें पुण्य दिवस पर सामूहिक सामायिक के साथ गुणगान करते हुए यह संकल्प व्यक्त किया गया कि सामूहिक रविवारीय सामायिक करने का लक्ष्य पूर्ण किया जाय।

बैंगलोर– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा दक्षिण भारत में प्रचार-प्रसार हेतु धार्मिक प्रवास कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं। इस क्रम में मंड्या, मैसूर, शिमोगा, भद्रावती, के.जी.एफ., चितूर आदि क्षेत्रों में तीन प्रवास कार्यक्रम सम्पन्न हो गए हैं।

- ***शांतिलाल बोहरा***

बैंगलोर– मामाजी श्री छगनलाल नवरतनमल बम्ब जैन धार्मिक पाठशाला के तत्त्वावधान में १८ दिवसीय जैन शिक्षण संस्कार शिविर आयोजित किया गया। शिविर में ११० शिविरार्थियों ने जैनदर्शन एवं आचार की शिक्षा ग्रहण की। समापन समारोह में मुख्य अतिथि श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल एवं श्री छगनमल जी लुणावत ने पाठशालाओं की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। –***शांतिलाल बोहरा***

जयपुर– जयपुर के मुख्य रोटरी क्लब की पर्यावरण संरक्षण समिति के अध्यक्ष स्वाध्यायी डॉ. गुलाबसिंह जी दरड़ा पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी बनाये गए, जिनके सतत प्रयासों से शिक्षण संस्थाओं में चूहा, मेंढ़क आदि प्राणियों के परीक्षण पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

चेन्नई– साहुकार पेट स्थित जैन भवन के प्रांगण में कांकरिया परिवार की ओर से वीरमाता श्रीमती पिस्ताकंवर कांकरिया धर्मपत्नी स्व. श्री रिखबचन्द जी कांकरिया की पूना में १२ मई को श्रमणी दीक्षा सम्पन्न होने के पूर्व खम्भात सम्प्रदाय की पूज्या शारदाबाई जी म.सा. एवं बा.ब्र. श्री रंजनाश्री जी म.सा. आदि महासतीवृन्द के

सान्निध्य में एवं सैकड़ों धर्मानुरागी भाई-बहिनों की उपस्थिति में सामूहिक सामायिक एवं जाप का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जाप के समय माइक, विद्युत, पंखे, फोटो आदि का कतई प्रयोग नहीं किया गया। सामूहिक जाप के अनंतर संस्थाओं के पदाधिकारियों, स्वाध्यायी बन्धुओं, महासती मण्डल एवं दीक्षार्थिनी बहनों ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। विरक्ता वीरमाता श्रीमती पिस्ताकंवर जी कांकरिया एवं विरक्ता सुश्री बबीता जी गुगलिया, हैदराबाद ने संयम मार्ग पर बढ़ने हेतु अपनी प्रबल भावना के विचार प्रस्तुत किए। कांकरिया परिवार की ओर से श्री मनोहरराज जी कांकरिया ने सभी भाई-बहनों से दीक्षा के अवसर पर पुणे पधारने की विनति रखी। विरक्ता वीरमाता के वीर पुत्र श्री नरेन्द्र जी कांकरिया ने अपनी माताजी के दृढ़ संकल्प के आगे उनके परिवार के नतमस्तक होने की बात रखी तथा माताजी के निश्चय को संयममार्ग की विजय बताया। उन्होंने लम्बे समय तक दीक्षा में अन्तराय देने के लिए माताजी से हार्दिक क्षमायाचना की। सभी आगन्तुकों का कांकरिया परिवार की ओर से अतिथि सत्कार किया गया।

चेन्नई– श्री राजस्थानी वेलफेयर सोसायटी का २३वां पुस्तक वितरण समारोह श्री भंवरलाल जी गोठी की अध्यक्षता में साहुकार पेट के कल्याण मण्डपम् में सम्पन्न हुआ, जिसमें लगभग ८०० बच्चों को पुस्तकें एवं अभ्यास पुस्तकें वितरित की गईं। कक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले छात्रों को अन्य अध्ययन-संबंधी सामग्री भेंट की गई। प्रमुख दानदाता श्री भंवरलाल जी गोठी ट्रस्ट के सौजन्य से टेक्स्ट बुक दी गई। इस योजना में दानदाता ५१ हजार रुपये देकर पुस्तकें एवं नोट बुक देने का लाभ प्राप्त कर सकते हैं। ***–जवाहरलाल बाघमार***

बैंगलोर– प्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं समाजसेवी विद्वान् श्री शांतिलाल जी वनमाली शेठ की चिर स्मृति में स्थापित फाउण्डेशन द्वारा २१ मई २००३ को दया शांति चेरिटेबल मेडिकल क्लिनिक का शुभारम्भ किया गया है। क्लिनिक के पूर्णकालिक डॉक्टर पी. एन. कृष्णमूर्ति होंगे। इसमें प्रत्येक रोगी का निःशुल्क इलाज किया जाएगा।

बैंगलोर– श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, बैंगलोर द्वारा संचालित स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड की परीक्षा हाल ही में बैंगलोर के १८ केन्द्रों सहित दक्षिण भारत के विभिन्न शहरों के ३८ केन्द्रों पर सम्पन्न हुई। परीक्षा में करीब १३५० विद्यार्थियों ने भाग लिया। कक्षा ५ एवं ६ की परीक्षा दिनांक २९.६.२००३ को बैंगलोर स्थित चिकपेट स्थानक, निकुन्दी गौशाला एवं मैसूर, बल्लारी, दौड़बालालपुर, रायचूर तिरुपति, चेन्नई और बाणावार केन्द्रों पर आयोजित हुई।

टोंक– दीन, दुःखी, अनाथ, अपंग व बेसहारों के सहायतार्थ तथा पशु पक्षियों के रक्षार्थ कृपया संपर्क करें-***अध्यक्ष/मंत्री, जीवदया मण्डल ट्रस्ट (रजि.), डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक(राज.)***

बधाई/चुनाव

जलगांव– श्री सुरेशदादा जैन द्वारा संचालित श्री महावीर जैन स्वाध्याय विद्यापीठ के प्राचार्य श्री प्रकाशचन्द जी जैन की सुपुत्री कु. रीना जैन ने उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नासिक की १२वीं कक्षा के वाणिज्य वर्ग की मेरिट सूची में १३वां स्थान प्राप्त किया है। उसे ८१.६७ प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं। इस वर्ष जलगांव जैन समाज में मेरिट सूची में आने वाली रीना एक मात्र छात्रा है। पूर्व इसके भाई विशाल जैन ने भी मेरिट में ८वां स्थान प्राप्त किया था।

जोधपुर– सुश्री आकांक्षा सुराणा (सुपुत्री श्री गणपतजी एवं श्रीमती मंजूश्री जी सुराणा) ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की उच्च माध्यमिक परीक्षा २००३ वाणिज्य वर्ग से ८१.०८ प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की है। छात्रा ने ६५० में से ५२७ अंक अर्जित किए हैं।

अहमदाबाद–जैन युवक संघ (स्थानकवासी) शाहीबाग, अहमदाबाद की चतुर्थ कार्यकारिणी वर्ष २००३ से २००६ तक के लिए गठित हुई, जिसमें श्री लक्ष्मीलाल जी नाहर को अध्यक्ष, श्री सम्पत जी खाब्या को मानद्मंत्री एवं श्री मुकेश जी पामेचा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया है।

श्रद्धांजलि

अमरोली– सुश्रावक श्री भागचन्द जी गाँधी सुपुत्र स्व. श्री लालचन्द जी गांधी निवासी थांवला, नागौर का ७७ वर्ष की उम्र में दिनांक ५ मई २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्रावक थे। आप स्वस्थ रहते नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते थे। लगभग २० वर्ष पूर्व आपने आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार कर लिया था।

दिनांक १७.०१.२००३ को सुश्राविका श्रीमती चम्पाबाई धर्मपत्नी श्री भागचन्द जी गाँधी (सुपुत्री स्व.श्री हीराचन्द जी नाहर, निवासी देवगढ़ मदारीया, राजसमन्द) निवासी थांवला नागौर का ७० वर्ष की उम्र में आकस्मिक हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। आपकी धर्म के प्रति निष्ठा एवं सन्त-सतियों के प्रति सेवा सराहनीय थी। आप प्रतिदिन नियमित रूप से सामायिक करती थीं तथा २० वर्षों से आपने रात्रि में चौविहार त्याग एवं शीलव्रत के नियम ले रखे थे। सुश्रावक श्री भागचन्द जी गांधी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चम्पाबाई जी गांधी अपने पीछे दो सुपुत्रों श्री प्रकाशचन्द जी एवं राकेश कुमार जी गाँधी तथा तीन सुपुत्रियों के साथ भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

आलनपुर (सवाईमाधोपुर)–धर्मनिष्ठ श्रद्धानिष्ठ गुरुभक्त स्वाध्यायी श्रावक श्री कजोड़मल जी जैन का ४ जून २००३ को लगभग ८१ वर्ष की वय में देहावसान हो गया। सामायिक, स्वाध्याय, दया, संवर, उपवास, पौषध, ध्यान, मौन

आदि में आपका पुरुषार्थ प्रशंसनीय था। लगभग २५ वर्षों से आप पर्युषण पर्व के समय दूरस्थ क्षेत्रों में जाकर सेवा प्रदान कर रहे थे। आपका जीवन सादगीपूर्ण एवं त्यागमय था। आपके चारों खंदों का नियम था। संघ-सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के साधनामय जीवन से आप अत्यन्त प्रभावित थे। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-सतीवृन्द की सेवाभक्ति में उन्हें अनूठा आनन्द प्राप्त होता था। आप अपने पीछे ३ पुत्रों एवं ३ पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं। -विनयचन्द जैन

पाली–मारवाड़– श्रीमती जेठी देवी धर्मपत्नी श्री लालचंद जी सांड का ६२

वर्ष की उम्र में २५ जून २००३ की रात्रि को स्वर्गवास हो गया। २५० सदस्यों से भरा पूरा परिवार छोड़कर जाने वाली रत्नवंश की वरिष्ठ श्राविका के रोम-रोम में जिनवाणी के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास भरा हुआ था। आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के पाली चातुर्मास के दौरान अपने सुपुत्र स्व. श्री माणकचन्द जी सांड को मासखमण तप का आराधन करने हेतु आपने विशेष प्रेरणा की। संत-सती के गोचरी पधारने पर आप अत्यंत हर्षित भाव से सुपात्र दान का लाभ लेती थी। अनुकम्पा का भाव छः काया के जीवों के प्रति कूट-कूट कर भरा हुआ था। मृत्यु के २४ घंटे पूर्व परिवार एवं समाज के अनेक सदस्यों ने त्याग एवं वैराग्य भरे भजनों से उनके अंतिम प्रयाण को सार्थक बना दिया। सागारी संथारा एवं त्याग पच्चक्खाण का भाता साथ में भर दिया। सांड परिवार ने स्वर्गीय वरिष्ठ श्राविका की अमर यादगार में अनेक प्रकार के दान पुण्य करने का निश्चय किया है।

जयपुर– सुश्रावक श्री दानमल जी ढड्ढा का १४ जून २००३ को निधन हो गया। आपका जीवन धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, विनम्रता, सेवाभावना आदि गुणों से ओतप्रोत था। सामायिक, स्वाध्याय एवं व्रत-नियमों में आपकी गहरी रुचि थी। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव रहा।

मदनगंज–किशनगढ़–सुश्रावक श्री अमरचन्द जी मोदी सुपुत्र स्व. श्री

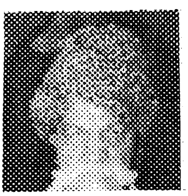

बहादुरमल जी मोदी का ७० वर्ष की उम्र में १४ मई २००३ को देहावसान हो गया। आपकी आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति आगध श्रद्धा भक्ति थी। आप सन्त-सेवा में सदैव समर्पित रहते थे। मरणोपरान्त आपने नेत्रदान कर मानव सेवा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

जयपुर–श्री राजेन्द्रकुमार जी श्रीश्रीमाल का ३१ मई २००३ को स्वर्गवास हो

गया। आप धर्मानुरागी होने के साथ सेवा, कर्त्तव्यपरायणता आदि अनेक सद्गुणों से सम्पन्न थे।

चेन्नई– निर्भीक एवं स्पष्टवक्ता सुश्रावक श्रीमान् भंवरलाल जी कांकरिया (सुपुत्र श्री पूसराज जी कांकरिया), चेन्नई (मूल निवासी गोगोलाव) का ७१ वर्ष की आयु में दिनांक ८ मई २००३ को आकस्मिक निधन हो गया। आपके प्रतिदिन सामायिक, नवकारसी, अचित्त जल सेवन एवं वर्षों से शीलव्रत के नियम थे। आपके बुद्धि-कौशल के कारण लोग आपको जज साहब के नाम से पुकारते थे। आप अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र, पाँच पुत्रियाँ, पौत्र-पौत्रियाँ एवं दौहित्र-दौहित्रियों से भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं। आपके दोनों पुत्र स्वाध्यायी हैं व छोटे पुत्र श्री सुमतिकुमार जी कांकरिया समता युवा संघ के राष्ट्रीय मंत्री हैं।

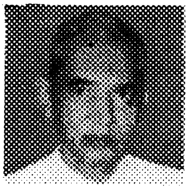

गदग– सुश्रावक श्री रामलाल जी सोभालालजी चौपड़ा का २४ अप्रेल २००३ को ६८ वर्ष की उम्र में आकस्मिक रूप से माउण्ट आबू पर समाधिभावों में निधन हो गया। आप सरलस्वभावी, सेवाभावी एवं धर्मनिष्ठ श्रावक थे। धार्मिक कार्यों में अग्रसर रहने के साथ आप अच्छे समाजसेवी थे। आप श्री स्थानकवासी श्री संघ के मंत्री एवं जैन संघ के ट्रस्टी रहे। ***–भेरूलाल तातेड़, कनाना***

पांढरकवड़ा–सुश्रावक श्री नेमीचन्द जी माणिकचन्द जी मुथा का २५ मई २००२ की रात्रि में हृदयाघात से देहान्त हो गया। आप सरलस्वभावी एवं मृदुभाषी होने के साथ सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धर्मक्रियाएँ नियमित रूप से करते थे। सन्त-सतियों की सेवा-भक्ति में आप अग्रणी रहते थे। आप अपने पीछे संस्कारशील एवं धर्मनिष्ठ भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

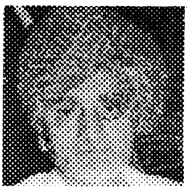

–प्रो. सुनील पितलीया

जयपुर– सुश्राविका श्रीमती भीमकंवर जी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री जुगराज जी सुराणा का १८ जून २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यपरायण एवं व्रत-नियमों को जीवन में स्थान देने वाली श्राविका थी। आपके जीवन पर आचार्य प्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

जयपुर– श्रीमती सुशीलादेवी जी नवलखा धर्मपत्नी श्री धन्नालाल जी नवलखा का १३ जून २००३ को देहावसान हो गया। आप धर्मपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं समर्पित सुश्राविका थी। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आपने अपने जीवन में अनेक व्रत-नियम अंगीकार किए थे।

जयपुर–उदारमना सुश्रावक श्री सुरेन्द्र कुमार जी लुणावत का १५ जून २००३ को स्वर्गवास हो गया। आपकी देव, गुरु एवं धर्म के प्रति श्रद्धा थी। आप एक सुयोग्य

श्रावक थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

इचलकरंजी के लिए साधन

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा एवं महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास इस वर्ष इचलकरंजी में है। यह स्थान अप्रसिद्ध होने के कारण दर्शनार्थियों को असुविधा न हो, इस दृष्टि से आवागमन के साधनों का संकेत किया जा रहा है।

रेल मार्ग

१. मद्रास वाया बैंगलोर से मिरज- रानी चन्नमा एक्सप्रेस
२. मद्रास वाया रेनीगुन्टा से मिरज- हरिप्रिया एक्सप्रेस
३. मैसूर वाया बैंगलोर से मिरज- रानी चन्नमा एक्सप्रेस
४. हैदराबाद वाया गुन्टकल से मिरज- कोल्हापुर हरिप्रिया एक्सप्रेस
५. हुबली, बेलगांव से मिरज तक ट्रेन
६. जोधपुर-बैंगलोर एक्सप्रेस वाया मिरज
७. अजमेर-बैंगलोर एक्सप्रेस वाया मिरज
८. मुम्बई से हातकणंगले महालक्ष्मी एक्सप्रेस, सहयाद्रि एक्सप्रेस, कोयना एक्सप्रेस
९. दिल्ली वाया खण्डवा से मिरज- निजामुद्दीन एक्सप्रेस
१०. नागपुर वाया भुसावल, मनमाड़, अहमदनगर, पुणे से हातकणंगले गाड़ी चालू है।

बस मार्ग

१. बैंगलोर से इचलकरंजी लग्जरी बस
२. हैदराबाद से इचलकरंजी लग्जरी बस
३. बीजापुर से मिरज तक बस
४. मुम्बई (मलाड़, अंधेरी) से इचलकरंजी लग्जरी बस

नोट

१. मिरज से इचलकरंजी ३० किलोमीटर है। बस, टैम्पो, टैक्सी मिलती है।
२. हातकणंगले स्टेशन से इचलकरंजी ८ किलोमीटर दूर है। रिक्शा व बस मिलती है।

आवश्यक सूचना

प्रकाशनाधीन आचार्य श्री हस्ती जीवन-चरित्र 'नमो पुरिसवरगंधत्थीणं' के इच्छुक अर्थ सहयोगी (२००००/-) शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क करें-***ज्ञानेन्द्र बाफना, सी-55, शास्त्री नगर, जोधपुर, फोन नं. 0291-2434355, 2636763 (अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ कार्यालय)***

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत ५८ से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गांव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 24 अगस्त से 31 अगस्त 2003** तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक **30 जुलाई 2003** तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम..............जिला.............प्रान्त................

2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..

3. संघाध्यक्ष का नाम व पता...

4. संघ मंत्री का नाम व पता..

5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन................................

6. समस्त जैन घरों की संख्या...

7. क्या आपके यहां धार्मिक पाठशाला चलती है?.........................

8. क्या आपके यहां स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?...........

9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....................................

10.अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-**संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स-2636763**

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आगामी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व ***24 अगस्त से 31 अगस्त 2003*** तक मनाये जायेंगे। आप सभी स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गांव पधारने से आपकी धर्म-साधना सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) फोन नं. २६२४८९१ के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

सुशीला बोहरा — ***संयोजक***

रिखबचन्द मेहता — ***सचिव***

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

११०००/-जिनवाणी की स्तम्भ सदस्यता हेतु

६६ श्री सुमेरसिंह जी उपेन्द्र जी बोथरा, जयपुर ने अपने पूज्य पिताश्री सुश्रावक श्रीमान् उगरसिंह जी बोथरा का ४ जून २००३ को स्वर्गवास होने की पुण्य-स्मृति में ११०००/- रुपये प्रदान कर स्तम्भ सदस्यता ग्रहण की।

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६२१६ Shri D. Kumar Ji, Delhi
६२१७ Shri Ved Ji Jain, Delhi
६२१८ Shri Sampatraj Ji Runwal, Chennai(T.N.)
६२१६ श्री अक्षय कुमार जी बुरड़, सूरत (गुजरात)
६२२० Shri Mahendra Kumar Ji Bured, Madurai(T.N.)
६२२७ श्री सरसकंवर जी दलीचन्द जी मुगदीया, औरंगाबाद (महा.)
६२२८ Shri Ashok Kumar Ji Bhandari, Chennai (T.N.)
६२३३ श्री महावीर जी चन्दनमल जी बोहरा, सतारा (महा.)
६२३४ श्री माणकचन्द जी मुणोत, पनवेल (महा.)
६२३५ श्री दिनेश जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
६२३६ श्री भूपेन्द्र जी मेहता, जालोर (राज.)
६२३७ Shri Pyarelal Ji Prakashchand Ji Kankaria, Raichur (K.T.)
६२३८ श्री विनय ओ. बनवट जी, सतारा (महा.)
६२३६ श्री कमलेशजी छगनलाल जी मुथा, सतारा (महा.)

श्रीमान अमरचन्द जी पी. मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

६२२१ श्री ईश्वरलाल बंशीलाल जी भटेवरा, पूना (महा.)
६२२२ श्री हर्षद हरखचन्द जी ओस्तवाल, पूना (महा.)
६२२३ श्री जयन्तीलाल जी गादिया, पूना (महा.)
६२२४ श्री मिट्ठूलाल जी प्रेमराजजी ओस्तवाल, पूना (महा.)
६२२५ श्री दिलीपचन्द जी माणकचन्द जी ओस्तवाल, पूना (महा.)
६२२६ श्री दीपक जी सुआलाल जी बूंदेला, पूना (महा.)
६२२६ श्री महेन्द्र जी माणकचन्द जी मूथा (सतारावाले) पूना (महा.)
६२३० श्री घनश्यामदास लालचन्द जी नवलखा, सासवड़, पूना(महा.)
६२३१ श्री अनिल कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
६२३२ श्री नरेन्द्र जी तेजराज जी जैन, निश तहसील, पूना (महा.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

११००/- श्री प्रकाशचन्द जी राकेश कुमार जी गांधी, सूरत, पूजनीय पिताश्री श्री भागचन्द जी गांधी (सुपुत्र स्व. श्री लालचन्द जी सा. गांधी, थांवला, नागौर वाले) का दिनांक

५.५.२००३ को स्वर्गवास हो जाने एवं पूज्य माताश्री श्रीमती चम्पाबाई जी गांधी (धर्मपत्नी श्री भागचन्द जी सा गांधी) का स्वर्गवास दिनांक १७.१.२००३ को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्री विनोदकुमार जी नवीनकुमार जी सांड, पाली, मातुश्री श्रीमती जेठीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री लालचन्द जी सांड का दिनांक २५.६.०३ को सागारी संथारा पूर्वक स्वर्गवास होने की पुण्य-स्मृति में सांड परिवार की ओर से भेंट।

५००/- श्री मन्नालाल जी प्रकाशचन्द जी जैन, कटक (उड़ीसा), श्रीमान मुन्नालाल जी नबरिया की पुण्य-स्मृति में भेंट।

५००/- श्री पन्नालाल जी चोरड़िया, मुम्बई की ओर से सप्रेम भेंट।

५००/- गुप्तदान।

५००/- श्री देवराज जी नाहर (कोसाणा वाले), चेनई, सुपुत्री चीकू उर्फ स्नेहलता का शुभ-विवाह चि. चन्द्रप्रकाश जी चौपड़ा (सुपुत्र श्री मंगलचन्द जी चौपड़ा) जबलपुर के संग जबलपुर में दिनांक ८ जून २००३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

५००/- श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई, चि. पवन कुमार का शुभ विवाह सौ. कां. हेमलता सुपुत्री श्री फूटरमल जी बाघमार, कोसाणा निवासी के साथ २६.५.२००३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री आनन्दरूपचन्द भण्डारी चेरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर, श्रीमान अजीतमल जी भण्डारी की आषाढ़ कृष्णा दसमी को चतुर्थ पुण्य तिथि की पावन स्मृति में।

४००/- गुप्तदान।

३०१/- श्री चम्पालाल जी हंसराज जी चौपड़ा, गोटन, नवगृह 'चौपड़ा सदन' के प्रवेश के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५०/- श्री कंवलराज सा-सुशीला जी मेहता, जोधपुर अपने सुपौत्र सिद्धित (सुपुत्र श्री नवीन्द्रजी-उर्मिलाजी) के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५०/- श्रीमती उगमकंवर जी बोथरा, जोधपुर, सुपौत्री सौ. सुमन (सुपुत्री श्री नेमीचन्द जी बोथरा) का शुभ-विवाह चि. सुमित (सुपुत्र श्री महावीर सिंह जी ढढ्ढा, जोधपुर) के साथ दिनांक १४ मई २००३ के सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५०/- श्री प्रमोद कुमार जी प्रवीण कुमार जी मोदी, मदनगंज-किशनगढ़, पूजनीय पिताश्री श्री अमरचन्द जी मोदी (डीडवाना वाले) का दिनांक १४.५.२००३ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

२५०/- श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल, जलगांव, अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती उमरावकंवर जी की १२ जून को तृतीय पुण्यतिथि एवं महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा.(सुशिष्या शा.प्र.महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.) के स्वास्थ्य में समाधि होने के उपलक्ष्य में।

२०१/- श्री चौथमल जी जैन, इन्दौर, धर्मपत्नी श्रीमती बदामबाई जी के द्वितीय वर्षीतप के सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री लल्लूलाल जी धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, माताश्री श्रीमती गुलाबदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामनारायण जी जैन, सवाईमाधोपुर का दिनांक १२.५.२००३ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।

२००/- श्री अशोककुमार जी सुमतिकुमार जी कांकरिया, चेन्नई, पूजनीय पिताश्री श्रीमान्

भंवरलालजी कांकरिया की पुण्य-स्मृति में भेंट।

२००/- श्री रतनकंवर जी सिंघवी जोधपुर सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री भैरूलाल जी पारसचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. विरेन्द्र कुमार (सुपुत्र श्रीमती चंचलदेवी जी, श्री भैरूलाल जी जैन) का शुभ विवाह ११ जून २००३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, सुपौत्र श्री राहुल (सुपुत्र श्री राजेश एवं श्रीमती योगिता गांग) के ८वाँ जन्मदिन दिनांक ११ जून २००३ को होने की खुशी में।

१०१/- श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव, सुपुत्री सुश्री रीना जैन के उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नासिक की १२वीं कक्षा (वाणिज्य शाखा) में मेरिट लिस्ट में १३वाँ स्थान प्राप्त करने की खुशी में।

१००/- श्रीमती भगवती देवी जी जैन, भरतपुर, आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

६००००/-श्री जी.एस. प्यारेलाल जी कोठारी, चेन्नई से पुस्तक "जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-१ व भाग-४ के पुनः मुद्रण हेतु आर्थिक सहयोग सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

जीवदया हेतु साभार

५००/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, शादी की ३७ वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

२५०/- श्रीमान् यशवन्तचन्द जी मेहता, जयपुर की ओर से जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री लल्लूलाल जी धर्मेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर, अपनी माता श्रीमती गुलाबदेवी जी की पुण्यस्मृति में जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

५०१/- श्री विनोदकुमार जी नवीनकुमार जी सांड, पाली, माताश्री श्रीमती जेठीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री लालचन्द जी सांड के सागारी संथारा पूर्वक स्वर्गवास दिनांक २५.६.०३ को होने की पुण्य-स्मृति में सांड परिवार की ओर से भेंट।

५००/- श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई, चि. पवन कुमार का शुभ विवाह सौ. कां. हेमलता सुपुत्री श्री फूटरमल जी बाघमार, कोसाणा निवासी के साथ २६.५.२००३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री भैरूलाल जी पारसचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर, चि. वीरेन्द्र कुमार (सुपुत्र श्रीमती चंचलदेवी जी, श्री भैरूलाल जी जैन) का शुभ विवाह ११ जून २००३ को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२०१/- श्री लल्लूलाल जी धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, माताश्री श्रीमती गुलाबदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामनारायण जी जैन, सवाईमाधोपुर का दिनांक १२.५.२००३ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में स्वाध्याय शिक्षा हेतु भेंट।

२०१/- श्री लल्लूलाल जी धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, माताश्री श्रीमती गुलाबदेवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामनारायण जी जैन, सवाईमाधोपुर का दिनांक १२.५.२००३ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा-मान

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान ॥

JAI GURU HASTI

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609

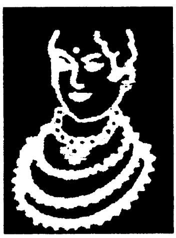

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है।

\- आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET

CHENNAI-600079(T.N.)

PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD

NAVARATHAN KAVAD

RAVINDRA KAVAD

ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.

Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

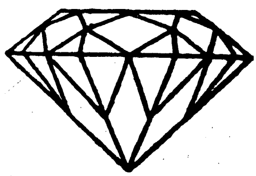

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
© 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆
☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

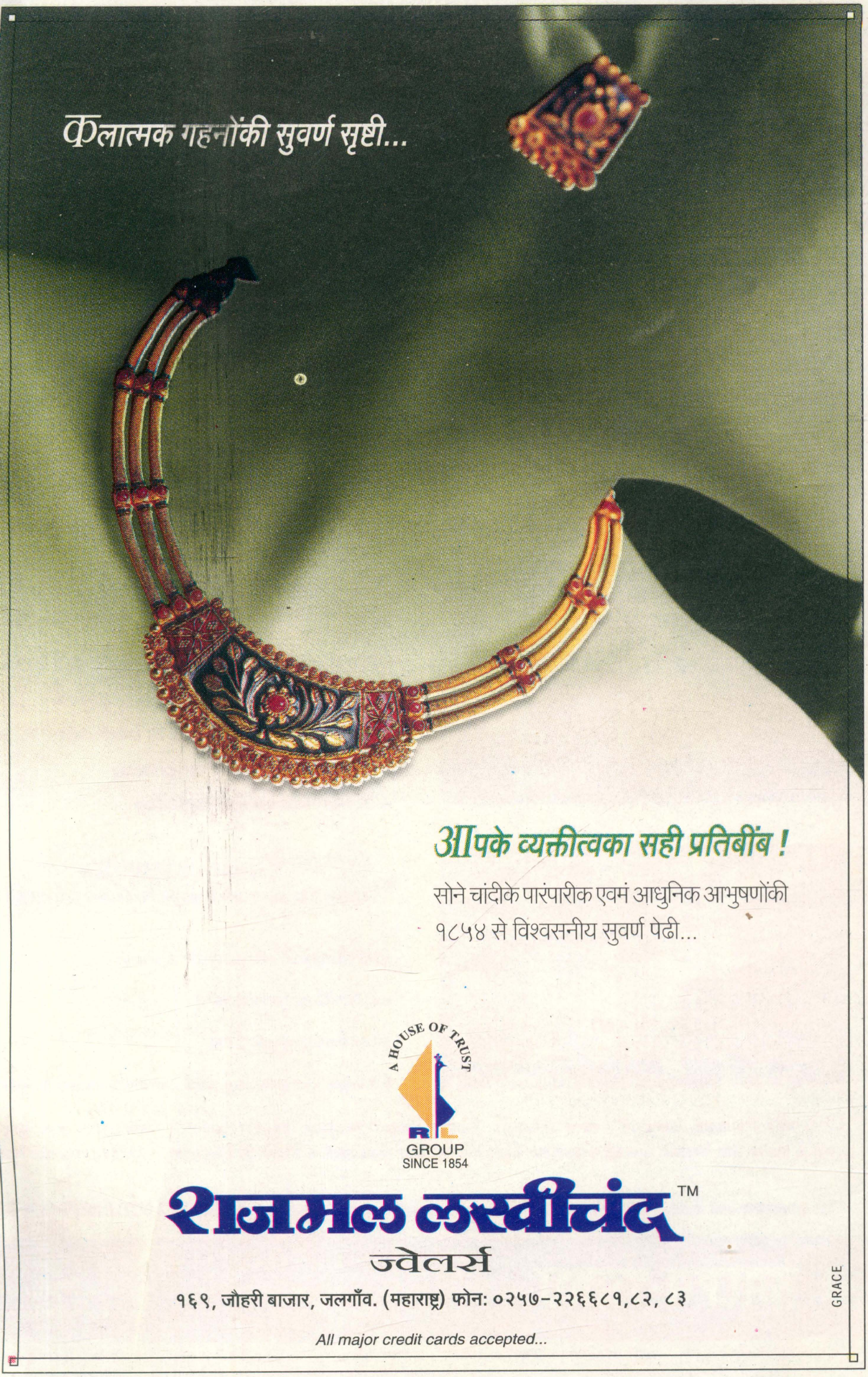
कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...
आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !
सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...
A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854
राजमल लखीचंद ™
ज्वेलर्स
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३
All major credit cards accepted...
GRACE

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 3102.

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021.
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।